सृजन - 2

शाला से बाहर बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा में लाने हेतु

अनुदेशक प्रशिक्षण संदर्शिका

वर्ष

2011-2012

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

संरक्षण

सुनील कुमार (आई.ए.एस.)
अपर मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा, छ.ग. शासन

मार्गदर्शन

अनिल राय(आई.एफ.एस.)
संचालक एस.सी.ई.आर.टी.
रायपुर

के. आर. पिस्दा(आई.ए.एस.)
मिशन संचालक रा.गाँ.शि.मिशन
रायपुर

सहयोग

ए.लकड़ा
संयुक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी, रायपुर

आशुतोष चावरे
संयुक्त संचालक
राज्य परियोजना कार्यालय,रा.गा.शि.मिशन
रायपुर (छ.ग.)

समन्वय

अनुपमा नलगुंडवार
प्रकोष्ठ प्रभारी
एस.सी.ई.आर.टी, रायपुर

हरे राम शर्मा
सहायक संचालक
राज्य परियोजना कार्यालय,रा.गा.शि.मिशन
रायपुर (छ.ग.)

अकादमिक समन्वय

सुनील मिश्रा
राज्य स्त्रोत व्यक्ति
एस.सी.ई.आर.टी, रायपुर

विशेष सहयोग

सतीश पाण्डेय
राजनांदगाँव

तारकेश्वर देवांगन, गंगाधर साहू, रामेश्वर बेलान्द्रे, उत्तम साहू, शिवकुमार देवांगन, योगिता साहू, बेनीराम साहू, चैतराम सार्वा, लोचन सिंह गौतम, नेमसिंह कौशिक, गजेन्द्र देवांगन, मोहन पटेल, सिंहासान्ता लकड़ा, सीमांचल त्रिपाठी, द्रोण साहू, आजाद मो. अंसारी, प्रदीप पांडेय, ईश्वरी कुमार सिन्हा, रजनीश मिश्रा, ममता नेताम, श्रीमती शीतल सारथी, राजकुमार पवार, श्रीमती तरूणा मेश्राम, पुष्पा शुक्ला, आरती ठाकुर, निर्मला शर्मा, रजत भगत, प्रमिला यादव, रेखा कुजुर, रीता कुजुर, पार्वती निषाद, श्रीमती शारदा कुंजाम, पूनम वासम, भूमिका शर्मा, प्रहलाद साहू, अनुपमा नलगुण्डवार, सुनील मिश्रा

डिज़ाईनिंग, ले–आउट एवं टंकण
कुमार पटेल, छोटे लाल, भूपेश साहू,
भूपेन्द्र साहू, राजकुमार चंद्राकर,

प्राक्कथन

प्रदेश में मुफ्त एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, 1 अप्रैल 2010 से लागू किया जा चुका है। यह अधिनियम शैक्षिक विकास के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए ऐतिहासिक कदम है। इस अधिनियम के अनुसार 6–14 आयुवर्ग के प्रत्येक बच्चे को उम्र के अनुरूप कक्षा और कक्षा के अनुरूप ज्ञान प्रदान करने की बात कही गई है।

वर्तमान में प्रदेश के लगभग 2 लाख बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाए हैं। साथ ही शालाओं में धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण का उल्लेख है। इन सभी बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु आवासीय प्रशिक्षण केन्द्रों एवं गैरआवासीय प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था की जा रही है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् रायपुर द्वारा बच्चों के विशेष प्रशिक्षण हेतु सेतु पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सामग्री का निर्माण किया गया है। प्राथमिक स्तर पर पाठ्यसामग्री गति एवं स्तरानुरूप तेज गति से सीखने वाली (MGML) प्रक्रिया की तर्ज पर बनायी गई है। इस सामग्री के माध्यम से बच्चे 1 वर्ष में ही उम्र एवं कक्षा के अनुरूप तेजी से सीखते हुए अपेक्षित दक्षताएं प्राप्त कर पाएँगे। इस सामग्री का क्षेत्र परीक्षण नक्सल प्रभावित क्षेत्रों, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के साथ किया गया है। बच्चों, पालकों और शिक्षकों के सुझावों के आधार पर सामग्री का संशोधन भी किया गया है।

साथ ही उच्च प्राथमिक स्तर के लिए ए.एल.एम. (एक्टिव लर्निंग मैथड) पर आधारित गति एवं स्तर के अनुरूप तीव्र गति से सीखने वाली सामग्री का निर्माण कार्य शुरू किया गया है।

यह संदर्शिका अनुदेशकों के लिए निर्मित की गई है। इसमें प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था, बच्चों के साथ समन्वय, शिक्षण एवं मूल्यांकन के तरीकों एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों का समावेश किया गया हे।

अनुदेशक अब शिक्षा जगत की महत्वपूर्ण कड़ी बनने जा रहे हैं। आपके कंधों पर अति महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रत्येक बच्चे को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने एवं शिक्षा का अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन में आपकी महती भूमिका होगी।

मुझे विश्वास है कि यह संदर्शिका अनुदेशकों की क्षमता विकास, तथा प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने में अपना अमूल्य योगदान देगी।

सामग्री एंव प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं
प्रतीक्षारत.....

संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.
शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)

आभार

प्रिय साथियों,

छत्तीसगढ़ राज्य के शैक्षिक विकास के लिए हमारी पहली प्राथमिकता है प्रदेश के प्रत्येक बच्चे के मूलभूत शिक्षा उपलब्ध कराना। इसी उद्देश्य को साकार करने के लिए निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 हमारे राज्य में 1 अप्रैल 2010 से लागू किया गया है।

राज्य में ऐसे बच्चे जो शाला से बाहर हैं, के संदर्भ में वर्तमान स्थिति को समीक्षा करें तो ज्ञात होता है कि राज्य के विभिन्न जिलों में लगभग 2 लाख बच्चे शाला से दूर और हैं शिक्षा से वंचित हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर इन बच्चों को विशेष आवासीय प्रशिक्षण केद्रों, विशेष गैरआवासीय प्रशिक्षण केन्द्रों तथा पोटाकेबिन में विशेष प्रशिक्षण दिया जाना है। ताकि विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से इन बच्चों को उनकी उम्र के अनुरूप कक्षा में दर्ज कराने के साथ–साथ उस कक्षा के स्तर की दक्षता भी विकसित की जा सके और वे कक्षा के अन्य बच्चों के समकक्ष आकर सीख सकें।

हमारा उद्देश्य इन बच्चों को विशेष प्रशिक्षण के द्वारा न केवल आयु अनुरूप, कक्षा अनुरूप शिक्षा उपलब्ध कराना है साथ ही बच्चों में शिक्षा की ऐसी भूख जगाना है कि बच्चे निरंतर सीखने–पढ़ने के लिए प्रेरित हो सकें। किंतु यह पुनीत कार्य आप लोगों के सहयोग से ही संभव है। अतः मेरा आपसे आग्रह है कि साक्षरता के इस महायज्ञ में अपने मेहनत की आहुति से शिक्षा की मशाल को निरंतर प्रज्वलित रखने में हमें सहयोग करें। इस मार्गदर्शिका में आपके लिए आवश्यक व अनिवार्य जानकारी देने का भरसक प्रयास किया गया है।

कृपया सामग्री को अधिक सरल एवं बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

शुभकामनाओं सहित .....

मिशन संचालक
राजीव गांधी शिक्षा मिशन
सर्वशिक्षा अभियान
रायपुर (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	Pre - Test	1
2.	SRTC क्या है	2
3.	SRTC का प्रचार–प्रसार	4
4.	ACK के असंतुलित बच्चों का चिन्हांकन	7
5.	SRTC के प्रति अनदुेशक की भूमिका	9
6.	SRTC - देखरेख	11
7.	प्रधान पाठक, शिक्षक एवं अनुदेशक संबंध	14
8.	बाल मनोविज्ञान	17
9.	समस्या ग्रस्त क्षेत्र के बच्चे	23
10.	SRTC प्रबंधन	28
11.	भाषा का अर्थ और सीखने की प्रक्रिया	33
12.	स्तर, आयु, शिक्षण	49
13.	MGML	51.
14.	MGML की आवश्यकता क्यों?	57
15.	MGML के तत्व	69
16.	समुदाय के साथ समन्वय	74
17.	विषय विशेषज्ञ	76
18.	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन	79
19.	शाला से जोड़ने के लिए बच्चों का मूल्यांकन	
20.	चाइल्ड प्रोफाइल	82
21.	फॉलोअप	84
22.	SRTC के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना (Main Starming)	86
23.	च्यावसायिक शिक्षा	88
24	माइल स्टोन	93
25.	Post- test	120

1 Pre - Test

प्री टेस्ट

1. अगर SRTC में कोई बच्चा अन्य बच्चों से मार–पीट करता है, तो आप उस बच्चे के साथ क्या करेंगे?

   अ. मारेंगे ब. केन्द्र से भगा देंगे स. शांत रहेंगे द. कारण जानेंगे।

2. अगर बच्चा बुरी आदतों को नहीं छोड़ना चाहता है तो–

   अ. SRTC से निकाल देंगे ब. दण्डित करेंगे स. अन्य बच्चों से तुलना करेंगे।

   द. धैर्य रखकर सुधारने की कोशिश करेंगे।

3. SRTC में किन बच्चों को रखा जाता है।

   अ. ACK Unbalance ब. अध्ययन त्यागी स. शाला अप्रवेशी

   द. इसमें से सभी

4. SRTC में आपकी भूमिका होगी –

   अ. शिक्षक के रूप में ब. संरक्षक के रूप में स. मार्गदर्शक के रूप में

   द. उपरोक्त सभी

5. SRTC केन्द्र के बच्चों की आयुसीमा निर्धारित होगी –

   अ. 0–14 ब. 6–14 स. 6–20 द. 0–6

6. आप अनुदेशक क्यों बनना चाहते हैं?

7. आपके ग्राम के अनुदेशक और शाला के शिक्षकों के बीच का संबंध कैसा है? कैसा होना चाहिए।

8. क्या आपके आस–पास ऐसे बच्चे हैं, जो किन्हीं कारणों से स्कूल से बाहर हैं? इसके बारे में आपने क्या किया?

9. SRTC में आपने कितने बच्चों का चिन्हांकन कर नामांकन किया है?

10. SRTC में बच्चों के ठहराव के लिए क्या–क्या करेंगे?

11. इस प्रशिक्षण से आपकी क्या अपेक्षाएँ हैं?

0000

2 SRTC क्या है

उद्देश्य :

(1) SRTC की जानकारी देना।

(2) SRTC की आवश्यकता एवं महत्व को बताना।

(3) SRTC केन्द्र के प्रति जागरूक करना।

(4) SRTC खोलने हेतु अधिकारियों को संवेदनशील करना।

(5) SRTC के उचित क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित करना।

RTE और SRTC

RTC की अध्याय 2 की धारा (4) के अनुसार ऐसे बच्चे जो 6 वर्ष से अधिक उम्र के किसी स्कूल में प्रवेश नहीं दिलाया गया हो या प्रवेश दिलाया गया हो लेकिन अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी नहीं की है। तो उसे उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा।

ऐसे बच्चों को जिन्हें उनकी उम्र के अनुसार कक्षा में सीधे प्रवेश दिया गया है, तो उन्हें दूसरे बच्चों के बराबर आने के लिए विशेष प्रशिक्षण निर्धारित समय सीमा के भीतर प्राप्त करने का अधिकार होगा।

SRTC क्या है ? उदाहरणः–

अस्पताल Hospital	SRTC
1. मरीज को Hospital में भर्ती कराना।	1. RTC में शाला त्यागी बच्चों को सेन्टर में लाना।
2. उसके बीमारी का परीक्षण (पहचान) करना।	2. उन्हें एक पारिवारिक वातावरण देना। बच्चों की समस्याओं व कठिनाईयों का पता लगाना।
3. उसके बीमारी का आवश्यकता अनुसार (स्वस्थ होने तक) ईलाज करना।	3. उसके आयु, स्तर व रूचि के अनुरूप शिक्षा देकर एवं उसके व्यवहार में परिवर्तन कर उनको आयु के शिक्षा देना।
4. स्वस्थ हो जाने पर उसे उसके घर वापस भेजना।	4. बच्चों को शाला में ले जाकर उम्र के अनुसार कक्षा में भर्ती करना।

आवश्यकता क्यों ?

1 प्रत्येक बच्चे को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए।

2 बच्चों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के लिए।

4 बच्चों के ठहराव व निरंतरता को सुनिश्चित करने के लिए।

5 दूरस्थ एवं सुविधाविहीन क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर उनके विकास को गति देने के लिए।

6 रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड पर आर्थिक उपार्जन करने वाले बच्चों को सेन्टर से जोड़कर शिक्षा को मुख्यधारा से जोड़ने एवं एक सामाजिक परिवेश देने के लिए।

7 जूता पॉलिश करने वाले, गाड़ी पोंछने वाले, अपराधिक परिवेश में रहने वाले बच्चों के संतुलित विकास के लिए।

8 धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को विशेष शिक्षा देते हुए उनको उनकी दक्षता/स्तर के अनुरूप पहुँचाने के लिए।

9 ऐसे बच्चे जिनके पालक नहीं हैं, या उनका कोई संरक्षक नहीं है। उनको SRTC के संरक्षण में आयु एवं स्तरानुरूप शैक्षिक व सामाजिक परिवेश एवं पारिवारिक वातावरण देने के लिए।

10 बच्चों को उनकी आयु अनुरूप कक्षा के स्तर तक लाने तथा शैक्षिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु।

(11) निःशक्त बच्चों को समान अवसर एवं संरक्षण प्रदान करने के लिए।

कार्य योजना

क्र.	SRTC खोलने हेतु	निगरानी कौन करेगा	कब तक
1.	.....	.....	.....
2.	.....	.....	.....
3.	.....	.....	.....
4.	.....	.....	.....
5.	.....	.....	.....

000000

3 SRTC का प्रचार-प्रसार

उद्देश्य :

1. पालकों एवं अधिकारियों को जागरूक बनाने हेतु।
2. केन्द्र से शिक्षा एवं सुविधाओं की जानकारी हेतु।
3. शिक्षा के अधिकार कानून को जन–जन तक पहुँचाने।

प्रचार–प्रसार के क्षेत्र–

1. जनसम्पर्क :

SRTC संचालन हेतु इनकी जानकारी जन–जन तक पहुँचाना आवश्यक है। जिसमें पंच–सरपंच, जनपद सदस्य, जिला सदस्य आदि जन प्रतिनिधियों को SRTC केन्द्रों की गतिविधि एवं शासन के उद्देश्यों की जानकारी होना आवश्यक है। ताकि उस क्षेत्र में शाला त्यागी, अप्रवेशी बच्चों की स्थिति से अवगत कराकर उन्हें इस कार्य में सहयोग हेतु प्रोत्साहित कर सकें।

इसके लिए हम ग्राम सभा, जनपद पंचायत, एवं जिला पंचायत की बैठक में बच्चों की स्थिति एवं SRTC के महत्व को चर्चा हेतु रख सकते हैं।

2. सभा का आयोजनः–

ग्राम, वार्ड, चौराहे या शाला में छोटी सभा का आयोजन कर उस क्षेत्र के लोगों को आमंत्रित करें। उस क्षेत्र में शिक्षा से दूर बच्चे जैसे– झिल्ली–पन्नी बीनने वाले, धन उपार्जन करने वाले, श्रम करने वाले बच्चों की जानकारी का विवरण दें। और उन बच्चों को SRTC केन्द्र तक लाने हेतु आमंत्रित करें।

3. सफल केन्द्रों का भ्रमणः–

हम अपने जन प्रतिनिधियों एवं शिक्षा से जुड़े अधिकारी को उन SRTC केन्द्रों का भ्रमण करायें। जहाँ शाला त्यागी, अप्रवेशी बच्चे और अध्ययन त्यागी, बच्चे बड़े ही खुशनुमा माहौल में अध्ययन कर रहे हैं तथा मुख्य धारा से जुड़ रहे हैं। साथ ही उन केन्द्रों में सफल संचालन हेतु कितना श्रम किया, कितनी कठिनाईयाँ आईं और उसे उन्होने किस तरह हल किया।

4. शैक्षिक स्टॉल एवं प्रदर्शनः–

विभिन्न उत्सव, मेला एवं त्यौहारों में शैक्षिक स्टॉल लगायें। जिसमें शिक्षण विधि शिक्षण सहायक सामग्री एवं सन्दर्भ ग्रंथ आदि का प्रदर्शन हो। बच्चों को दी जाने वाली सुविधओं का चार्ट, व्यावसायिक शिक्षा की जानकारी एवं SRTC केन्द्र से प्राप्त होने वाले शैक्षिक सफलता के उल्लेख से संबंधित चार्ट का प्रदर्शन, व्यावसायिक शिक्षा से दक्ष बच्चों द्वारा हस्त कार्य का प्रदर्शन आदि हो।

5. सफलता की कहानियों का प्रदर्शनः–

जिस बच्चे ने विशेष दक्षता प्राप्त की है या जिस SRTC केन्द्र ने विशेष उपलब्धि प्राप्त किया है। उसी प्रकार जिस विकास खण्ड एवं जिले में SRTC अच्छा कार्य किया हो उसका अन्य केन्द्र एवं अन्य जिलों में प्रदर्शन।

6. पाम्प्लेट व समाचार पत्र द्वारा–

पोस्टर एवं पाम्प्लेट के माध्यम से शिक्षा का अधिकार की जानकारी देना तथा इसके तहत चलाए जा रहे केन्द्रों की सम्पूर्ण जानकारी, बच्चों को मिलने वाली सुविधा को लिख कर प्रत्येक गली, शहर, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड आदि जगहों पर चश्पा करें। साथ–ही–साथ दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से भी प्रचार–प्रसार करें।

7. दूर संचार के माध्यम से, रेडियो, टी.वी के माध्यम से केन्द्रों का प्रचार किया जा सकता है।

8. अन्य विभागों से समन्वय –

विभिन्न विभागो से सम्पर्क करें जैसे– पंचायत, स्वास्थ्य, पुलिस सहकारिता विभाग से संपर्क कर इस विषय का प्रचार किया जा सकता है इनके सहयोग से हम उन बच्चों को अपने केन्द्र तक जोड़ सकते हैं।

9. संवेदनशील क्षेत्र में प्रचार–प्रसार–

घने जंगल, पहाड़ी एवं समस्य ग्रस्त क्षेत्र में प्रचार–प्रसार टी.वी. रेडियो एवं इन्टरनेट के माध्यम से देवें। हॉट, बाजारों, मेला उत्सव में मशाल रैली निकालें। जन समूह के माध्यम से प्रचार करें। सभा आयोजित करें, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से संदेश प्रसारित करें।

10. फ्लैक्स बोर्ड चौक चौराहों पर लगाएँ।

11. कलेण्डर– शाला कैलेंडर या शिक्षा कैलेंडर में SRTC संबंधी बातों को जगह देकर घर–घर तक पहुँचाएँ।

12. बस–गाड़ियों में विज्ञापन देकर।

13. दीवारो पर शिक्षा एवं SRTC संबंधी का नारें का लेखन करें।

14. टोपी या टी शर्ट पर SRTC का प्रचार–प्रसार करें।

कार्ययोजना

प्र. यदि आपको का प्रचार–प्रसार करना है तो, आप और कौन–कौन से तरीकों को अपनाएँगें?

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

00000

यह विश्वास करो कि तुम परिवर्तन कर सकते हो और तुम परिवर्तन कर लोगे।

4 ACK के असंतुलित बच्चों का चिन्हांकन

उद्देश्य :

1. ACK असंतुलित बच्चे की अवधारणा से परिचित करना।
2. ACK असंतुलित बच्चों के चिन्हांकन के क्षेत्रों पहचानना।
3. शाला में ऐसे बच्चे जो उम्र के अनुरूप कक्षा और कक्षा के अनुरूप (दक्षता) ज्ञान नहीं रखते हैं उनका चिन्हांकन करना।

आवश्यक सामग्री :– व्हाइट बोर्ड, टेप, ड्राईंग शीट, स्केच पेन

विधि :– चर्चा, परिचर्चा, प्रश्नोत्तरी विधि–

1. ACK असंतुलित से क्या तात्पर्य है ?इसमें किस तरह के बच्चे आ सकते हैं?
2. क्या ऐसे बच्चे हमारे स्कूलों में हो सकते हैं ?
3. क्या ऐसे बच्चों को SRTC में लाना चाहिए यदि हाँ तो क्यों?
4. इन बच्चों का चिन्हांकन कैसे किया जाए ?
5. इन बच्चों को SRTC तक लाने के लिए कौन–कौन से उपाय किये जाने चाहिए ?
6. इन बच्चों को SRTC तक लाने की जिम्मेदारी किन–किन लोगों की है?

ACK अनबेलेन्स बच्चों का चिन्हांकन

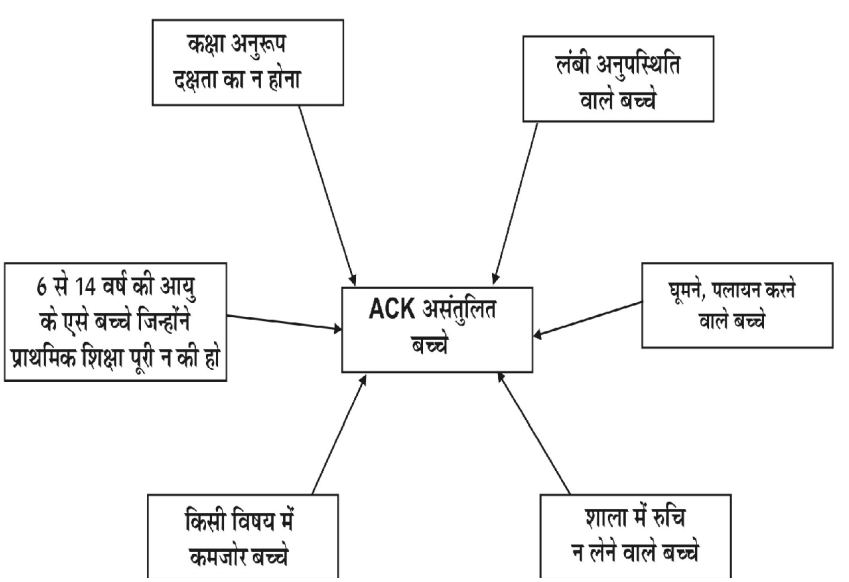

ACK असंतुलित बच्चों का चिन्हांकन कैसे करें ?

1. प्रगति पत्रक मूल्यांकन – बच्चे के मूल्यांकन प्रत्रक या प्रगति पत्रक और मासिक मूल्यांकन को देखकर बच्चे के विषय अथवा स्तर के अनुरूप तय किया जा सकता है। कि वह ACK असंतुलित है अथवा नही।
2. CAC द्वारा चिह्नांकन – संकुल समन्वयक स्कुलों में अवलोकन के समय ACK असंतुलित बच्चों का चिह्नांकन करेंगे।
3. शिक्षक से चर्चा – शिक्षक से चर्चा के पश्चात पता लगाया जा सकता है कि बच्चा ACK असंतुलित है। अथवा नहीं।
4. विषय आधारित समस्या – यदि किसी बच्चे में किसी विषय विशेष की समझ कक्षा के अनुरूप नहीं है, तो उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखकर बच्चे को चिह्नांकन किया जा सकता है।
5. लम्बी अनुपस्थिति वाले बच्चे या अनियमित बच्चे – लम्बी अनुपस्थिति वाले बच्चों की शिक्षा प्रभावित रहती है। अतः ऐसे बच्चों का चिह्नांकन किया जाए।
6. कक्षा के अनुरूप प्रत्येक विषय की दक्षता – यदि बच्चा कक्षा के अनुरूप विषय आधारित दक्षता को पूर्ण नहीं कर पाता है, तो ACK असंतुलित बच्चा है। अतः उस बच्चे का चिन्हांकन कर SRTC के माध्यम से आयु अनुरूप कक्षा और कक्षा अनुरूप ज्ञान तय किया जाना है।

असंतुलित बच्चों की चिन्हांकन के लिए एक कार्य योजना तैयार कीजिए

कार्य योजना

छात्र/छात्रा का नाम	उम्र	कक्षा	विषय	कौन सी दक्षता पूर्ण नही कर पाया है	क्या करेंगे	किसका सहयोग लेंगे	जिम्मेदारी

00000

5 SRTC के प्रति अनदेशक भूमिका

उद्देश्य :

1. एक सशक्त, जागरुक,परिश्रमी, कर्त्तव्यनिष्ठ मिलनसार सेवाभावी अनुदेशक तैयार करना।
2. अनुदेशक को उनकी भूमिका से अवगत कराना।
3. बच्चों की आवश्यकता को पहचाने और उसी के अनुरूप कार्य करें ऐसे क्षमता विकसित करना।
4. अनुदेशक को अपने कार्य एवं दायित्व के प्रति सजग बनाना।

आवश्यक सामग्री :– ड्राइंग शीट 4 नग, स्केचपेन, व्हाइट बोर्ड, मार्कर, चॉक।

शिक्षण विधि :– समूह चर्चा।

कक्षा को चार समूह में बाँटे। प्रत्येक समूह को निम्न लिखित विषयों के प्रस्तुतीकरण हेतु समूह चर्चा कराएँ –

(अ) अनुदेशक कौन है? इनकी आवश्यकता क्यों हुई?

(ब) अनुदेशक के कार्य कौन–कौन से है?

(स) अनुदेशक का व्यवहार/स्वभाव कैसा हो?

(द) अनुदेशक की क्या भूमिका होनी चाहिए?

15 मिनट पश्चात् प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण देंगे। मुख्य बातों को बोर्ड पर नोट करेंगे एवं चर्चा सार बिन्दुओं को अलग–अलग करते जायेगें।

प्रस्तुतिकरण में निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रशिक्षक चर्चा करेंगे :–

"अनुदेशक की भूमिका" :

1. विशेष आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र को सर्व सुविधायुक्त एवं आकर्षक बनाना।
2. प्रधान पाठक एवं शिक्षकों के सहयोग से शालात्यागी, अप्रवेशी तथा A.C.K. असंतुलित बच्चों का चिन्हांकन कर केन्द्र तक लाना।
3. SRTC केन्द्र में आये बच्चों की पारिवारिक, सामाजिक, व्यक्तिगत अभिरूचि एवं आदतों की प्रोफाईल तैयार करना।

4 शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए वातावरण का निर्माण करना। बच्चों के ठहराव के लिए प्रयास करना।

5 बच्चों का स्तर मापना एवं समूह का निर्धारण करना।

6 बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार शिक्षण करना एवं उनके कमजोर पक्ष को उसे एहसास दिलाये बगैर दूर करना।

7 बच्चों को सुरक्षा का अहसास दिलाना।

8. कम समय में बच्चों को आयु के अनुरूप ज्ञान प्रदान करना।

9. कक्षा 1 से 8 तक के सभी विषयों का ज्ञान रखना एवं स्वाध्याय के लिए सतत् रूप से जुड़े रहना।

10. विषय विशेषज्ञ से निरंतर संपर्क बनाये रखना।

11. अनुदेशक का व्यवहार बच्चों के साथ पारिवारिक एवं मित्रवत् हो।

12. बच्चों के माता–पिता एवं शिक्षक से लगातार सम्पर्क बनाये रखना।

13. बच्चा एक हीरा है तराशने का काम अनुदेशक का है। बच्चे के विकास के लिए जिन सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता हो, उसे विभिन्न स्त्रोतों जैसे केन्द्र प्रभारी सहायक संचालक के माध्यम से प्राप्त करना एवं शिक्षण करना।

14. शिक्षण की विभिन्न विधियों की जानकारी प्राप्त करना।

15. भौतिक संसाधनों के रख–रखाव एवं बेहतर उपयोग सुनिश्चित करना।

16. बच्चों का साप्ताहिक एवं सतत् मूल्यांकन कर उसकी प्रगति को प्रगति पत्रक, एवं अन्य अभिलेखों में संधारित करना।

17. बच्चों में छुपी प्रतिभा को पहचान कर उसे निखारना।

18. बच्चों के बीच परस्पर सौहार्द्रता की भावना का विकास करना।

19. बच्चों के व्यक्तित्व में विकास एवं सृजनात्मक गतिविधियों से जोड़ने हेतु कार्यक्रमों का निर्धारण कर उनका क्रियान्वयन करना।

20. ठेस पहुंचाने वाले शब्दों का प्रयोग न करें।

(21) सभी बच्चों के साथ समानता का व्यवहार करें।

(22) शरारती, अपराधिक कार्यों में संलग्न बच्चों को SRTC केन्द्र में लाने के लिए कैसे प्रयास करेंगे की जानकारी हो।

00000

6 SRTC - देखरेख

उद्देश्य :

1. SRTC में बच्चों की उचित देखरेख हेतु समझ विकसित करना।

2. अनुदेशकों को बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाना।

3. बच्चों के विभिन्न स्तर एवं रूचि की पहचान करना।

4. केन्द्र में पारिवारिक वातावरण का निर्माण करना।

5. बच्चों में सुरक्षा का भाव महसूस कराना।

आवश्यक सामग्री :– ब्लैक बोर्ड, चॉक, ड्राईंगशीट, स्केच पेन।

शिक्षण विधि :– समूह चर्चा

प्रशिक्षण :– अनुदेशक को 4 समूह में बाँट कर निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे।

चर्चा के बिन्दु –

1. अनुदेशक और बच्चों के बीच संबंध।

2. बच्चों की विविधताओं की पहचान व अनुदेशक का व्यवहार।

3. स्वच्छता के प्रति बच्चों में जागरूकता कैसे लाएँ?

4. बच्चों में पारस्परिक सहयोग की भावना कैसे विकसित हो ?

   साथ ही अनुदेशक में यह भावना कैसे विकसित करें?

समूह कार्य के पश्चात् प्रस्तुतीकरण करेंगे:–

प्रशिक्षक मुख्य बिन्दुओं को ब्लैक बोर्ड पर लिखेंगे।

अब प्रशिक्षक छूटे हुए बिन्दुओं पर चर्चा करेगें।

अनुदेशकों का बच्चों के साथ संबंध :

1. अनुदेशक छात्रों से समानता कर व्यवहार करें।

2. प्रत्येक छात्र को उसके नाम से पुकारें।

3. प्रत्येक छात्र को सतत् प्रोत्साहित करें।

4. बच्चों की आवश्यकता व रूचियों का ध्यान में रखें।

5. अनुदेशक का व्यवहार अपनत्व पूर्ण हो।

6. **SRTC** केन्द्र का वातावरण पारिवारिक हो।

7. अनुदेशक का व्यवहार मित्रवत/मृदुभावी व नम्र हो।

8. बालमेला/मेट्रीक मेला का आयोजन करें।

9. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशील हो।

10. किशोरी बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति जागरूक हो।

बच्चों की विविधताओं की पहचान और अनुदेशक का व्यवहार

1. शारीरिक विविधता – उम्र, अवस्था, निःशक्तता की पहचान करें।

2. बौद्धिक विविधता – जितने बच्चे उतनी गति व स्तर होते हैं।

3. सामाजिक परिवेश – बच्चे अलग–अलग सामाजिक परिवेश से होते हैं।

4. आर्थिक परिस्थिति – सभी बच्चों की आर्थिक परिस्थिति भिन्न–भिन्न होते हैं।

5. लैगिंक विविधता – बालक व बालिका दोनों प्रकार के बच्चे होते हैं।

उपरोक्त विविधताओं की पहचान अनुदेशक करें।

किन्तु इन विविधताओं के बाबजूद व समस्त छात्रों से समानता का व्यवहार करें।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति सजगता –

1. छात्रों को परिसर, शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, रसोईघर, एवं शौचालय के स्वच्छता के प्रति सजग बनाना।

2. शारीरिक स्वच्छता एवं उसके महत्व को समझाना।

3. अनुदेशक को प्राथमिक उपचार का ज्ञान हो तथा प्राथमिक स्वास्थ्य किट उपलब्ध हो।

4. पेयजल को ढ़ँक कर रखना व निकालने हेतु लंबी डंडी वाले मग का उपयोग करें।

पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास –

1. समूह वाले खेलों का आयोजन कर।

2. सामूहिक अध्यापन व भोजन कराकर।

3. बाल मेला, मेट्रीक मेला, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर।

4. अनुदेशक बच्चों के साथ बैठकर अध्यापन कार्य कराकर।

कार्ययोजना

क्र.	विषय	कैसे करें	कब–कब करें	आवश्यक संसाधन
1	विविधताओं की पहचान एवं सहयोग			
2	पारस्परिक सहयोग			
3	स्वास्थ्य एवं स्वच्छता			
4				
5				

00000

सफलता तुम्हारी मस्तिष्क के आकार पर निर्भर नहीं करता। वह हमेशा तुम्हारी सोंच पर निर्भर करता है।

7 प्रधानपाठक, शिक्षक एवं अनदेशक संबंध

उद्देश्य :

1. शिक्षक, प्रधानपाठक एवं अनुदेशक में समन्वय स्थापित करना।
2. SRTC एवं शाला के बच्चों के बीच समन्वय बनाना।
3. SRTC की शैक्षिक समस्या का शाला शिक्षकों से समाधान प्राप्त करना।
4. SRTC के बच्चों का स्कूल के प्रति भय को दूर करना।

आवश्यक सामग्री :– स्केच पेन, चार्ट

विधि – नाटक

पात्र परिचय

1. प्रधान पाठक
2. शिक्षक
3. अनुदेशक
4. छात्र (कुछ छात्र)

प्रथम दृश्य

(कुछ छात्रों के साथ अनुदेशक शाला के प्रधानपाठक के कक्ष में प्रवेश करता है)

अनुदेशक – बड़े गुरुजी ! प्रणाम।

प्रधान पाठक – नमस्कार भाई, नमस्कार। आइये बैठिये।

अनुदेशक – गुरुजी! मै विशेष आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र का अनुदेशक रमेश हूँ।

प्रधान पाठक – हाँ तो रमेश! कैसे आना हुआ?

अनुदेशक (रमेश) – गुरुजी! मैं अपने केन्द्र के कुछ बच्चों को शाला में नियमित करवाने के लिए लाया हूँ। इन्होंने अपनी कक्षा के अनुरूप दक्षता पूरी कर ली है।

प्रधान पाठक हाँ ठीक है।

(प्रधान पाठक SRTC केन्द्र के बच्चों का Child Porfile देखते हैं।)

दूसरा दृश्य

(प्रधानपाठक, अनुदेशक और शिक्षक आपस में चर्चा करते हैं।)

अनुदेशक (रमेश) – प्रणाम सर।

शिक्षक – प्रणाम रमेश जी।

प्रधान पाठक – SRTC के कुछ बच्चे अपनी दक्षताएँ पूर कर चुके हैं। अब ये छात्र आपकी कक्षा में नियमित रूप से पढ़ेंगे।

शिक्षक – अरे वाह! यह तो बड़ी अच्छी बात है। चलो बच्चों अपने नए दोस्तों से मिलो।

(अनुदेशक, शिक्षक और प्रधान पाठक को अपने SRTC में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में आने हेतु निमंत्रण देता है।)

दूसरा दृश्य

(प्रधान पाठक, शिक्षक SRTC में सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने आते हैं। अनुदेशक,शिक्षक एवं प्रधान पाठक परस्पर अभिवादन करते हैं।)

अनुदेशक – आइए सर! मेरे केन्द्र को देख लीजिए।

प्रधान पाठक – हाँ चलो भाई।

(प्रधान पाठक, शिक्षक SRTC केन्द्र को देखते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हैं। प्रधान पाठक सांस्कृतिक कार्यक्रम का पुरस्कार वितरण करते हैं।)

अनुदेशक – अब मैं बड़े गुरुजी को बच्चों के मार्गदर्शन एवं उद्‌बोधन हेतु आमंत्रित करता हूँ।

प्रधान पाठक – धन्यवाद रमेश जी। SRTC के छात्रों ने काफी लगन एवं मेहनत का परिचय दिया है। छात्रों आप हमेशा अपने कर्त्तव्य पथ पर इसी प्रकार आगे बढ़िये। हमारे शाला का वार्षिक उत्सव अगले महीने आयोजित है। मैं चाहता हूँ कि आप अधिक–से–अधिक संख्या में कार्यक्रम में भाग लें। धन्यवाद।

(अनुदेशक द्वारा शिक्षक एवं प्रधानपाठक का आभार व्यक्त किया जाता है।)

अब प्रशिक्षक अनुदेशकों से कुछ प्रश्न पूछेगें :–

(1) इस एकांकी को देखने के उपरांत बताएँ कि अनुदेशक और, प्रधानपाठक के मध्य और

क्या–क्या बातें हो सकती हैं?

उत्तर .....

(2) इस नाटक में सर्वप्रथम पहल किसने की?

उत्तर .....

(3) क्या अनुदेशक ने शिक्षक तथा प्रधानपाठक से समन्वय स्थापित किया है ?

उत्तर .....

(4) क्या इस समन्वय से आपको और SRTC के बच्चों को लाभ होगा? कैसे ?

उत्तर .....

(5) शिक्षक तथा प्रधानपाठक से समन्वय स्थाापित करने हेतु सुझाव दें।

उत्तर .....

(6) शिक्षक तथा प्रधानपाठक से समन्वय स्थापित करने से क्या–क्या लाभ होगें?

उत्तर .....

कार्ययोजना

अपने निकट के शाला से समन्वय स्थापित करने हेतु कौन–कौन से कार्य किए जा सकते हैं?

क्र.	कार्य	सहायक	कब करेंगे?
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

0000

8 बाल मनोविज्ञान

उद्देश्य :–

(1) बाल मनोविज्ञान से परिचित करना।

2 बाल मनोविज्ञान के अनुरूप शिक्षण की जानकारी देना।

3 बाल मनोविज्ञान के अनुरूप शिक्षण करने हेतु प्रेरित करना।

आवश्यक सामग्री :– व्हाईट बोर्ड, मार्कर

विधि :– प्रश्नोत्तर एवं व्याख्यान विधि।

नोट :– प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछेगें एवं प्राप्त उत्तरों को व्हाईट बोर्ड लिखेंगे।

प्रश्न – बच्चों को कितनी अवस्था (उम्र समूह) में विभाजित कर सकते हैं?

प्रश्न – बच्चों की विभिन्न अवस्थाओं में किस–किस तरह का विकास होता है?

प्रश्न – बच्चों की किन गतिविधियों में रूचि होती है?

प्रश्न – बच्चे स्वप्रेरित होकर पढ़ाई करते हैं या उन्हें मजबूर किया जाता है?

प्रश्न – बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लगता इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं?

बाल मनोविज्ञान

मनोविज्ञान का अर्थ है मन की अवस्थाओं का ज्ञान। मानव जीवन अनेक अवस्थाओं से होकर गुजराता है।इनमें से सबसे महत्वपूर्ण बाल्यकाल होता है।

बालमनोविज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है जिसमें बालकों के विकास का अध्ययन गर्भकाल से किशोरावस्था से तक किया जाता है। यहाँ विकास का आशय बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि विकास से होता है। जो वह अपने परिवेशीय वातावरण से सीखता है।

बाल मनोविज्ञान की आवश्यकता

(1) इसमें बच्चों की रूचि एवं आवश्यकता की जानकारी मिल जाती है, जिससे उसकी शिक्षा उसके स्तरानुरूप की जा सकती है।

(2) बच्चे के स्वभाव की जानकारी होती है। बालक के अनुभवों को हम उसी की दृष्टि से देख पाते हैं।

(3) बालक के मानसिक विकास की जानकारी प्राप्त होती है।

(4) कभी–कभी जिज्ञासा शांत न होने अथवा मनोकृत्तियों का दमन होने की स्थिति में बच्चे कुन्ठित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में बालमनोविज्ञान की सहायता से उसकी स्थिति सामान्य की जा सकती है।

(5) इसके अनुसार बालक को भविष्य के लिए सही दिशा निर्देश दिए जा सकते हैं।

बाल विकास की अवस्थाएँ :–

(1) शैशव अवस्था (2) बाल्यवस्था (3) किशोर अवस्था

शैशव अवस्था :–

जन्म से 5 वर्ष की आयु तक की अवस्था को शैशव अवस्था कहते हैं। यह संवेदनशील अवस्था होती है जिसमें बालक को माता और परिवार के अन्य सदस्यों पर पूर्णरूप से निर्भर रहना पड़ता है।

विशेषताएँ :–

(1) शारीरिक विकास में तीव्रता।

(2) मानसिक विकास में तीव्रता।

(3) सीखने की तीव्र प्रक्रिया।

(4) कल्पना की सजीवता।

(5) आत्मप्रेम की भावना।

(6) दूसरों पर निर्भरता।

(7) मूल प्रवित्तयों पर आधारित व्यवहार।

(8) सामाजिक भावना का विकास।

(9) दूसरे बालकों में रूचि–अरूचि।

(10) संवेगों का प्रदर्शन (प्रेम, भय, ईर्ष्या, अहंकार, उत्सुकता, हर्ष)।

(11) दोहराने की प्रवृत्ति।

(12) जिज्ञासु प्रवृत्ति।

(13) अनुकरण की प्रवृत्ति।

(14) अकेले व साथ खेलने की प्रवृत्ति।

शैशव अवस्था में शिक्षा का स्वरूप कैसा हो ?

इस अवस्था के बच्चे अधिक संवेदनशील होते है। इस अवस्था में बच्चों को शिक्षा के लिए – (1) उचित वातावरण (2) उचित व्यवहार (3) सुरक्षा का एहसास (4) जिज्ञासा की संतुष्टि (5) वास्तविकता का ज्ञान (6) आत्मनिर्भरता का विकास (7) निहित गुणों का विकास (8) सामाजिक भावना का विकास (9) मूल प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन (10) आत्मप्रदर्शन के अवसर (11) मानसिक क्रियाओं का अवसर (12) अच्छी आदतों का विकास (13) क्रिया द्वारा शिक्षा (14) खेल द्वारा शिक्षा व चित्रों व कहानियों द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए।

बाल्य अवस्था :–

यह अवस्था 6 वर्ष की आयु से लेकर 12 वर्ष तक मानी जाती है। यह अवस्था शिक्षा की दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसलिए शिक्षणकर्ता को बालकों की आधारभूत आवश्यकताओं उनकी समस्याओं तथा परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान होना अति आवश्यक है।

विशेषताएँ –

(1) शारीरिक व मानसिक स्थिरता एवं योग्यताओं में वृद्धि

(2) क्रियाशील मस्तिष्क एवं सीखने की तीव्रता।

(3) जिज्ञासा की प्रबलता।

(4) वास्तविक जगत के संबंध।

(5) रचनात्मक कार्यों में आनंद।

(6) सामाजिक एंव नैतिक गुणों का विकास।

(7) बर्हिमुखी व्यक्तित्व का विकास।

(8) संवेगों का दमन व प्रदर्शन।

(9) संग्रह करने की प्रवृत्ति।

(10) बिना उद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति।

(11) सामूहिक प्रवृत्ति।

(12) सामूहिक खेलों में रूचि।

(13) रूचियों में परिवर्तन।

बाल्य अवस्था में शिक्षा का स्वरूप कैसा हो –

इस अवस्था के बच्चों को आस पास के वातावरण और परिवेश का ज्ञान होता है। अतः उस ज्ञान को शिक्षा से जोड़ने के लिए – (1) भाषा ज्ञान पर बल, (2) उपयुक्त विषयों का चुनाव (3) रोचक विषय सामग्री (4) गतिविधि आधारित शिक्षण (5) जिज्ञासा की संतुष्टि (6) रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था (7) पर्यटन व्यवस्था के साथ सामूहिक कार्यों पर जोर दिया जाए।

किशोरावस्था :–

मानव जीवन में यह अवस्था सबसे क्रांतिकारी होता है। सामान्यतः 12 वर्ष की आयु 18 वर्ष की आयु तक यह अवस्था मानी जाती है। सामान्यतः बालकों की किशोर लगभग 13 वर्ष की आयु में तथा बालिकाओं की लगभग 12 वर्ष की आयु में आरम्भ होती है।

किशोर अवस्था में शिक्षा का स्वरूप कैसा हो –

(1) शारीरिक विकास के लिए शिक्षा पर जोर

(2) मानसिक विकास के लिए शिक्षा पर जोर

(3) संवेगात्मक विकास के लिए शिक्षा पर जोर

(4) सामाजिक सम्बन्धों की शिक्षा

(5) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा

(6) जीवन कौशल की शिक्षा

(7) धार्मिक व नैतिक शिक्षा

(8) पूर्व व्यवसायिक शिक्षा

(9) इस उम्र में होने वाले शारीरिक व मानसिक परिवर्तन के प्रति जागरूकता

(10) उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग

(11) एक दूसरे के प्रति सम्मानजनक व्यवस्था

बाल विकास के समय होने वाले परिवर्तन –

(1) शारीरिक विकास – इसके अन्तर्गत बालकों को शरीर का विकास सम्मिलित है। अतः शरीर में आने वाले परिवर्तनों को पहचान कर पोषण व स्वास्थ्य में सहयोग करें।

(2) मानसिक विकास – इसके अन्तर्गत संवेदना निरीक्षण, स्मरण, कल्पना, चिंतन, निर्णय,

बुद्धि, रूचि, अभिरूचि, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, तर्क, सीखना भाषा आदि से है। इन कौशलों के विकास में सहयोग करें।

(3) सामाजिक विकास – समाज के साथ प्रत्येक अवस्था में बालक का संबंध भिन्न–भिन्न होता है। अतः समाज की आवश्यकता से बालक को अनभिज्ञ कराया जाए।

(4) संवेगात्मक विकास –

बालक में प्रेम, हर्ष, उत्सुकता, भय, क्रोध, ईर्ष्या, आदि में परिवर्तन व विकास हो संवेगात्मक विकास है।

(5) भाषायी विकास – भाषा कल्पना तथा विचारों के आदान–प्रदान का जरिया है।यह तीनों अवस्थाओं में भिन्न होता है।

(6) नैतिक मूल्य परक विकास – नैतिकता का अर्थ चारित्रिक विकास से है।

7 बालकों का व्यवहार एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक – व्यवहार का तात्पर्य उस व्यवहार से है, जो बालक अपने परिवार, साथियों, समूहों में रहकर करता है। जो उसे जीवन को व्यवस्थित करने के लिए आवश्यक है।

केन्द्र पर बच्चों की पढ़ाई और अनुदेशक

क्या करें :–

- बच्चे को पढ़ाते समय डाँटने–फटकारने की बजाय उससे मित्रवत व्यवहार करें।
- धैर्य रखें। बच्चा यदि सीख नहीं रहा है तो उस पर झुंझलाहट न दिखाकर अपने प्रयास को जारी रखें।
- बच्चे को पढ़ाई–लिखाई में हर तरह से सहयोग करें। उसको पाठ्यपुस्तक उपलब्ध कराएँ। समय पर सुलाएँ–जगाएँ, खाने–पीने का ध्यान रखें। उसके खेल व मनोरंजन की उचित व्यवस्था करें। यहाँ तक कि अगर वह पढ़ रहा है और पानी पीना चाहता है तो उसकी सीट पर आप पानी ले जायें।
- बच्चे को भयमुक्त वातावरण दें। केन्द्र स्वच्छ व साफ सुथरा हो।
- बच्चे की प्रत्येक उपलब्धि पर उसकी पीठ थपथपाकर उसे प्रोत्साहित करें।

क्या न करें :–

- बच्चे को ठेस न पहुँचाएँ।
- अनावश्यक दूसरे बच्चों से तुलना न करें।

- दूसरों के सम्मुख अपने बच्चे की अनावश्यक प्रशंसा न करें।
- बार–बार पढ़ने हेतु न कहें।
- बच्चे को किसी भी दशा में हतोत्साहित न करें।

कार्य योजना

आप अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए कौन–कौन से कार्य करेंगे एवं कौन–से कार्य नही

क्र.	क्या करेंगे	क्या नहीं करेंगे
1		
2		
3		
4		
5		

00000

मुश्किलें हमेशा बेहतरीन लोगों के हिस्से में ही आती है। क्योंकि वह उसको बेहतरीन तरीके से अंजाम देने की ताकत रखते हैं।

9 समस्या ग्रस्त क्षेत्र के बच्चे

उद्देश्यः

समस्या ग्रस्त एवं संवेदनशील बच्चों को SCERT में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा दी जा सकें

(1) ग्रामीण/शहरी/संवेदनशील क्षेत्रों की विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं से अवगत कराना।

(2) समस्याओं का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।

(3) समस्या के समाधान हेतु कार्य–योजना बनाकर क्रियान्वयन कर पाना।

(4) कार्य–योजना बनाने की समक्ष विकसित करना।

आवश्यक सामग्री–व्हाइट बोर्ड, चॉक, मार्कर, ड्राईंग सीट, बॉटल, कागज का बनाया ढक्कन।

वातावरण निर्माण :

(1) एक बॉटल के अंदर चॉक का टुकड़ा डालकर कागज से बने ढक्कन से बंद कर दें।

(2) प्रतिभागियों से कहा जाए कि ढक्कन को खोले बिना एवं बॉटल को बिना नुकसान पहुँचाए चॉक को बाहर निकालें।

(3) उन्हें हल निकालने हेतु बार–बार प्रेरित करें।

(4) हल नहीं निकलने पर प्रशिक्षक बॉटल के ढक्कन को अंदर धकेलेंगे। जिससे ढक्कन, बॉटल के अंदर चला जाएगा और चॉक का टुकड़ा बाहर निकल जाएगा।

अंततः प्रशिक्षक प्रतिभागियों से निष्कर्ष निकलवाएँ की हर समस्या का हल है। सिर्फ इसे तलाशने की जरूरत है। वह चॉक का टुकड़ा एक बच्चे के समान है जो कि किसी भी कारण से शाला त्यागी, अप्रवेशी, अध्ययन त्यागी है उसे हमें ढूंढकर बाहर निकालना है एवं शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना है।

.....

नोट–प्रशिक्षक अनुदेशओं को तीन समूहों में बाँटेंगे। एक समूह समस्याएं बताएगा। दूसरा समूह संभावित समस्याओं का निदान बताएगा। तीसरा समूह जिम्मेदारी तय करेगा। यह प्रक्रिया क्रमशः ग्रामीण, शहरी, संवेदनशील क्षेत्रों की समस्याओं में परिवर्तित होती रहेगी। दूसरी बार में दूसरा समूह समस्या, तीसरा समूह निदान व पहला समूह जिम्मेदारी तय करेगा।

प्रशिक्षक चर्चा परिचर्चा से उन क्षेत्रों की समस्याओं को निकलवायेंगे एवं उन्हीं से उसका समाधान पूछेंगे।

ग्रामीण क्षेत्र की संभावित समस्याएँ	समाधान हेतु संभावित रणनीति
1 पशु चराने वाले	1 गाँव वाले मिलकर चरवाहा रखने की व्यवस्था करें।
2 घरेलु कार्य करने वाले	2 अपने भाई बहन को घर में रखने वाले बच्चों की जगह झूलाघर, आँगनबाड़ी या स्कूल की व्यवस्था करें।
3 कृषि कार्य करने वाले एवं जंगल में संग्रहण के लिए जाने वाले बच्चे	3 यदि कोई बच्चा कृषि कार्य की वजह से लम्बे समय से अनुपस्थित है। तो ऐसे बच्चों को SRTC में भेजकर विशेष प्रशिक्षण देना।
4 जंगल में संग्रहण करने के लिए जाने वाले बच्चे (महुआ बिनना)	4 इन बच्चों के लिए शाला समय को आवश्यकतानुरूप परिवर्तन करना।
5 परिवार के साथ पलायन करने वाले बच्चे	5 यदि बच्चे अपने परिवार के साथ चले जाते हैं तो आसपास के SRTC में प्रवेश दिलाया जाए।
6 मछली पकड़ने शाला से बाहर खेलने और घूमने वाले बच्चे	6 शिक्षक और समुदाय उसे समझाकर वापस लाएँ एवं कारण जानने का प्रयास करें।
7 अपराधिक माहौल में रहने वाले बच्चे	7 इन बच्चों को प्रेम, सहानुभूति एवं पारिवारिक वातावरण देने की जरूरत है।

8	लंबी बीमारी के कारण अनुपस्थित बच्चे	8	स्वास्थ्य केन्द्र, उपस्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर व नर्स से उपचार कराएँ। मौसम संबंधी होने वाली बीमारियों से बचने के उपाय की जानकारी लें। प्रत्येक बच्चे के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाए।
9	भाषा की विविधता से प्रभावित बच्चे	9	बच्चों को विषय वस्तु को समझाने हेतु स्थानीय बोली का प्रयोग करें ताकि भाषा संबंधी समस्या न हो और सीख सकें।
10	अशिक्षा और गरीबी के कारण न जा पाने वाले बच्चे	10	ग्रामीणों को शिक्षा के महत्व से परिचित कराएँ। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को SRTC में मिलने वाली विशेष सुविधाओं का लाभ बताकर इन केन्द्रों तक लाया जाए।

शहरी क्षेत्रों की संभावित समस्याएँ

संभावित समास्याएँ		संभावित रणनीति	
1	पुल के नीचे रहने वाले बच्चे	(1)	पुल के नीचे रहने वाले बच्चों को अनुदेशको और क्षेत्रीय व्यक्तियों द्वारा मिलकर SRTC की सुविधा और शिक्षा की जानकारी देकर केन्द्रों में जोड़ा जाएँ।
2	रेल्वे व बस स्टैण्ड में रहने वाले बच्चे + भीख माँगने वाले।	(2)	रेल्वे व सब स्टैण्ड के आपसपास रहने वाले बच्चों को SRTC के महत्व व इन क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार करा के इन बच्चों को केन्द्रों तक जोड़ा जाए।
3	झिल्ली–पन्नी बिनने वाले बच्चे	(3)	ऐसे निराश्रित बच्चों का चिन्हांकन कर उन्हें निकट के केन्द्र से जोड़े।
4	घूमन्तू–बंजारा परिवार के बच्चे	(4)	घूमन्तू व बंजारा परिवार किसी क्षेत्र में आते ही निकट के थाने में सूचना देते हैं। तो विभाग से समन्वय कर ऐसे बच्चों को

		निकट के SRTC सेन्टर में लाकर अध्यापन कराया जाए।
5	भाषायी समस्या	(5) कुछ बच्चे अन्य राज्यों से शहरों में अपने माता–पिता के साथ आते हैं, तो उसके शिक्षण में भाषा ही समस्या होती है। इसे दूर करने के लिए उस भाषा के जानकार शिक्षित लोगों का सहयोग लिया जा सकता है।
6	बाल अपराधी बच्चे	(6) बाल अपराधी बच्चों के लिए बाल सम्प्रेषण गृह में ही SRTC केन्द्र की तरह शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
7	झुग्गी–झोपड़ी एवं बस्तियों में रहने वाले बच्चे	(7) ऐसे बच्चों के परिवेश में शिक्षा के प्रति जागरूकता लानी चाहिए तथा बस्तियों में SRTC केन्द्रों की स्थापना की जाए।

संवेदनशील क्षेत्र की संभावित समस्याएँ

संभावित समास्याएँ	संभावित रणनीति
(1) शिक्षा संबंधी गलत धारणाओं को दूर करना।	(1) ऐसे स्थानों में समझदार एवं शिक्षित व्यक्तियों एवं प्रतिनिधियों तथा प्रभुत्व रखने वाले लोगों को शिक्षा का महत्व समझाकर बच्चों को केन्द्र में लाकर मुख्य धारा से जोड़ें।
(2) ऐसे बच्चों का चिन्हांकन जो किसी भी कारण से शिक्षा की मुख्य धारा से बाहर हैं।	(2) इन क्षेत्रों में ऐसे बच्चों की सहीं जानकारी प्राप्त की जाए और शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जाए।
(3) संवेदनशील क्षेत्रों में अनाथ एवं पलायन कर्ता बच्चे।	(3) इन क्षेत्रों के बच्चों को केन्द्रों लाकर उनकी आवश्कता को पूरा किया जाए। आत्मीय जुड़ाव के साथ रखा जाए।

(4) लड़कियों की शिक्षा के प्रति प्रोत्साहन न दे पाना।	(4) मितानिन व आँगनबाड़ी की सहायता से बालिका शिक्षा को विशेष महत्व देना, इन क्षेत्रों की महिलाओं, शिक्षित युवाओं का विशेष सहयोग लेते हुए बालिकाओं को केन्द्रों तक लाकर स्तरानुसार शिक्षा देना।
(5) बीमारी से प्रभावित जन–जीवन।	(5) बीमारियों से प्रभावित बच्चों को अनुदेशक स्वास्थ्य कार्यकर्ता सरपंच एवं पालकों की सहायता से ईलाज कराया जाए और SRTC में शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जाए।
(6) बाहरी वातावरण से अवगत न होना।	(6) बाहरी वातावरण से अवगत कराने हेतु टी.वी., रेडियो, समाचार पत्र आदि संचार माध्यमों से जोड़ा जाए।

000000

हम मंजिलों की बातें मंजिलों पर करेंगे, अभी
तो हमें चट्टानों में रास्ता बनाना है।
जिंदा रहना है तो कारवाँ बनाना है,
जमी की बस्तियों में आसमाँ बनाना है।

10 SRTC का प्रबंधन

उद्देश्य :–

1. SRTC प्रबंधन के महत्व को जानना।
2. SRTC में शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करना।
3. SRTC में प्रबंधन को निरन्तर बनाए रखने समझ विकसित करना।
4. SRTC बच्चों के ठहराव हेतु सशक्त प्रबंधन की व्यवस्था करना।

आवश्यक सामग्री :– कोरा कागज, ड्राइंगशीट, मार्कर, व्हाइट बोर्ड, ब्लैक बोर्ड, चॉक आदि।

गतिविधि :–

1. प्रशिक्षक प्रतिभागियों की ग्रुप विभाजन करेगे। प्रत्येक ग्रुप में कम से कम 6 प्रतिभागी होगें।
2. नीचे लिखे बिन्दुओं का पर्ची प्रत्येक समूह को एक–एक निकालने कहेंगे।
   - A. आप अपने नए घर–परिवार की सुव्यवस्थित संचालन के लिए क्या–क्या करेंगे?
   - B. SRTC संचालित होने वाले स्थान में क्या–क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
   - C. SRTC के सफल संचालन में किन–किन व्यक्तियों, संस्थाओं की आवश्यकता होगी?
   - D. SRTC में आवास भोजन के साथ किन–किन गतिविधियों को संचालित करने की आवश्यकता है?
   - E. SRTC में बच्चे कब पूरे मन के साथ ठहरेंगे?
3. प्रतिभागी समूह में चर्चा कर ड्राइंगशीट में लिखेगें।
4. प्रतिभागियों द्वारा कक्ष में समूहवार प्रस्तुतीकरण किया जावेगा।
5. मुख्य बिन्दुओं को प्रशिक्षक बोर्ड में लिखते जायेंगे।

प्रशिक्षक कहेंगे कि, आईये अब हम SRTC के प्रबंधन के संबंध में आगे चर्चा करते हैं –

SRTC का प्रबंधन

सामान्य प्रबंधन

1. 10:30 से 4:30 तक बच्चे गणवेश में रहेंगे शेष समय सामान्य ड्रेस में रहेंगे। सभी बच्चों के पास 2 जोड़ी स्कूल यूनीफार्म एवं 2 जोड़ी सामान्य ड्रेस रहेंगे।
2. सभी बच्चों के लिए टॉवेल की व्यवस्था हो।
3. सभी बच्चों के लिए जूता, टाई, बेल्ट एवं पहचान पत्र होंगे।
4. बच्चों का गणवेश साफ सुथरा हो।
5. सिलाई, मशीन, सुईधागा, बटन आदि का व्यवस्था ताकि कटे–फटे कपड़े की सिलाई हो सके।

विशेष आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र का बाहरी वातावरण

1. केन्द्र परिसर एवं भवन स्वच्छ एवं आकर्षक हो। केन्द्र वृक्षारोपण की दीवारों पर आकर्षक एवं शिक्षाप्रद चित्रकारी हो।
2. केन्द्र परिसर में वातावरण को स्वच्छ रखने हेतु वृक्षारोपण एवं फूलदार पौधे का रोपण किया जाए।
3. पौधों को सुरक्षित रखने हेतु बच्चो को प्रेरित करते हुए कार्य विभाजन किया जाये।
4. केन्द्र परिसर एवं भवन को स्वच्छ एंव आकर्षक बनाने हेतु सामुदायिक सहभागिता लिया जाये।

केन्द्र के कक्षों की स्थिति

1. कम से कम दो अध्ययन कक्ष होना चाहिए। जिसमें बच्चों के बैठने हेतु कुर्सी, टेबल, चटाई की व्यवस्था हो।
2. कक्षा की प्रतिदिन सफाई हो।
3. कक्षा हवादार एवं प्रकाशयुक्त हो।
4. कक्षा शिक्षकों एवं बच्चों के आपसी सहयोग से सजी हुई हो।
5. प्रत्येक कक्ष का नामकरण हो (एकलव्य, विवेकानंद आदि.....)
6. कक्षा के बाहर पैरदान रखा हो।
7. कमरे में डस्टबीन को उपलब्धता हो।
8. कक्षा के बाहर जूता रखने का व्यवस्थित एवं उचित प्रबंध हो।
9. कक्षा में आवश्यक सामग्री रखने हेतु आलमारी एवं रैक की व्यवस्था हो।

10. छात्रों की बैठक व्यवस्था परिवर्तनशील हो।
11. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उचित व्यवस्था हो।
12. कक्षा में साऊण्ड बॉक्स लगा हो जिसमें शैक्षिक गतिविधि कम्प्यूटर के माध्यम से जुड़ा हुआ हो।
13. अध्ययन कक्ष में दीवारों पर आमने सामने दो श्यामपट की व्यवस्था हो। श्यामपट का आकार 6/4 फीट का हो।
14. कक्षा में दर्पण, कंघी, नेलकटर एवं नेपकीन रखा हो।
15. कक्षा में शिक्षक व बच्चों द्वारा बनाये गये एवं प्रिंटेड शैक्षिक चार्ट लगा हो।
16. कक्षा के छत पर शैक्षिक चित्रकारी जैसे – सौर मण्डल एवं आकाशीय घटनाओं से संबंधित हो जिसमे रेडियम का उपयोग हो।
17. कक्षा के दीवारों का उपयोग शैक्षिक रूप से हो जैसे – कहानियाँ, कविता, पर्यावरण से संबंधित चित्र, बाहरी दीवार पर समय विभाग चक्र, आवश्यक जानकारी के चार्ट टंगे हों।
18. कक्षा में रनिंग बोर्ड MGML के तहत हो।
19. कक्षा में वालपेपर का प्रकाशन नियमित रूप से हो।
20. कक्षा में बच्चों का उपस्थिति पत्रक लगा हो।
21. कक्षा में बच्चों के बैठने के साथ सहायक सामग्री उपलब्ध हो।
22. कक्षा का फर्श टूटे–फूटे न हो। दीवार डिस्टेम्पर से पुताई किया हुआ हो।
23. कक्षा के दरवाजे का उपयोग गणितीय कोण के लिए हो।
24. कक्षा में प्रोजेक्टर हो।
25. अध्ययन कक्ष में बस्ता ले जाने की आवश्यकता नहीं हो।
26. पाठ्य सामग्री व्यवस्थित हो।
27. MGML सृजन कक्ष का निर्माण रैक, ट्रै, चटाई, लेडर समूह थाली व्यवस्थित एवं यथोचित स्थान पर लगी हो।
28. SRTC में लाइब्रेरी हो जहाँ बच्चे स्व–अध्ययन कर सकें।

केन्द्र के अभिलेखों का रखरखाव एवं संधारण की स्थिति :

(1) समस्त प्रकार केन्द्र के अभिलेखों का नियमित रूप से संधारण हो।

(2) समस्त अभिलेखों के संधारण हेतु जिम्मेदारी तय हो।

(3) भोजन संबंधी अभिलेख का भी संधारण नियमित रूप से हो।

(4) केन्द्र में उपस्थिति पंजी स्वास्थ्य पंजी, परीक्षा पंजी, निरीक्षण पंजी, आवक जावक पंजी, वित्तीय पंजी, भ्रमण पंजी, आगंतुक पंजी, दानदाता पंजी, पाठकान पंजी, कार्यक्रम पंजी, बैठक कार्यवाही पंजी, स्टॉक पंजी अनिवार्य रूप से हो।

पेय जल एवं शौचालय :

1. केन्द्र में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था एवं उसके सुव्यवस्थित देखरेख की स्थिति।
2. शौचालय की सुविधा बालक व बालिका हेतु अलग–अलग हो।
3. पेयजल एवं शौचालय की साफ–सफाई एवं सुरक्षा के लिए कर्त्तव्य निर्धारण हेतु बच्चों की समितियों का निर्माण कर किया जाना चाहिए।
4. शौचालय के बाहर दर्पण, वॉश बेसिन, साबुन, तौलिया की व्यवस्था हो।
5. शौचालय में टाईल्स लगा हुआ हो।

शैक्षिक प्रबंधन :

1. प्रक्रियाओं से कार्डों के द्वारा पढ़ाई की जावेगी।
2. विषय शिक्षक हेतु केन्द्र में आउट सोर्सींग की जाए।
3. पुस्तकालय निर्माण बच्चों के रूचि, स्तर, के अनुसार पुस्तकों का संकलन बच्चों के द्वारा स्वमेव संचालन किया जाए।
4. पुस्तक वाचन हेतु निश्चित समय निर्धारण किया जाए।

किचन शेड की साफ–सफाई मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था :

1. केन्द्र में किचन शेड धुंआ रहित हो।
2. सभी खाद्य सामग्री डिब्बों में बंद कर रखे गए हों।
3. सामान हेतु रैक बना हो।
4. किचन में डस्टबीन हो।

5. किचन में बर्तन धोने हेतु साफ जगह हो।

6. हाथ धोने एवं पानी भरने के लिए दो नल की व्यवस्था हो। स्वच्छ बर्तन में खाना परोसा जाता हों, खाना खाने का स्थान भी स्चच्छ हो।

कक्षा के बच्चों का स्वास्थ्यगत प्रबंधन एवं जागरूकता :

1. बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की जाँच अनुदेशकों/शिक्षकों के द्वारा समय–समय पर की जाती हो।

2. कम–से–कम तीन महीनों में एक बार स्वास्थ्य परीक्षण स्वास्थ्य विभाग के डॉक्टर/कार्यकर्त्ता द्वारा किया जावे।

3. बच्चों का हेल्थ चेक अप कार्ड बना हुआ हो एवं नियमित रूप से संधारित हो।

4. वजन मापक यंत्र एवं ऊंचाई मापक यंत्र की व्यवस्था हो।

5. तापमान यंत्र की व्यवस्था हो।

6. First Aids Box की व्यवस्था हो।

7. केन्द्र में कंघी, दर्पण, नेलकटर, तौलिया की व्यवस्था हो।

8. डंडेदार लोटे की व्यवस्था हो।

कक्षागत अन्य गतिविधियाँ :

1. केन्द्र में पाठ्य सहगामी गतिविधियों आयोजित होती हों, जिसमें सभी बच्चे भाग लेते हों।

2. छात्रों को अपना व्यक्तिगत हुनर को प्रदर्शन करने का एवं इसे संवारने के अवसर केन्द्र को मिलता हो।

3. विभिन्न महापुरूषों की जयंतियाँ मनाई जाती हों।

4. सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, प्रश्नोत्तरी/अंताक्षरी एवं चित्रकला का आयोजन करना।

5. नाचा, खेलकूद, योगा, व्यायाम नियमित हो।

6. साहित्यिक गतिविधि का आयोजन हो।

7. प्रत्येक केन्द्र में एक संगीत शिक्षक आऊट सोर्सिंग की जावे।

आप अपने SRTC के सुव्यवस्थित प्रबंधन के लिए कार्य योजना तैयार करें :

0000

11 भाषा का अर्थ और सीखने की प्रक्रिया

हम अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को सुनते हैं,जैसे– बादलों का गरजना, नदी का बहना, पत्तों का खड़कना, वाहनों का चलना आदि।

सोचिए : क्या इन ध्वनियों को हम भाषा कह सकते हैं?

इन ध्वनियों को हम भाषा नहीं कहते क्योंकि हम जानते हैं कि भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा एक प्राणी अपने समूह के अन्य प्राणी से अपने विचार भाव या इच्छा प्रकट कर सकते हैं। कीड़े–मकोड़े व पशु –पक्षी भी अपने भाव व्यक्त करते हैं। चींटी को यदि किसी स्थान पर भोजन का पता चले तो वह अपने समूह को सूचित कर देती है। मधुमक्खी भी बड़ी मात्रा में फूल होने की सूचना अपने समूह को देती है। चिड़ियाँ जोर–जोर से चहचहाकर अपने समूह को किसी खतरे की सूचना देती है। कुत्ते भी भौंक कर किसी के आने की सूचना देते है। इन उदाहरणों में प्राणियों द्वारा भाव अभिव्यक्त किये जाने की स्थिति है। क्या आप जानते हैं कि ये बातें भाषा के अन्तर्गत आती हैं? हर प्राणी की अपनी एक अलग भाषा होती है, जिसके माध्यम से वह अपने समूह से अपने विचार व्यक्त करते हैं। इसे मानवेत्तर भाषा कहा जा सकता है।

अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए मनुष्यों द्वारा विभिन्न माध्यम अपनाए जाते हैं। जैसे –

1. यातायात सिपाही के संकेत।
2. रास्ते पर चलने के संकेत।
3. वाहनों के हॉर्न।
4. शाला की घंटी।
5. रेलगाड़ी के लिए लाल, हरी झण्डियों आदि।

भाषा के व्यापक अर्थों में भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं, तथा विचारों को व्यक्त करते हैं, किन्तु सोचने और विचारों को व्यक्त करने के और भी कई ढंग होते हैं। हम जिस भाषा का अध्ययन और विश्लेषण करते हैं, वह इतना व्यापक नहीं है। स्पष्ट है कि हम भाषा के अंतर्गत उसी भाषा की चर्चा और अध्ययन कर रहे हैं, जो मनुष्य के वाणी से निकलती है और जिसका कोई अर्थ होता है। साथ ही उस अर्थ को सुनने वाला भी भली– भाँति समझ सकता हो यदि भाषा शब्द के शाब्दिक अर्थ को देखें तो हम पाते हैं

कि, भाषा शब्द संस्कृत की भाषा धातु से बना है, जिसका अर्थ है वाणी, अर्थात् भाषा का वाणी द्वारा व्यक्त होना आवश्यक है।

"भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों से भली– भाँति प्रकट कर सकता है, और दूसरों के विचारों को समझ सकता है।" इस परिभाषा के अनुसार विचारों का आदान–प्रदान भाषा में अनिवार्य रूप से होना चाहिए। स्पष्ट है कि मनुष्य के मुँह से निश्चित किये गये प्रयत्नों से जो सार्थक ध्वनि समूह निकालता है वह भाषा है। चूँकि प्रयत्न निश्चित किये गये हैं, अतः उसके अध्ययन और विश्लेषण की आवश्यकता भी भाषा का अनिवार्य तत्व है।

इस विवेचन से आप समझ ही गए होगें कि –

(1) भाषा ध्वनि समूह से व्यक्त होती है।

(2) भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जो निश्चित किये गये हैं।

(3) भाषा अभिव्यक्ति का साधन है।

(4) भाषा एक ही मानव समाज के विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम है।

अब तक हम भाषा के स्वरूप को भली भाँति समझ चुके हैं, आगे हिन्दी भाषा के संदर्भ में हम देखेंगे कि बच्चे भाषा सीखते कैसे हैं? बच्चे का भाषा से प्रथम साक्षात्कार परिवार से होता है। बच्चा भले ही भाषा न समझता हो, किन्तु माँ उससे कुछ न कुछ बातचीत करती रहती है। धीरे–धीरे वह सुनी हुई विभिन्न ध्वनियों में अन्तर करके उसके अर्थ को समझने लगता है। क्या कभी आपने यह सोचा है बच्चा सबसे पहले कौन से शब्द बोलता है। बच्चा सबसे पहले माँ द्वारा सुने गये शब्दो को अनुकरण करने का प्रयास करता है। वह, पानी को पा, माँ को मम्मा, दुध को दुदु आदि का उच्चारण करता है। वह अधिकांश भाव अस्पष्ट ध्वनि और अपने हाव– भाव द्वारा ही व्यक्त करता है। कुछ बड़ा होने पर बच्चा सरल निर्देशों का पालन करने लगता है। वह सुनकर समझता है। और फिर अनुकरण कर बोलने का प्रयास करता है। क्या कभी ध्यान दिया है कि परिवार के अतिरिक्त बच्चा और कहाँ से सीखता है? जब बच्चा बड़ा होता है तो वह अपने पास–पड़ोस के सम्पर्क में आता है। परिवेश के अन्य व्यक्तियों से भी वह शब्द सीखता है। धीरे–धीरे उसका शब्द भण्डार इतना बढ़ जाता है कि वह बोल– चाल की भाषा में कही गई हर बात, कहानी, कविता व निर्देशों को समझ सकता है। इस प्रकार उसकी भाषा का निरन्तर विकास होता रहता है।

हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था

इस संसार में विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ सुनने का अवसर आपको मिला होगा।

चिड़ियों का चह चहाना, बकरी का मिमियाना, शेर का दहाड़ना, गाय का रंभाना आदि ऐसी ध्वनियाँ है, जिससे ये प्राणी अपने भाव प्रगट करते हैं। मनुष्य भी अपने भाव प्रकट करने के लिए विभिन्न ध्वनियों का उपयोग करता है। इन ध्वनियों को भाषाई ध्वनि अथवा स्वर कहते हैं। इन ध्वनियों के मिलने से ही शब्द बनते हैं।

जैस :– ज् + अ+ल्+अ = जल

श् + आ+ल् +आ = शाला

ह+ इ+म+आ+ल्+अ+य+अ = हिमालय

उपर्युक्त उदाहरणों में देखिए कि किस प्रकार अनेक ध्वनियों के मिलने से शब्द बनता है। अब इस उदाहरण में रेखांकित शब्दों को देखिए –

जैसे अ, आ, इ

इन ध्वनियों का उच्चारण करके देखिए। आप पाएंगे कि इनके उच्चारण में कहीं कोई रूकावट नहीं होती इन्हें स्वर करते हैं। हिन्दी में स्वर ध्वनियाँ निम्नांकित है – अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ। एक स्वर ध्वनि अंग्रेजी से हिन्दी में आई है। इसे चिन्ह से प्रकट किया जाता है।

जैसे – डॉक्टर शब्द में अंकित है।

हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 है।

अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ = 11

अंग्रेजी से आगत स्वर की संख्या एक है।

ये स्वर ध्वनियाँ भी दो प्रकार की होती हैं:–

लघु स्वर और दीर्घ स्वर

लघु स्वर – अ,इ,उ,ऋ =4

दीर्घ स्वर – आ,ई,ऊ,ऐ,ओ,औ = 7

कुछ ध्वनियों के उच्चारण में कहीं न कहीं रूकावट पैदा होती है। यह रूकावट, कंठ, जिह्वा,दाँत और ओंठ के द्वारा भी हो सकती है।

प,क,ब,म,भ,का उच्चारण करके देखिए।

इसके उच्चारण में ओंठ रूकावट पैदा कर रहे हैं। अब श,ष,स, का उच्चारण कीजिए आप पायेगें कि जीभ और दाँत रूकावट पैदा कर रहे हैं। अब ऐसी ध्वनियाँ जिनके उच्चारण

से रूकावट पैदा होती है, व्यंजन ध्वनियाँ कहलाती हैं। व्यंजनों को 6 वर्ग में बाँटा जाता है। इसका सूत्र है – कचट तपय

इस सूत्र के अनुसार व्यजंनों की संख्या इस प्रकार है –

क वर्ग – क, ख, ग, घ, ङ = 05

च वर्ग – च, छ, ज, झ, ञ = 05

ट वर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण = 05

त वर्ग – त, थ, द, ध, न = 05

प वर्ग – प, फ, ब, भ, म, = 05

य वर्ग – य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ = 11

इस प्रकार हिन्दी में व्यंजनों की कुल संख्या 36 है।

उर्दू भाषा से भी कुछ व्यंजन ध्वनियों को हिन्दी में सम्मिलित किया गया है इन ध्वनियों को नुक्ता चिन्ह लगाकर प्रकट किया गया है –

क़, ख़, ग़, ज़, फ़

ध्यान रखिए कि स्वरों के बिना व्यंजन का उच्चारण संभव नहीं है। अतः जब स्वर ध्वनि किसी व्यंजन ध्वनि के साथ मिलती है, तो इसका रूप बदल जाता है।

जैसे –

क् + आ = का

कृ + इ = कि

क् + उ = कु

क + ए = के

स्वर के इस बदले हुए रूप को मात्राओं द्वारा प्रकट किया जाता है। मात्राओं की संख्या ग्यारह है।

उदाहरण के लिए 'क' व्यंजन में विभिन्न मात्राओं के जुड़ने से इनका स्वरूप इस प्रकार होगा

क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, कं, (कं, कः) मात्राओं से जुड़े व्यंजनों के इस रूप को ही बारह खड़ी कहते हैं।

'अ' स्वर की मात्रा प्रयुक्त न होने पर व्यंजन के नीचे एक आड़ी लकीर लगाकर लिखने का

नियम कहलाता है जैसे – जिह्वा में 'ह' के नीचे हलन्त है।

इसी प्रकार दिए शब्द में हलन्त का प्रयोग देखिए – जैसे विद्वान। क्ष,त्र, और ज्ञ संयुक्त व्यंजन है, क्योंकि इनका उच्चारण दो व्यंजनो के साथ मिलकर होता है जैसे –

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

हिन्दी के स्वरों के मूलभूत गुण हैं –

1. हिन्दी में हृस्व तथा दीर्घ स्वर होते हैं, लेकिन उनमें एकरूपता नहीं होती है। उदाहरण के लिए 'अ' तथा 'इ' हृस्व भी हैं और दीर्घ भी।
2. हिन्दी की स्वर ध्वनियाँ जब नासिका मार्ग से उच्चारित होती हैं। तब वे अनुनासिक होती है। उनके ऊपर "ँ" चन्द्र बिन्दु का चिन्ह अंकित किया जाता है। जैसे – आँख, आँचल
3. 'य' और 'व' अर्धस्वर है। इनका उच्चारण कभी–कभी व्यंजनों की तरह और कभी स्वर की तरह किया जाता है। इनके उच्चारण में उच्चारण अवयव पहले 'इ' और 'ऊ' की स्थिति में होते हैं तथा बाद में परवर्ती स्वर या व्यंजन की स्थिति में हो जाते हैं।
4. ऐ और औ को संध्यक्षर कहा जाता है। इनका उच्चारण कुछ क्षेत्रों में एक स्वर की तरह तथा क्षेत्रों में एक स्वर की तरह तथा कुछ क्षेत्रों में दो स्वरों के साथ सम्मिलित रूप में किया जाता है।

जैसे –

एक स्वर के रूप में	दो स्वरों के रूप में
औरत	अऊरत
कौआ	कऊआ
ऐसा	एइसा
पैसा	पइसा

स्वर व व्यंजन में अंतर :

ध्वनियों का उच्चारण वाग्य यंत्र के विभिन्न अवयवों से होता है। वाग्यंत्र में निम्नांकित अवयव होते हैं। जैसे –

1. ओंठ
2. दाँत
3. वर्त्स्य
4. कठोर तालु
5. कोमल तालु
6. अलि जिह्वा या कौवा
7. जिह्वा की नोंक
8. जिह्वा फलक
9. जिह्वाग्र
10.जिह्वा पश्च
11.जिह्वाग्र
12.स्वर यंत्रावरण
13. स्वर तंत्रियाँ
14.श्वास नालिका
15. नासिका विवर

भाषाई ध्वनियों का उच्चारण कैसे होता है?

वाग्यंत्र का सबसे महत्वपूर्ण अवयव स्वर यंत्र (Vocal Cood) है। इसे ग्रामीण भाषा में टेंटुआ कहते हैं। यह श्वास नलिका के ऊपरी भाग में अभिकाकल (स्वर यंत्रावरण) से कुछ नीचे स्थित है।

स्वर यंत्र में पतली झिल्ली के बने दो लचीले परदे होते हैं। उन्हे स्वर तंत्री कहते हैं तंत्रियों के पास आने और अलग हटने से ही ध्वनियों का उच्चारण होता है।

फेफड़े में आने वाली हवा, स्वर यंत्र से गुजरने के बाद ही ध्वनि का रूप धारण करती है। कुछ ध्वनियाँ बिना किसी बाधा के उच्चारित होती हैं ये ही स्वर है। जो ध्वनियाँ वाग्यंत्र के विभिन्न अवयवों की सहायता से (जैसे जिद्वा, तालू, मूर्धा, दाँत, ओठों के) उच्चारित होती है, वे व्यंजन ध्वनियाँ है।हिन्दी में कुछ ध्वनियों का उच्चारण कठिन है। इनके सही उच्चारण के लिए यह आवश्यक है कि इनके उच्चारण स्थान और उच्चारण प्रयत्नों की जानकारी शिक्षकों को हो। जैसे– निश्नुनासिक और अनुनासिक।

व्यंजनों के जिन पाँच वर्गों आदि का उल्लेख ऊपर किया गया है उनमें प्रत्येक वर्ग में चार ध्वनियों का मेल जैसे क,ख,ग,घ, का उच्चारण मुख विवर से होता है पाँचवे वर्ग ङ,ञ,ग,न,ण,का उच्चारण नासिका विवर से होता है। इसलिए व्यंजनों के चार ध्वनियाँ निश्नुनासिक है और अंतिम ध्वनियाँ अनुनासिक।

न,ल,र,स,ज, वर्ण वर्त्स्य है इनका उच्चारण मसूड़े और जिह्वा के अगले भाग की सहायता से किया जाता है।

उ और ठ के उच्चारण में जीभ ऊपर उठकर झटके से नीचे आती है।

च,छ,ज,झ, का उच्चारण जीभ का अगला भाग तालू से लगा कर किया जाता है। इसलिये इन्हें तालव्य व्यंजन कहते हैं।

त,थ,द,ध, का उच्चारण दाँत की सहायता से होता है। इनके उच्चारण में जीभ का अगला भाग दाँतो से स्पर्श करता है।

प,फ,ब,भ, का उच्चारण दोनों ओंठों की सहायता से किया जाता है।

व और फ का उच्चारण ऊपर के दाँत और नीचे के ओंठ की सहायता से होता है।

अक्सर श,ष,और स के उच्चारण में गल्तियाँ होती है। अतः ध्यान रखिये कि स का उच्चारण जीभ के अगले भाग के दाँतो मे स्पर्श से होता है। इसलिये इसे दंत्य कहते हैं।

ष का उच्चारण ऊपरी जबड़े के मध्य भाग से जिसे मूर्धा कहते हैं कि सहायता से होता है। इसे मूर्धन्य ष कहते हैं।

श का उच्चारण जीभ के तालू से स्पर्श करने से होता है। अतः इसे तालव्य श कहा जाता है। स्वर एवं व्यंजनों के स्वतंत्र उच्चारण से अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं होता किन्तु जब अनेक ध्वनियां मिलकर शब्द बनाती हैं और शब्दों का वाक्य के रूप प्रयोग किया जाता है तब ध्वनियों की उच्चारण प्रक्रिया का अर्थ पर भी प्रभाव पड़ने लगता है। वाक्य में अर्थ को प्रभावित करने वाली ध्वनियों को खण्डेतर ध्वनियाँ कहा जाता है। इनकी संख्या पाँच हैं।

(1) अनुनासिकता

जब वायु मुख विवर के साथ–साथ नासारंध्र से भी निकलती है तब उच्चारण में अनुनासिकता आ जाती है। यह अर्थ भेदक होती हैं। यथा–कहीं–कहीं, कहां–कहां, भाग–भाँग, सास–साँस। अनुनासिकता को चंद्रबिन्दु (ँ) द्वारा प्रदर्शित करते हैं, किन्तु मात्रा युक्त वर्णों पर केवल बिन्दु (ं) ही लगाया जाता है।

(2) बलाघात

ध्वनि, अक्षर, शब्द या वाक्यों का उच्चारण बल प्रयोग द्वारा संभव है किन्तु यहां तात्पर्य किसी विशेष शब्द वाक्यांश या वाक्य पर बल का आघात करने से है। इसमें अर्थभेद होता है। यथा – राम ने रावण को जान से मारा

यह एक वाक्य है अब दूसरे उच्चारण में बलाघात द्वारा अर्थभेद करना है।

(1) राम ने रावण को बाण से मारा।

(2) राम ने रावण को बाण से मारा।

(3) राम ने रावण को बाण से मारा ।

यहाँ बलाघात बोलने अथवा उच्चारण प्रक्रिया पर निर्भर करता है।

(3) अनुतान

स्वर लहरों के उतार–चढ़ाव या आरोह–अवरोह के क्रम को अनुतान कहते हैं। इसी के आधार पर विभिन्न भाषा–भाषियों की पहचान हो जाती है। सामान्य हिन्दी में आश्चर्य, प्रश्न, अनिच्छा आशा आदि के भाव की आ पाते हैं।

उदाहरण –

सामान्य कथन – कमल खिल गया।

प्रश्न कथन – कमल खिल गया?

आश्चर्य कथन – कमल खिल गया!

(4) दीर्घता

किसी ध्वनि के उच्चारण में जितना समय लगता है वहीं उसकी दीर्घता कहलाती है। इसे मात्रा काल भी कहते हैं।

(5) विवृत्ति

बोलने में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि का उच्चारण होता है। वक्ता कभी दो ध्वनि के एक ही साथ बोल देता है और कभी दो ध्वनि के मध्य थोड़ा अवकाश, विराम या मौन रहकर समय लगा लेता है।

इसे ही विराम कहा जाता है। विवृत्ति सार्थक होती है। इसलिये भाषा विज्ञान में विवृत्ति को + चिन्ह द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

तुम्हारे – तुम + हारे

लड़ाई – लड़ + आई

पीलिया – पी + लिया

खाजा – खा + जा

गतिविधि आधारित शिक्षण क्यों और कैसे ?

प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में गतिविधियों का समावेश नहीं करते। इससे शिक्षण नीरस व बोझिल हो जाती है। कई बार शिक्षक किसी

विषय–वस्तु को सामान्य ढंग से समझा देते हैं जिससे विषयगत अवधारणा स्पष्ट नहीं हो पाती और बालक अपेक्षित दक्षता को प्राप्त कर पाते हैं।

बहुधा शिक्षक गतिविधि व उसके उपयोग को समझ नहीं पाते। इसीलिए शिक्षक भाषा को विषय–वस्तु तक ही सीमित रह जाते हैं। यदि इसके लिए गतिविधि का सहारा लिया जाए तो बच्चे सीखने में रूचिलेंगे और उस कठिन विषय वस्तु को भी सहज रूप से समझ कर सीख पायेंगे।

चर्चा करें :– निम्नांकित बिन्दुओं को ओ.एच.पी/एल.सी.डी. में दिखाकर चर्चा करें –

गतिविधि आधारित शिक्षण क्यों?

(1) गतिविधियों में बच्चे शारीरिक व मानसिक रूप से सक्रिय होते हैं।

(2) बच्चे कार्य करते हुए प्रत्यक्ष रूप से समस्या के साथ जुड़कर सीखते हैं।

(3) गतिविधियों के माध्यम से स्वतंत्र रूप से सीखने के अवसर मिलते हैं।

(4) सभी कौशलों का विकास होता है।

(5) गतिविधियाँ रोचक होती हैं, अतः बच्चों को गतिविधियों के साथ सीखने में मजा आता है।

गतिविधि क्या है?

प्रतिभागियों की चर्चा में आए हुए बिन्दुओं को श्यामपट पर लिखें और उस पर बातचीत करें।

ध्यान रहे चर्चा से गतिविधि को प्रतिभागी समझ सकें।

प्राथमिक स्तर पर गतिविधियों की आवश्यकता क्यों?

(1) बच्चों का स्वभाव ही गतिविधि प्रिय होता है।

(2) गतिविधियों में करके सीखने के अवसर होते हैं।

(3) गतिविधियों में ध्यान अधिक समय तक लगा रहता है।

(4) गतिविधियों को करने में वह मजा लेते हैं।

(5) गतिविधियों से सीखना रोचक और आनंददायी होता है।

प्राथमिक स्तर पर गतिविधियाँ कैसी होनी चाहिए?

(1) प्राथमिक स्तर में गतिविधियाँ मनोरंजक और आनंदकारी हो।

(2) गतिविधियों में सृजनात्मकता हो।

(3) गतिविधियों में स्व–अधिगम के अवसर होने चाहिए।

(4) गतिविधियों का संबंध आसपास की क्रियाओं से हो।

(5) गतिविधियों में बच्चों की सहभागिता हो।

(6) गतिविधियाँ जिज्ञासा बढ़ाने वाली होनी चाहिए।

(7) गतिविधियाँ रूचिकर होनी चाहिए।

(8) गतिविधियाँ स्वाभाविक होनी चाहिए।

गतिविधियाँ कराते समय ध्यान में रखने योग्य बातें

(1) गतिविधियों से उद्देश्य की पूर्ति होनी चाहिए।

(2) गतिविधियों में सभी बच्चे संलग्न रहें, अवसर की संभावना हो।

(3) गतिविधियों बच्चों के स्तर की हो।

(4) गतिविधियों में आवश्यकतानुसार सहायक सामग्री का उपयोग हो।

(5) गतिविधियाँ जोखिम भरी न हो।

भाषा सिखाने की विधियाँ :–

छत्तीसगढ़ में भाषा/बोली की विविधता को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि हिन्दी का शिक्षण प्रारंभ करने के पूर्व बालक को उसकी अपनी बोली में मुखर बनाया जाए।

(1) उसे कक्षा में अपने किसी परिचित वस्तु या घटना का मौखिक विवरण करने का अवसर दें।

(2) उसे कुछ लोकगीत, लोककथा सुनने–सुनाने का अवसर दें।

(3) उस क्षेत्र की बोली में बाल साहित्य का विकास कर आनन्द की अनुभूति कराएँ।

(4) उसे परिवेशीय वस्तुओं के चित्र देखकर उनका नाम लिखने एवं वर्णन अपनी बोली में करने के अवसर दें।

(5) चित्रों पर बातचीत करने कहानी एवं कविता लिखने के अवसर दें।

(6) औपचारिक बातचीत के द्वारा हिन्दी के कुछ सरल वाक्य सुनकर समझने एवं बोलने की क्षमता विकसित करें।

(7) हिन्दी के कुछ बालगीत, कहानियां, चुटकुले, पहेलियां आदि उन्हें सुनने एंव दुहराने के अवसर प्रदान करें।

हिन्दी के शब्द भण्डार की वृद्धि एवं कुछ सरल वाक्य बोलने की क्षमता विकास के प्रयासों के साथ हिन्दी शिक्षण प्रारंभ करें।

अंग्रेजी शिक्षण

अंग्रेजी कैसे सीखाएँ –

1. अंग्रेजी एक भाषा है। जिसमें सीखने का क्रम है–सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना।
2. कक्षा 1ली व 2री में सीखने के क्रम में सुनने व बोलने पर जोर दिया गया है।
3. अंग्रेजी विषय में केवल Conversation (चर्चा) ही करें।
4. सबसे पहले शिक्षक कार्ड को पढ़ें एवं उसमें दिए गए Action को करते हुए बच्चों को कविता सुनाएँ
5. बच्चों को Action करते हुए कविता दोहराने को कहें अर्थात् प्रत्येक शब्द को बच्चा बोलेगा एवं करेगा।
6. अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी मायने नहीं बताएं।

   जैसे :– Eye मतलब आँख न बताकर, Eye बोलें एवं आँख पर उँगली रखें।
7. शिक्षक सामान्य बोलचाल में अंग्रेजी के शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग करें।
8. बच्चों को अंग्रेजी में बोलकर छोटे–छोटे निर्देश दें। साथ ही उन्हें भी अंग्रेजी बोलने का अवसर प्रदान करें।
9. कक्षा 1 व 2 के बच्चों से Spelling न पूछें।
10. 1 ली एवं 2 री में केवल मौखिक मूल्यांकन किया जाए।

गणित शिक्षण

उद्देश्य :

1. कार्ड की एप्रोच (कार्ड में विषय के प्रस्तुतीकरण का ढंग) को समझने में मदद करना।
2. कार्ड पर कैसे काम किया जाता है, ये समझाने में मदद करना।

नोट :इन सभी पृष्ठों में जोड़ की अवधारणा पर काम किया गया है। एक ही अवधारणा लेने का उद्देश्य यह है कि सहभागी उस उदाहरण के माध्यम से कार्ड की एप्रोच को समझ पाएँ व इसे कार्ड में दी दूसरी अवधारणाओं पर भी लागू करके देख सकें।

प्रश्न –

1. जोड़े की अवधारणा का परिचय देते समय क्या प्रक्रिया अपनायी गई है?
2. जोड़ सिखाने के लिए किन–किन पूर्व अवधारणाओं की जरूरत पड़ेगी?
3. हासिल का जोड़ सिखाते समय क्या प्रक्रिया अपनायी गई है?
4. जोड़ की अवधारणा पर आगे बढ़ते हुए ठोस चीजों को क्रमशः क्यों छोड़ दिया गया है?
5. ''बच्चे स्वयं समझकर काम कर सकें'' जोड़ के इस अंश में ऐसे अवसर कहाँ–कहाँ पर हैं?

नोट समूह चर्चा के दौरान प्रशिक्षक समूहों में जाकर चर्चा को सही दिशा देने में मदद करें।

प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा

पूर्व में उपसमूहों में किए काम में से किन्हीं दो उपसमूहों के काम को पूरे समूह के समक्ष सहभागियों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाए व उस पर चर्चा की जाए। प्रशिक्षक द्वारा अंत में चर्चा का समेकन इन बिंदुओं को ध्यान में रखकर किया जाए –

1. चूँकि इस स्तर पर सीधे संख्याओं के साथ काम करने में दिक्कत हो सकती है, इसलिए यहाँ पर ठोस चीजों से अवधारणा सिखाने की शुरूआत की गई है, जो बच्चों को जोड़ की अमूर्त अवधारणा सीखने में मदद करती है।
2. अवधारणा के सीखने का स्तर ठोस चीजों तक ही सीमित नहीं है क्योंकि बल्कि इससे आगे के स्तर पर संख्याओं के साथ भी संक्रिया पर काम किया गया है ताकि बच्चे ठोस चीजों तक बँधकर न रहें।
3. गणित की अवधारणाओं को परिस्थिति व बच्चों के अनुभव से जोड़ा गया है ताकि बच्चे गणित को अपने जीवन से जोड़कर देख सकें।
4. गणित की अवधारणाओं को बच्चे सहज व रोचक तरीके से सीख सकें, उसे जीवन से जोड़ पाएँ इसके लिए कहानियों में अलग–अलग परिस्थितियों का उपयोग किया गया है।
5. बच्चे खुद समझकर काम कर सकें, इसके अवसर निरंतर उपलब्ध कराए गए हैं ताकि बच्चे नया सीखने में पुराने सीखे का स्वयं उपयोग कर पाएँ।
6. गणित की अवधारणाएँ एक क्रम में आगे बढ़ती है। इसलिए उन्हें इसी क्रम से सीखा जाना चाहिए। जैसे– जोड़ की अवधारणा सीखने से पहले संख्याओं की समझ जरूरी है इसलिए गणित में नया सीखने में पूर्व अवधारणाओं का महत्व है।

कथन

कथन 1

सीखने की प्रारंभिक स्थिति में अमूर्त अवधारणाओं को व्यक्त करने, संक्रियाओं को समझने तथा आस–पास की छोटी–छोटी समस्याओं को हल करने के लिए बच्चों को मूर्त (ठोस) वस्तुओं की मदद की आवश्यकता होती है किन्तु क्रमशः इन पर निर्भरता व इनकी आवश्यकता कम होती है।

कथन 2

धीरे–धीरे बच्चे तर्क पूर्ण ढंग से सोचने लगते हैं। उनमें अमूर्त चिंतन की क्षमता बढ़ने लगती है। वे व्यावहारिक समस्याओं को अमूर्तै धरातल पर ले जाकर हल करने तथा पुनः उन्हें व्यावहारिक रूप से व्यक्त करने में समर्थ होने लगते हैं।

कथन 3

गणित अध्यापन के समय बच्चों को सोचने और स्वयं कार्य करने के अधिक से अधिक मौके दिए जाए। ऐसा तभी होगा, जब किसी समस्या को हल करके बताने के बजाए, उसे हल करने की दिशा में आगे बढ़ने में बच्चों को सहायता पहुँचाई जाए।

कथन 4

किसी भी नई अवधारणा को सिखाने के क्रम में बच्चा ठोस वस्तुओं के माध्यम से स्वयं कार्य करें। संक्रियाओं को समझें और क्रमशः अमूर्त की ओर बढ़ें।

कथन 5

गणित की अमूर्त प्रकृति के लिए उसका कहानियों व संदर्भों में गुँथा होना आवश्यक है।

गणित शिक्षण के दौरान ध्यान देने योग्त बातें :–

1. कोई भी अवधारणा सिखाते समय यथा संभव ठोस चीजों का इस्तेमाल करना चाहिए।
2. साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे ठोस चीजों से बँधकर न रह जाए। अवधारणा पर आगे बढ़ते हुए धीरे–धीरे ठोस चीजों अथवा केवल चित्रों को हटाना चाहिए तथा बच्चों को संख्याओं के साथ मौखिक एवं लिखित अभ्यास करने की ओर अग्रसर करना चाहिए।
3. गणित में काम करते हुए गणित को व्यावहारिक जिंदगी से जोड़ने के निरंतर अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। ये अवसर नई अवधारणा सिखाते समय भी तथा अवधारणा सीखने के बाद व्यावहारिक परिस्थितियों में उपयोग के रूप में हो सकते हैं।
4. बच्चों को अवधारणाओं के पीछे निहित तर्क को समझने के अवसर भी दिए जाने चाहिए। जैसे– गुणा का मतलब, बार–बार जोड़ना होता है। भाग सतत् घटाने की प्रक्रिया है आदि।
5. गणित में किसी समस्या को हल करने के अलग–अलग तरीके हो सकते हैं। इस ओर भी गणित शिक्षण के समय ध्यान रखना चाहिए।

6. बच्चों की गलतियों को उनकी कमजोरी के रूप में न लेकर सीखने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में लेना चाहिए। बच्चों की गलतियाँ शिक्षक को यह समझने में मदद कर सकती हैं कि उन्हें कहाँ दिक्कत आ रही है।

7. गणित पर काम करते समय बच्चों को आपस में बातचीत करने के अवसर भी दिए जाएँ जिसमें वह अपने काम के पीछे कारण को बता पाएँ व उसमें निहित तर्क को बता सकें। उन अवधारणाओं व प्रक्रियाओं को अपने शब्दों में परिभाषित करने की कोशिश करें।

8. बच्चों को अवधारणा सीखने के बाद अधिक से अधिक अवसर खुद काम करने को देने चाहिए जिससे अवधारणा से संबंधित उसकी समझ पुख्ता हो सके।

9. कोई भी नई अवधारणा सीखते समय यह देख लेना चाहिए क उससे संबंधित पूर्व की अवधारणाओं को बच्चे समझ गए हैं या नहीं अन्यथा आगे की अवधारणा समझने में उन्हें दिक्कत हो सकती है।

10. गणित में काम करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे गणित को ऐसा विषय ना समझे जिसमें उन्हें पुराने, कठिन व जटिल प्रश्नों के उत्तरों को बिना समझे एल्गोरिदम लगाकर ढूँढ़ना पड़ता है। बल्कि इसकी जगह वे यह सोचें कि गणित ऐसा विषय है, जो उन्हें छानबीन करने के अवसर प्रदान करता है।

11. गणित पर काम करते समय बच्चों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ जिसमें वे अपने लिए और दोस्तों के लिए नई समस्याएँ बना पाएँ।

पर्यावरण शिक्षण

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया रोचक और संपूर्ण कैसे बने? इस पर सतत् प्रयास हो रहे हैं? बचपन से ही बच्चे अपने आस–पास के वातावरण वहाँ रहने वाले लोगों, जीव–जंतु, नियम कायदों आदि का अवलोकन करते रहते हैं और इन सब के साथ संबंध बनाना शुरू कर देते हैं। विद्यालय और घर के आस–पास उन्हें अक्सर अकेले या समूह में कुछ खोजबीन करते हुए देखा जा सकता है। आस–पास की चीजों और घटनाओं को बहुत गौर से देखते हैं, उनके गुणों की परख करते हैं, एक चीज का दूसरी से मिलान करते हैं, उनमें समानता तथा अंतर देखते हैं। वे चीजों के समूह भी बनाते हैं। समूहों को तोड़ते हैं और फिर से नए समूह बना लेते हैं। उन्हें एक पूरी वस्तु को अलग–अलग भागों में तोड़ने और अलग–अलग चीजों को मिलाकर उनको एक नया स्वरूप देने में मज़ा आता है।

SRTC के अंतर्गत MGML के कार्डों में निम्न तरीके से पर्यावरण शिक्षण दिया जाता है।

सर्वेक्षण कार्ड :

सर्वेक्षण कार्ड में विभिन्न तरीकों की जानकारी होती है जिसे बच्चों को स्वयं इकट्ठा करना होता है। बच्चे समुदाय के बीच जाते हैं चर्चा करते हैं और विभिन्न जानकारियाँ का संकलन करते हैं। इस प्रकार सर्वेक्षण के माध्यम से बच्चे बातचीत करके अपनी समझ को बढ़ाते हैं और परिवेश के साथ अंतक्रिया करते हुए समझते हैं।

2. अवधारणा कार्ड :

बच्चों द्वारा संकलित जानकारियाँ को शिक्षक व्यवस्थित तरीके से बच्चों को सिखाते है। उस विषय वस्तु पर शिक्षक बच्चों को सोच व समझ को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। इस तरीके से शिक्षक बच्चों में वैज्ञानिक चिंतन डालते हैं। वैज्ञानिक चिंतन और तर्क शक्ति का विकास करते हैं।

3. चर्चा कार्ड :

इस कार्ड में विषय वस्तु से संबंधित विभिन्न जानकारियाँ जैसे– उपयोगिता, लाभ, हानि मानव जीवन पर प्रभाव आदि बिंदुओं पर बच्चे एक–दूसरे से चर्चा करके अपनी समझ बढ़ाते हैं।

4. संकलन और वर्गीकरण :

अब बच्चे स्वयं विभिन्न आधारों का चयन कर अपने द्वारा लाई गई विषय पर आधारित पूरी जानकारी को संकलित व वर्गीकरण करते हैं। इसमें उनमें क्रमिक सोच तार्किक चिंतन और वैज्ञानिक दृष्टि कोण का विकास होता है।

00000

जब कोई मिशन प्रगति पर हो तो कुछ न कुछ समस्याएँ अथवा असफलताएँ सामने आएँगी ही, किन्तु असफलाताओं के कार्यक्रम बाधित नहीं होना चाहिए। लीडर को उस समस्या पर नियंत्रण रखना होता है, उसका अंत करना होता है तथा सफलता की दिशा में टीम का नेतृत्व करना होता ।।

12 स्तर, आयु, शिक्षण

उद्देश्य :–

(1) केन्द्रों में निर्धारित आयु योग्यता के बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराना।

(2) अलग–अलग उम्र के बच्चों की आवश्यकता को पहचानना।

(3) स्तर को पहचानना एवं स्तरानुरूप शिक्षण सुनिश्चित करना।

(4) अलग–अलग आयु के बच्चों की गति अलग–अलग होती है उनके गति का सम्मान करना और गति आधारित शिक्षा व्यवस्था करना।

शिक्षण विधि

प्रश्नोत्तर विधि/चर्चा परिचर्चा/प्रशिक्षक अनुदेशक निम्न प्रश्न पूछेगें व जवाब को श्यामपट पर लिखेगें।

	प्रश्न	उत्तर
1.	SRTC में किस आयु वर्ग के बच्चो को प्रवेश देता है?	6–14
2.	मान लो किसी कक्षा में 10 बच्चे हैं हाँ या नहीं तो सभी बच्चे का स्तर एक ही होगा	
3.	नहीं तो क्यों?	
4.	अलग–अलग कक्षा, अलग–अलग स्तर के बच्चों को एक ही कक्षा में बैठाकर अध्ययन कराना क्या आसान कार्य है?	
5.	आपको ऐसे बच्चों को पढ़ाने में क्या–क्या दिक्कतें हो सकती हैं?	
6.	क्या आप इन दिक्कतों से उभरना चाहते हैं?	
7.	क्या आपके दिमाग में ऐसी शिक्षण पद्धति है जो विभिन्न आयु, स्तर के बच्चों को एक साथ शिक्षा उपलब्ध करा सकें।	

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर एवं चर्चा में से उचित एवं सारगर्भित उत्तरों को और अधिक स्पष्ट करते हुए निम्न बातों पर विशेष चर्चा करावें।

1. कक्षा पहली 1 से 5 वीं तक के बच्चों को MGML पद्धति के अनुसार कार्डो से अध्ययन कराना है।

2. जितने बच्चे उतने स्तर के होंगे अतः प्रत्येक बच्चे को उसके स्तर के अनुसार शिक्षा उसका अधिकार है। अतः MGML शिक्षण पद्धति इसकी पूर्ति करता है।

3. जितने बच्चे उतने गति से सीखने की क्षमता होती है तीव्र गति सीखने वाले बच्चों को नये–नये पाठ्यवस्तु चाहिए धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को दक्षता हासिल करने के लिए पर्याप्त समय चाहिए। इन आवश्यकताओं को उपलब्ध कराना हमारी आवश्यकता है। इसे हम MGML प्रणाली से पूरा कर सकते हैं।

4. सीखने के अनेक माध्यम होते हैं जैसे –खेल से, चर्चा से, अनुकरण से, नकल से अभिनय से, बात–चीत से, सर्वे से, अवलोकन, गलती से सहयोग से सीखते हैं। सीखने के इस अवसरों को शिक्षा में शामिल करके बच्चों को आसानी से सिखाया जाता है। MGML इन माध्यमों को पूरा करता है।

5. अकेले या व्यक्तिगत रूप से रहने पर सीखने की गति प्रायः कम हो जाती है। अतः एक दूसरे के साथ रहने समूहों में कार्य करने से मनुष्य स्थायी रूप से सीख पाते हैं।

6. बच्चे विभिन्न आयु समुदाय हो सकते हैं। उनमें शारीरिक, लैगिंग, भौतिक विभिन्नताएँ भी होती हैं। इसके बावजूद प्रत्येक बच्चे को सीखने का अधिकार है। अतः MGML इस अधिकार को अनिवार्यता से उपलब्ध करता है।

00000

---

1 अंधकार को क्यों धिक्कारें,
अच्छा हो एक दीप जलाएँ।।

2 पढ़ने योग्य लिखा जाए, उससे लख गुणा
बेहतर यह है कि लिखने योग्य किया जाए।

---

13 MGML

कक्षा का विभाजन

SRTC शासन की स्थाई व्यवस्था नहीं है। इसमें पर्याप्त संसाधन, भवन, शिक्षण सामग्री की कल्पना नहीं की जा सकती। चूंकि संसाधनों की कमी से उद्देश्यों की पूर्ति होने में अनेक कठिनाईयों का सामना करता पड़ता है। परन्तु दृढ़ इच्छा शक्ति, कार्य के प्रति रूचि, लगन, समर्पण एवं परिश्रम से बड़ी से बड़ी कठिनाईयों को दूर कर लिया जाता है। आपको SRTC संचालन में निम्नलिखित समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। हमने समस्याओं को सुलझाने का तरीका मात्र सुझाया है। आप अपने विवेक एवं चतुराई से इन समस्याओं की समाधान खोज सकते हैं।

प्र.1. निर्धारित संख्या से अधिक छात्र हैं, तो अध्यापन कार्य कैसे करें ?

उ. MGML शिक्षण प्रक्रिया अनुसार आदर्श कक्षा के लिये 1 कक्षा में 20 बच्चे होने चाहिए। 20 से 25 बच्चों को एक साथ रखकर अनुदेशक सभी विषयों की सुविधानुसार कालखण्डों में अध्यापन करवाता है। परन्तु जहां 25 से अधिक बच्चों की एक कक्षा में अध्यापन कार्य सरलता से नहीं हो पाती। ऐसे केन्द्रों में बच्चों को दो या दो अधिक कक्षाओं में बांटना चाहिये। बच्चों को कक्षा में बाँटते समय निम्न बातों का ध्यान रखें–

1. प्रत्येक समूहों में सभी स्तर के बच्चे होने चाहिए।
2. प्रत्येक समूह में सभी आयु वर्ग के बच्चे होने चाहिए।
3. सभी समूहों में बालक–बालिका की संख्या समान होना चाहिए।
4. सभी समूहों में सभी गति स्तर से सीखने वाले बच्चे होना चाहिए।
5. व्यक्तिगत कलाओं से संपन्न बच्चे की सभी समूहों मे होने चाहिये

उपरोक्तानुसार बच्चों को कक्षाओं में बांटने पश्चात् जितने समूह बनते हैं, उतने स्थानों पर बैठक व्यवस्था होनी चाहिये। यदि बच्चों को दो भागों में बांटते हैं, तो एक कमरा में एक विषय व दूसरे कमरा में दो विषयों के पाठ्य सामग्री को रैक में व्यवस्थित करना चाहिये। अब बच्चों को कालखण्ड अनुसार प्रत्येक विषयों का बारी–बारी अध्यापन कराना चाहिये।

प्र.2 **NRTC** में मात्र एक कमरा है और 25 से अधिक बच्चे है तो अध्यापन कैसे?

उ. ऊपर बताए अनुसार बच्चों को दो भागों में बाँट ले। जिसमें से कमरा में 1 विषय की अध्यापन व्यवस्था कर ले। व दूसरे कक्ष के लिये बरामदा या पेड़ की छाँव या जन

सहयोग से शैड का निर्माण करा लें जिसमें दूसरे विषय की अध्ययन व्यवस्था कर लेवें। पेड़ की छांव में अध्ययन कराते समय पाली समूह एवं लेडर चिपकाने के लिये लकड़ी की खूंटे गड़ाये जा सकते हैं।

प्र.3 भवन विहिन या अस्थाई भवन में साज–सज्जा कैसे करें?

उ. NRTC के कुछ केन्द्र ऐसे भी हो सकते हैं, जहां एक ही कमरे का उपयोग आवास एवं अध्यापन के लिये होगा। ऐसे केन्द्रों में बच्चों द्वारा बनाई गई सामग्री, कहानी, कविता को लटकाने के लिये तार की जाली को दीवार के किनारे चारों ओर लगाना चाहिये।

भू–स्तर श्यामपट के स्थान पर बच्चों से स्लेट का उपयोग करवाना चाहिये। बिल्लस बोर्ड को छायादार स्थान जैसे पेड़ के नीचे बनवाया जाना चाहिये।

प्र.4 शाला से धीमी गति वाले बच्चों का **SRTC** में प्रवेश कैसे दिलाएंगे?

1. शाला कक्षा शिक्षक धीमी गति से सीखने वाले या कमजोर बच्चों का चिन्हाकंन करेगा।
2. धीमी गति से सीखने के कारणों को पता करेंगे।
3. कारणों का पता करके अन्य शिक्षक एवं प्रधान पाठक से गति सुधार के विषय में चर्चा करेंगे।
4. यदि उस बच्चे की शाला में गति सुधारना संभव नहीं हो तो उसे SRTC में भेजने की सहमति बनायेंगे।
5. SRTC के अनुदेशक से संपर्क करेंगे।
6. SRTC के अनुदेशक को उस बच्चे की विषयवार वास्तविक माइल स्टोन की जानकारी देंगे।
7. बच्चे की कठिनाई वाले दक्षता बिन्दु से अवगत करायेंगे।
8. शिक्षक अपने द्वारा किये गए प्रयास व बच्चे की रूचि के क्षेत्रों से अनुदेशक को परिचित करायेंगे।
9. अब अनुदेशक बच्चे की वास्तविक माइल स्टोन की दक्षताओं को अनुदेशक संदर्शिका की परिशिष्ट को पढ़कर SRTC के पाठयक्रम के उचित माइलस्टोन से गतिविधि कराना शुरू करेगा।
10. बच्चे की निर्धारित माइल स्टोन की गतिविधियों या दक्षता प्राप्त करने की गति बढ़ाने के लिए उचित प्रयास करेंगे।

11. ACK बैलेंस पश्चात् वापस शाला में बच्चे को अध्यापन हेतु भेज देंगे।

इस प्रकार विभिन्न कठिनाईयों के कारण ही बच्चे की सीखने की गति कम होते जाती है। बच्चे को लिखने मे परेशानियाँ जैसे– पेन्सिल न पकड़ पाना, शारीरिक परेशानी, पढ़ने में उच्चारण करने में, प्रश्नों के उत्तर देने में, अपनी समझ बना पाने में, अवधारणा के स्पष्ट न होने से मानसिक रूचि, वातावरण का प्रभाव ऐसी बहुत– सी कठिनाईयों के कारण ही बच्चों की गति धीमी होती जाती है।

धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की गति को बढ़ाने हेतु निम्न कार्य –

1. रूचि के अनुरूप कार्य – ऐसे बच्चे की रूचि को ध्यान में रखकर कार्य करना। उनकी रूचियों को जानना। जैसे– किसी बच्चे की रूचि यदि चित्र बनाने में है तो उसकी रूचि के अनुसार ही उसकी गति को बढ़ाया जा सकता है।
2. अधिकाधिक समय देकर, धीमी गति से सीखने वालों बच्चों के साथ अधिक समय बिताकर उनकी कठिनाईयों को जानने का प्रयास करना।
3. मनोरंजनात्मक गतिविधि –इन बच्चों के साथ मनोरंजात्मक गतिविधियाँ करवाकर जैसे – चित्र बनवाना, हस्तकला और भी नये कार्यों का प्रयोग कर गति में सुधार व बदलाव देखा जाता है।
4. तेज गति वाले बच्चों के जोड़कर – धीमी गति वाले बच्चे को तेज गति वाले बच्चों के साथ जोड़ने से वह तेज गति वाले बच्चे को देखकर सीखता है और उन्हीं के अनुरूप आगे बढ़ने वाले कार्यो को करने की चेष्ठा करता है।
5. स्वतंत्र रूप से गतिविधि में संलग्न कर –ऐसे बच्चों को स्वतंत्र रूप से कर सके गतिविधि में संलग्न होने दिया जाये क्योंकि इनमें कुछ ऐसे बच्चे भी होते है जो स्वतंत्र रूप से कार्य कर गतितिधियों में समान रूप से सहभागिता निभाने लगते हैं।
6. खेल के माध्यम से शिक्षा देकर –खेल के माध्यम से गतिविधि को पूर्ण कर शिक्षा दी जाती है व खेल–खेल में पढ़ाई कराई जाती है। बच्चों को पता ही नहीं चलता और बच्चा सीख जाता है।
7. प्रोत्साहन व आत्मविश्वास बढ़ाकर – बच्चों को अधिकतर व बार–बार प्रोत्साहित करने पर वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ने लगते हैं। उनका आत्मविश्वास भी बढ़ने लगता है । इस प्रकार उनकी गति में भी परिवर्तन दिखाई देने लगता है।

इस प्रकार धीमी गति वाले बच्चों की गति को बढ़ाया जावे तथा और भी नवाचार करके इनको गति में बदलाव लाया जाता है।

प्र.5 SRTC में बच्चों को तेज गति से सीखने के लिए क्या–क्या दिया जा रहा है?

1. सीखने हेतु अधिक समय की उपलब्धता – SRTC में आने वाले बच्चे विभिन्न ACK (Age class knowledge) असंतुलित होते हैं। अतः उन्हें उनके स्तर एवं कक्षा के अनुरूप शिक्षा देने हेतु अधिक समय की आवश्यकता होती है। SRTC एक आवासीय संस्था है, जहाँ बच्चे रहकर पढ़ाई करते हैं। अतः उनके पास सीखने के लिए पर्याप्त समय होता है, जो कि शाला समय (10:00 am to 5 pm) में संभव नहीं है।

2. स्तरानुसार शिक्षण – बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य कराना स्तरानुकुल शिक्षण कहलाता है। SRTC में आने वाले बच्चों की उम्र एवं शिक्षण स्तर भिन्न–भिन्न होता है। अतः उन बच्चों को विभिन्न तरीकों से कार्य–योजना बनाकर (A.C.K.) आयु के अनुसार कक्षा एवं कक्षा के अनुसार ज्ञान प्रदान करके शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जाता है।

3. विषय विशेषज्ञों (Expert Teacher) की उपलब्धता– SRTC में बच्चों को शिक्षण के लिए पूर्णकालिक अनुदेशकों के अतिरिक्त विभिन्न विषयों में दक्षता प्राप्त विषय विशेषज्ञों को समय–समय पर बुलाया जाता है। जो बच्चों को विषय पढ़ाने के अतिरिक्त अनुदेशकों को विषय में आने वाली कठिनाईयों को भी दूर करता है।

4. जीवनोपयोगी शिक्षण/कौशल विकास–SRTC में आने वाले बच्चे किसी कारण या परिस्थिति वश विभिन्न कार्यों में संलग्न रहते हैं। ऐसे बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त सृजनात्मकता के लिए कौशल विकास की शिक्षा भी दी जाती है। जैसे हस्तकौशल, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई एवं अन्य रूचिकर कार्यों को सरल माध्य से सिखाया जाता है। तर्कशक्ति के साथ–साथ मानसिक एवं शारीरिक विकास के अतिरिक्त अवसर मिलते हैं।

5. रूचिकर एवं गतिविधि आधारित पाठ्यसामग्री– केन्द्र में पढ़ने वाले बच्चों को उनके स्तरानुसार शिक्षण देने के लिए केन्द्रों में बच्चों की रूचि अनुसार एवं गतिविधि आधारित पाठ्यवस्तु (कार्ड्स) प्रदान की गई है क्योंकि इनमें अधिकांश अवधारणाओं को खेल गतिविधि से स्पष्ट किया गया है। अतः बच्चे तेजी से सीखते है।

सीखने की गति व स्तर क्या है?

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि हर बच्चे के सीखने की गति व उसके स्तर में भिन्नता पाई जाती है। अर्थात् बच्चे अपनी गति एवं स्तर के अनुसार सीखते हैं। वर्तमान परिवेश में गति व स्तर क्या है ? इस विषय पर हमें संवेदनशील होकर इसकी अवधारणा के प्रति समझ विकसित करना होगी।

आइए देखें गति व स्तर क्या है?

गति– जब कोई बच्चा एक निश्चित अपेक्षित दक्षता (स्तर) को जितने समय में सीख पाता है। उस स्तर को प्राप्त करने में लगने वाला समय ही उसकी गति है।

स्तर– बच्चे अपनी गति के अनुरूप जितनी दक्षताएं सीख पाता है उसे उस बच्चे का स्तर कहते हैं।

MGML शिक्षण पद्धति में इन दक्षताओं (स्तरों) को सीखने की सुविधा अनुसार छोटे–छोटे खंडों में बांटा गया है। उसे माइलस्टोन का नाम दिया गया है।

अब हम गति एवं स्तर को एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैः–

माना कि एक बच्चा 0 माइलस्टोन में है और 1 माइलस्टोन को पूरा करने के लिए अनुमानित 25 दिन निर्धारित है। वह बच्चा 1 माईल स्टोन को जितने दिन में पूरा करेगा वही उसकी गति कहलाएगी। एवं माइलस्टोन 1 उसका स्तर होगा।

इसका तात्पर्य यह है कि जो बच्चा जितने कम समय में अपने स्तर को प्राप्त करेगा वह उतनी तेज गति से सीखने वाला बच्चा कहलाएगा। इसके विपरीत कोई बच्चा उस स्तर को प्राप्त करने में जितना अधिक समय लगाएगा वह उतनी ही धीमी गति से सीखने वाला बच्चा कहलाएगा।

आइए अब हम कुछ प्रश्नों पर विचार करेंः–

1. कोई बच्चा तेज गति से एवं कोई धीमी गति से क्यों सीखता है?
2. क्या बच्चों के तेज एवं धीमी गति से सीखने के पीछे कोई जन्मजात कारण होता है?
3. क्या इन बच्चों के सीखने की गति को काई बाह्य कारण भी प्रभावित करता है?
4. यदि हाँ, तो वे कौन–कौन से कारक है?
5. क्या हम उनकी सीखने की गति को प्रभावित करने वाले कारणों पर प्रभाव डालकर धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की गति को बढ़ा सकते हैं?
6. यदि हाँ, तो बताइए कि SRTC में ऐसी कौन–कौन सी गतिविधियाँ हों जिससे धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के सीखने की गति को तेज किया जा सके?
7. हम SRTC में ऐसे कौन से वातावरण दें जिनसे धीमी गति से सीखने वाले बच्चे अधिक तेज गति से सीख सकें?
8. क्या हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि किसी बच्चे को धीमी गति से सीखने वाला बनाने के लिए वातावरण एवं परिस्थितियाँ ही जिम्मेदार हैं?

यदि हम उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण करने के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में देखें तो हम इन विचारणीय प्रश्नों के हल हमारे अर्न्तमन से निकलकर आ सकते हैं।

बच्चों के तेज एवं धीमी गति से सीखने के पीछे कोई जन्मजात कारण नहीं होता, बल्कि उस बच्चे के आसपास अर्थात् समाज का वातावरण एवं उसकी पारिवारिक परिस्थितियाँ तथा स्कूल का वातावरण एवं परिवेश ही बच्चों के सीखने की गति को प्रभावित करता है। जिस तरह से एक रेशम के कीड़े को अपने कोकून से निकलने में एक निश्चित समय लगता है तथा एक उचित वातावरण मिलने पर ही वह बाहर निकलता है तथा संघर्ष करके अपने आप को उस वातावरण के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित करता है। ठीक उसी तरह प्रत्येक बच्चे को तेज गति से सीखने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उचित वातावरण, मार्गदर्शन, उचित एवं पर्याप्त संसाधन आदि प्रदान किए जाएं, तो निश्चित ही धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की गति बढ़ाई जा सकती है। परन्तु उपर्युक्त सभी परिस्थितियों एवं वातावरण का निर्माण बच्चों की रूचियों एवं उनके अंतर्मन को समझकर किया जाना अपेक्षित है।

00000

''हर बच्चे की पहली इच्छा,
पूरे अवसर, पूरी शिक्षा।''

'' हमारी शालाओं में जब हमारा पूरा श्रम होगा,
मेहनत रंग लाएगी और हमारा भ्रम दूर होगा।''

14 MGML की आवश्यकता क्यों

वर्तमान शिक्षण प्रक्रिया कैसी ?

प्रक्रिया	साधन	मान्यताएँ
एक के बाद एक पाठ पढ़ाना।	पाठ्य पुस्तक	सभी बच्चे सीख जाएँगे।
पढ़ाए हुए पाठ पर फिर वापस नहीं आना।	शिक्षक	सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास हो जाएगा।
एक साल पढ़ाना।	टी.एल.एम.	
एक वर्ष बाद दूसरे वर्ग/कक्षा में कक्षोन्नति देना।	शिक्षक निधि	

क्या ये मान्यताएँ सही हैं?

इस प्रक्रिया को स्वीकारते हुए शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 14 वर्षों से लगातार कई कार्य किये जा रहे हैं। जिसमें –

- पाठ्य पुस्तकों का विकास
- शिक्षक प्रशिक्षण
- शिक्षक निधि
- विविध शिक्षण सामग्री।
- अन्य अनेक नवाचारी गतिविधियाँ।

इतने प्रयासों के परिणाम स्वरूप आज भी

- शत–प्रतिशत नामांकन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका।
- ठहराव के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका।
- सभी बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा नहीं दी जा सकी।

आइये इनके कारणों को जानें :–

- पूरी शिक्षण की प्रक्रिया या सिस्टम में कहीं न कहीं कमी है।
- शिक्षा में समुदाय के सहयोग का अभाव रहा।
- पूरी व्यवस्था में बच्चों की भिन्नता, उनकी विविधता और सीखने की गति का ध्यान ही नहीं रखा गया।
- सीखने में निर्भरता एवं एक ही स्त्रोत का उपयोग।

स्कूल और अच्छे शैक्षिक अभ्यासों की बाधाएँ : –

- ➢ स्कूल व्यवस्था में विशेष तरह की कठोरता, जो बदलाव में बड़ी बाधा है।
- ➢ सीखने को अलग गतिविधि के रूप में देखना। परिणामस्वरूप बच्चा अपने ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से नहीं जोड़ पाता।
- ➢ शिक्षण की व्यवस्था ही ऐसी है कि बच्चों एवं शिक्षकों में रचनात्मक चिन्तन और अन्तर्दृष्टि समाप्त हो जाती है।
- ➢ सीखने–सिखाने की जो कुछ भी सामग्री है, ज्ञान रचने और मानवीय सामर्थ्य को स्थापित कर पाने में पूर्ण सक्षम नहीं है।
- ➢ बच्चे के भविष्य को महत्वपूर्ण मान लिया जाता है, जिससे उसका वर्तमान खत्म हो जाता है।

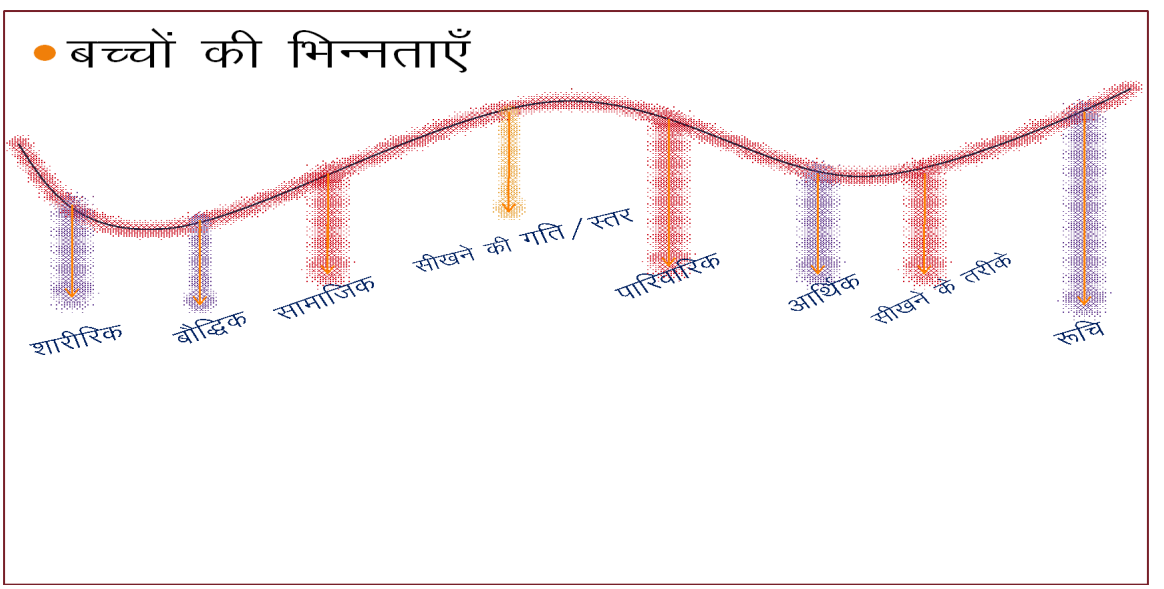

बच्चों की समानताएँ

स्कूल के उद्देश्य

- जो भी बच्चा स्कूल के भीतर आए, अपेक्षित क्षमताएँ प्राप्त करके ही स्कूल से बाहर जाए।
- जहाँ बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा हो।
- बिना किसी प्रतिस्पर्धा या तुलना के अपनी क्षमताओं के अनुरूप विकसित हो।
- कक्षा में प्रतियोगिता को स्थान दिया जाना।

प्रतियोगिता का अर्थ :–स्वयं में स्वयं के प्रति पूर्णता के लिए योग बराबर प्रतियोगिता

बच्चों के अधिकार

- सीखना हर बच्चे का अधिकार है।
- बच्चों को सीखने की अपनी गति के लिए सम्मान प्राप्त करने का अधिकार है। बच्चों की विविधता का सम्मान हो।
- प्रत्येक बच्चे को समानता के साथ सीखने का अधिकार प्राप्त हो।
- शिक्षक ही ज्ञान का स्त्रोत नहीं है –सभी स्त्रोतों से सीखने का अधिकार और स्वयं सीखने की परिस्थितियाँ भी मिले।
- प्रत्येक बच्चे का हक है कि उसका प्रगतिकारक मूल्यांकन हो।
- 1825 दिन में प्रत्येक बच्चे को अच्छी स्कूली शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

MGML क्या है ?

- बच्चों की भिन्नताओं के अनुरूप सामग्री =
- लोक जीवन और शिक्षा का जुड़ाव = **M**
- सीखने के तरीके एवं रूचि के अनुरूप =
- सभी बच्चों की सक्रिय और समान भागीदारी = **G**
- बच्चों की समानताओं का विस्तार =
- सीखने के स्त्रोतों का विस्तार =
- बच्चों की गति के अनुरूप शिक्षण सामग्री = **M**
- सीखने में निर्भरता से आत्मनिर्भरता और परस्पर निर्भरता =
- बच्चों की गति और स्तर के अनुरूप शिक्षण तकनीक = **L**
- बच्चों की भिन्नताओं का शिक्षण प्रक्रिया से तालमेल =

सभी बच्चों को समान गुणवत्ता के साथ शिक्षण, राज्य की शैक्षिक आवश्यकता रही है। किसी कौशल को सीखने के लिए बच्चों में विविधता होती है, क्योंकि बच्चों के सीखने की गति अलग–अलग होती है, इसलिए एक ही समय में प्रत्येक बच्चे का स्तर अलग–अलग होता है। बच्चे सीखें इसके लिए जरूरी है कि उसके सीखने की गति का सम्मान किया जाए और उन्हें सीखने के पर्याप्त अवसर दिए जाएँ। साथ ही कक्षा में बालकेन्द्रित और आनंददायी शिक्षा भी आवश्यक है। जिसमें परीक्षा का भय न हो और न ही सीखने के समय का बंधन हो। बच्चे खेल–खेल में अपनी गति एवं स्तर के अनुरूप सीखें।

क्या कोई ऐसी कारगर प्रणाली है, जो उपर्युक्त बातों को पूरा करती हो ?

जी हाँ !

एम.जी.एम.एल. **ही आज की स्थिति में सबसे कारगर प्रणाली है।**

एम.जी.एम.एल.की अवधारणा –

बच्चा परिवेश के विभिन्न साधनों एवं स्रोतों से सीखता है। बच्चे की आवश्यकतानुसार उसके सीखने के स्तर और गति के अनुरुप सीखने के अवसर एवं साधन उपलब्ध करा देना ही एम.जी.एम.एल. है। इसमें शिक्षक सुविधादाता की भूमिका निभाता है।

इस प्रणाली में बच्चों के स्तर का परीक्षण कर उनके स्तर के अनुसार पाठ्यसामग्री दी जाती है। प्रत्येक बच्चे को सीखने के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं। पुस्तक के स्थान पर कार्डों से शिक्षण होता है। बच्चों के बैठने हेतु विभिन्न समूह निर्धारित किए गए हैं।

इस प्रकार प्रत्येक बच्चा अपनी क्षमता, गति एवं स्तर के अनुसार गुणवत्तायुक्त शिक्षा लेकर ही आगे बढ़ता है। इस प्रणाली को निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है :–

गति :– प्रत्येक बच्चे की बुद्धिलब्धि, रुचियाँ, परिस्थितियाँ एवं इच्छाएँ भिन्न–भिन्न होती हैं, जिससे एक ही समय में हर बच्चे की विषय वस्तु को सीखने की क्षमता भी भिन्न–भिन्न होती है। सीखने की क्षमता एवं सीखने में लगने वाला समय ही सीखने की गति कहलाता है।

> उदाहरण :– एक शिक्षक रमा, श्यामा, रज्जू को एक ही समय में जोड़ का अभ्यास सिखाते हैं। रमा बहुत तेजी से जोड़ सीखती है। श्यामा निर्धारित समय में सीखती है। रज्जू बहुत अधिक समय में सीखता है।

अर्थात् तीनों बच्चों के सीखने की गति अलग–अलग है।

स्तर :– स्तर से आशय अपेक्षित दक्षता को कुशलता पूर्वक प्राप्त करना है। सीखने की गति में भिन्नता के कारण बच्चों के स्तर में भी भिन्नता पाई जाती है।

> उदाहरण :– रमा, श्यामा और रज्जू के सीखने की गति भिन्न–भिन्न है। कुछ समय बाद हम देखेंगे कि –
>
> – रमा को 2 अंकों का जोड़, हासिल सहित आता है।
>
> – श्यामा को 2 अंकों का बिना हासिल वाला जोड़ आता है।
>
> – रज्जू को 1 अंक का जोड़ आता है। इस प्रकार प्रत्येक बच्चे का स्तर अलग–अलग है।

" सिर्फ देखो नहीं गौर करो,
सिर्फ पढ़ो नहीं जीवन में उतारो।।"
सिर्फ सुनो नहीं ध्यान से सुनो,
सिर्फ ध्यान से ही न सुनो..... समझो

•जॉन एच.आर. हुड्स

15 MGML के तत्व

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण की अवधारणा के आधार पर सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु कुछ अलग–अलग कड़ियों के अध्ययन की आवश्यकता है। इस पद्धति में कुछ अलग–अलग तकनीकों एवं सामग्रियों को मिलाकर पूरी प्रणाली एवं शिक्षण प्रक्रिया स्पष्ट होती . . . . . MGML के तत्व कहते हैं।

1. माइलस्टोन : पाठ्यक्रम ही माईलस्टोन है।

माइलस्टोन कैसे बने?

1. पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को छोटे–छोटे कौशलों में विभक्त किया गया है।
2. सीखने के क्रम को ध्यान में रखकर प्रक्रिया को सहज, रोचक एवं क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया गया है।

माइलस्टोन क्यों?

1. माइलस्टोन में बच्चा एक उद्देश्य को पूरा करने के बाद ही दूसरे उद्देश्यों की ओर बढ़ता है।
2. उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये विभिन्न गतिविधियों का प्रयोग किया जाता है।
3. माइलस्टोन सरल से जटिल की ओर परिपक्वतापूर्ण बढ़ता है।
4. उद्देश्य छोटे–छोटे होते हैं, अतः यह रूचिकर होता है। बच्चे जल्दी सीखते हैं, परिणामस्वरूप आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
5. उद्देश्यों को माइलस्टोन में इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है, कि बच्चा स्पाइरल लर्निंग कर सके।
6. उपलब्धियों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने में आसानी होती है।
7. तीव्र गति से सीखने वाले बच्चे के क्षेत्र विशेष की रूचि को पहचान कर अवसर प्रदान किया जाता है।
8. यदि कोई बच्चा उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पा रहा है तो उसकी कमजोरी को पहचान कर उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है।
9. बच्चा जब स्वयं सीखता है तब उस बच्चे के रचनात्मक चिंतन और उन उद्देश्यों के प्रति अन्तर्दृष्टि के साथ समझ विकसित होती है।

2. लोगो :–लोगो (Logo) प्रतीक हैं, जिनके आधार पर समूह व गतिविधियाँ बनाई गई हैं। इससे कार्डों के रखरखाव में सुविधा होती है। विषयवार लोगो(Logo) रखे गए हैं, हिन्दी में – पशु, गणित में – पक्षी, पर्यावरण में– फल, एवं अंग्रेजी में– इलेक्ट्रॉनिक सामान ।

लोगो कैसे बने?

1. माइलस्टोन के उद्देश्यों को पूरा करने हेतु गतिविधियों का निर्धारण किया गया।
2. विभिन्न गतिविधियों की पहचान, वर्गीकरण एवं कार्डों के रखरखाव के लिये लोगो बनाए गए।
3. यही लोगो लेडर में गतिविधि के क्रम और समूह की प्रकृति को भी निर्धारित करते हैं।

लोगो क्यों आवश्यक है?

1. लोगो से विषय एवं गतिविधि की जानकारी होती है।
2. एम.जी.एम.एल. की समस्त सामग्रियों के रखरखाव एवं प्रबंधन के लिए।
3. लेडर में गतिविधियों को क्रमबद्ध रूप से जमाने के लिए।
4. समूह में बच्चों की बैठक व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए।
5. बच्चों के लिये सामग्री को आकर्षक एवं रूचिकर बनाने के लिए।

विषय : हिन्दी

1 बैलगाड़ी– अवधारणा

2. तांगा–वर्कबुक

3. ट्रेक्टर– व्यवसायिक

4 हवाईजहाज– मूल्यांकन

5 बस–उपचारात्मक

6. साइकिल–शब्दों से वर्ण पहचान

7 रेलगाड़ी – वर्ण जोड़कर शब्द बनाना।

8. कार – बिल्लस खेल

9. पानी जहाज – वर्ग पहेली / प्रथमाक्षरी

10. मोटर साइकिल – शब्द / वाक्य पट्टी

11. स्कूटर – पासा / खिड़की मात्रा कार्ड

12. रिक्शा – सामूहिक

13 ट्रक – सर्वे / संकलन / वर्गीकरण

विषय – गणित

1. पतंग– अवधारणा

2. झूला– बिल्लस / पास

8. रस्सीकूद– गुणा,भाग अभ्यास

9. गुब्बारा – वर्कबुक

3. हॉकी स्टीक– अभ्यास

4. फिरकी –कक्षा के अंदर का खेल

5 फिसलपट्टी– धन,ऋण अभ्यास

6. नेट– कक्षा के बाहर का खेल

7. गुलेल– तार्किक

10. बैट– व्यवसायिक

11. स्टम्प– मूल्यांकन

12. लट्टू– उपचारात्मक

13. फूटबॉल– सामूहिक खेल

विषय – अंग्रेजी

1. हारमोनियम–अवधारणा

2. नगाड़ा– वार्तालाप

3. ढोलक– चित्र शब्द कोष

4. तमूरा– संवाद एवं अभिनय

5. गिटार– बिल्ल्स/पासा खेल

6. बाँसुरी– व्यवसायिक

7. ड्रम– वर्कबुक

8. मोहरी–मूल्यांकन

9. डमरू– उपचारात्मक

10. तबला–अभ्यास

3. लेडर :

लेडर, लोगोवार आगे बढ़ते हुए माइलस्टोन पार करने का मार्ग है। साथ ही यह समस्त प्रक्रिया का नियंत्रक है। इसके आधार पर बच्चे क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित गतिविधियाँ करते हुए आगे बढ़ते हैं।

लेडर कैसे बने ?

1. बच्चे के सीखने के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों को क्रम प्रदान किया गया है।
2. सीखने के सिद्धांत एवं बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों को क्रमिक रूप से जमाया गया है।
3. सीखे हुये उद्देश्यों को बार–बार दोहराने (स्पाइरल लर्निंग) को ध्यान में रखकर लेडर बनाये गये हैं।
4. कक्षा–कक्ष में समूह अनुसार बैठक व्यवस्था सुनिश्चित करने की दृष्टि से ।
5. लेडर में प्रत्येक अवधारणा को समझाने के लिये भिन्न–भिन्न गतिविधियाँ बनाई गई हैं, जिससे बच्चे रुचिपूर्वक सीखते हैं।

लेडर की आवश्यकता क्यों ?

1. कक्षा–कक्ष, सामग्रियों, गतिविधियों को व्यवस्थित एवं प्रबंधित करने के लिए।

2. छह समूहों के निर्धारण करने के लिए।

3. कक्षा–कक्ष के नियंत्रण के लिए।

4. बच्चों के गति एवं स्तर के मापन के लिए।

5. पर्यावरण विषय का लेडर बच्चों की व्यापक सोच की क्षमता को बढ़ाता है।

6. लेडर में आगे बढ़ने पर बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

7. आत्मनियंत्रित एवं स्वप्रेरित होकर बच्चे कार्य करते हैं।

4. समूह क्या है?

सीखने के सभी स्रोतों के उपयोग को ध्यान में रख कर बनाई गई बैठक व्यवस्था ही समूह है। जैसे–पहले समूह में बच्चे शिक्षक से सीखते हैं। तीसरे समूह में अपने साथियों से, पाँचवे समूह में स्वयं अध्ययन से एवं सर्वे के दौरान ग्राम में जा कर समुदाय से सीखते हैं।

एम.जी.एम.एल. SRTC में 4 समूह निर्धारित हैं :–

1. शिक्षक समर्थित समूह– इस समूह में शिक्षक द्वारा अवधारणा स्पष्ट किया जाता है।

2. सहपाठी समर्थित समूह–बच्चे गतिविधि करने के लिए एक–दूसरे का सहयोग करते हैं।

3. आंशिक सहपाठी समर्थित समूह–बच्चों को गतिविधि करने के लिए अपने साथियों के आंशिक सहयोग की जरूरत होती है।

4. स्वअधिगम एवं मूल्यांकन समूह– स्वाध्याय के कार्य जैसे– लेखन, पठन आदि इस समूह के अंतर्गत करते हैं। इस समूह में बच्चों का मूल्यांकन एवं उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है।

विषय हिन्दी

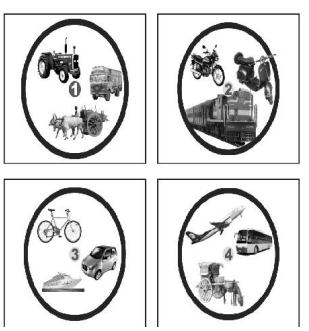

विषय गणित

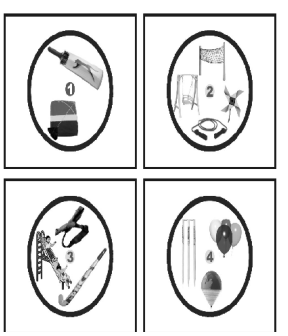

विषय अंग्रेजी

विषय – हिन्दी (लेडर)

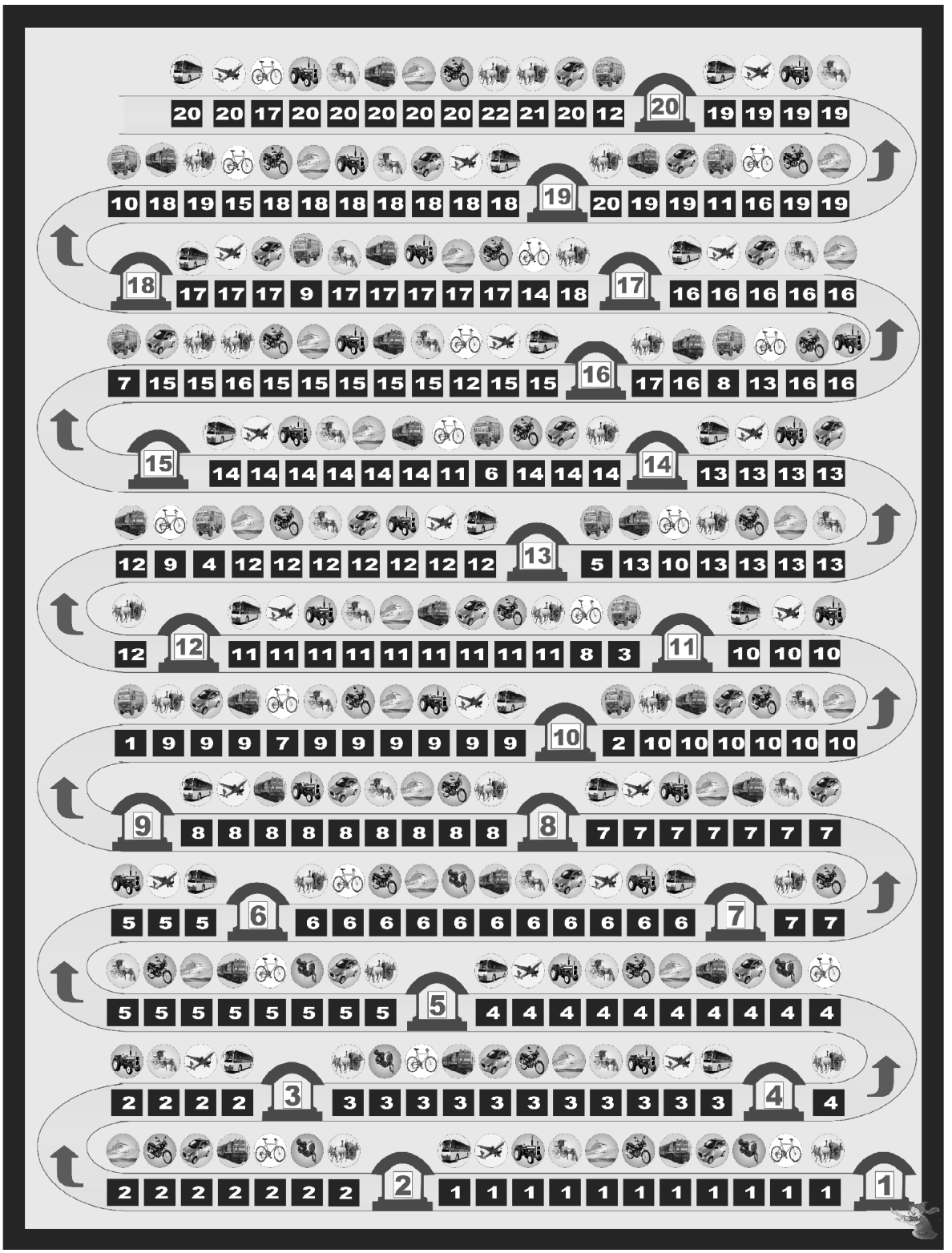
20 20 17 20 20 20 20 20 22 21 20 12 20 19 19 19 19
10 18 19 15 18 18 18 18 18 18 18 19 20 19 19 11 16 19 19
18 17 17 17 9 17 17 17 17 17 14 18 17 16 16 16 16 16
7 15 15 16 15 15 15 15 15 12 15 15 16 17 16 8 13 16 16
15 14 14 14 14 14 14 11 6 14 14 14 14 13 13 13 13
12 9 4 12 12 12 12 12 12 12 13 5 13 10 13 13 13 13
12 12 11 11 11 11 11 11 11 11 11 8 3 11 10 10 10
1 9 9 9 7 9 9 9 9 9 9 10 2 10 10 10 10 10 10
9 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 7 7 7 7 7 7 7
5 5 5 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 7 7 7
5 5 5 5 5 5 5 5 5 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
2 2 2 2 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 4 4
2 2 2 2 2 2 2 2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

विषय – गणित (लेडर)

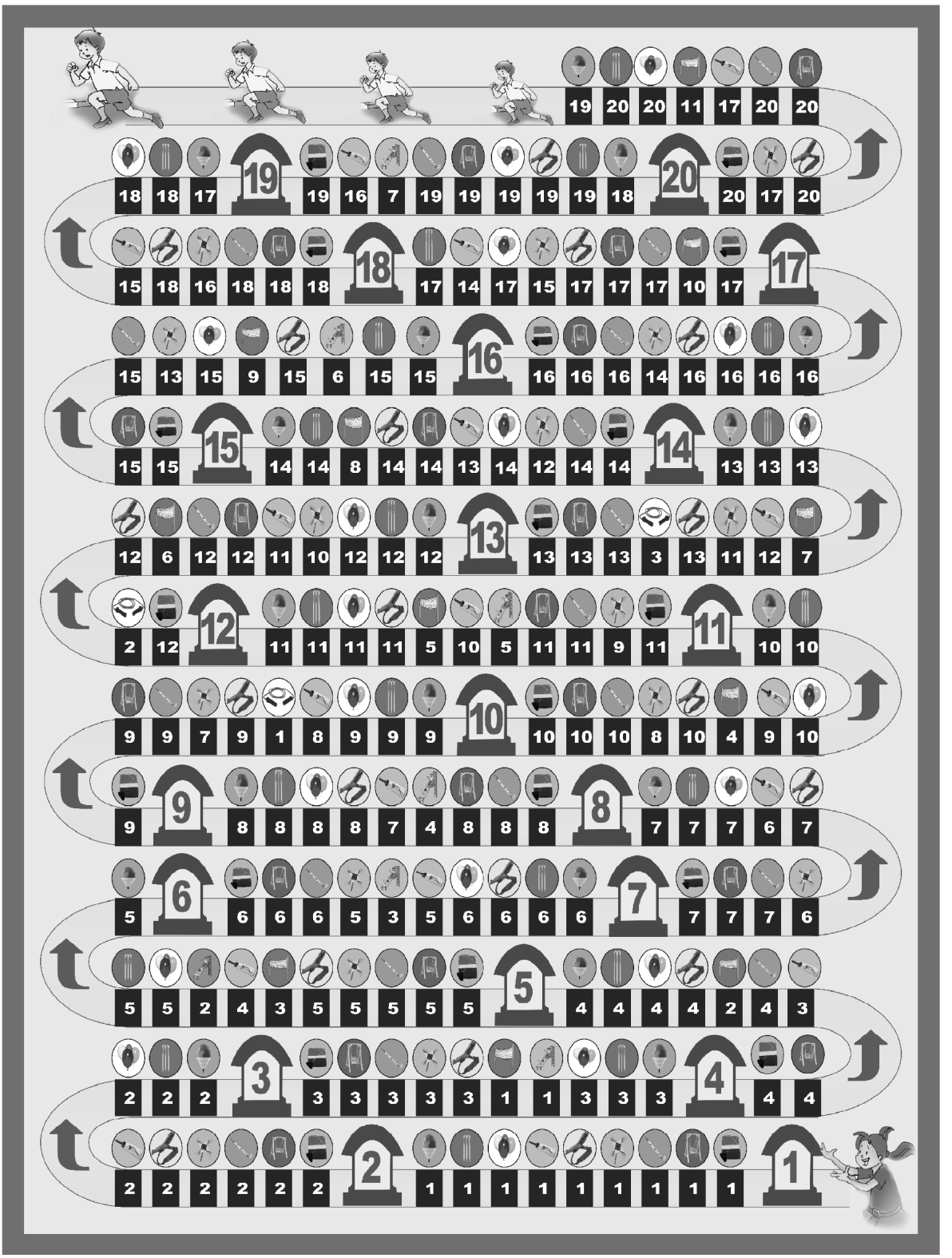
19 20 20 11 17 20 20
18 18 17 19 19 16 7 19 19 19 19 19 18 20 20 17 20
15 18 16 18 18 18 18 17 14 17 15 17 17 17 10 17 17
15 13 15 9 15 6 15 15 16 16 16 16 14 16 16 16 16
15 15 15 14 14 8 14 14 13 14 12 14 14 14 13 13 13
12 6 12 12 11 10 12 12 12 13 13 13 13 3 13 11 12 7
2 12 12 11 11 11 11 5 10 5 11 11 9 11 11 10 10
9 9 7 9 1 8 9 9 9 10 10 10 10 8 10 4 9 10
9 9 8 8 8 8 7 4 8 8 8 8 7 7 7 6 7
5 6 6 6 6 5 3 5 6 6 6 6 7 7 7 7 6
5 5 2 4 3 5 5 5 5 5 5 4 4 4 4 2 4 3
2 2 2 3 3 3 3 3 3 1 1 3 3 3 4 4 4
2 2 2 2 2 2 2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

विषय – अंग्रेजी (लेडर)

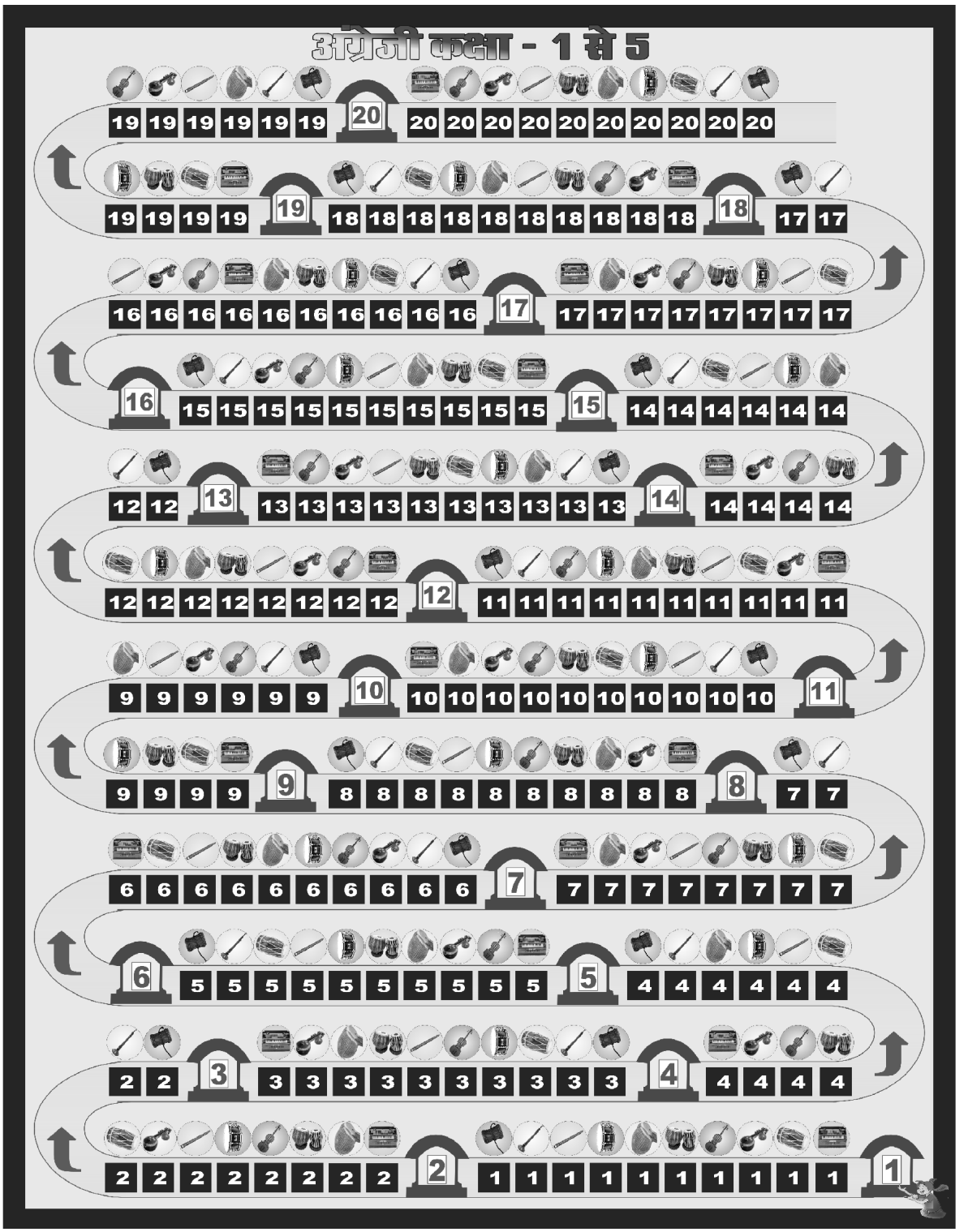

समूह निर्धारण प्रक्रिया

1. अनुमानित माइलस्टोन।

    अ. संदर्शिका में दिए गये परिशिष्ट को ध्यान पूर्वक पढ़ेंगे

    ब. कक्षा शुरू करने के पूर्व तीन–चार दिन बच्चों के साथ चर्चा करेंगे। उनकी आवश्यकता एवं बुद्धि लब्धि स्तर को जानने का प्रयास करेंगे।

    स. अनुमानित माइलस्टोन निकालेंगे।

2. वास्तविक माइलस्टोन

    अ. अनुमानित माइलस्टोन के मूल्यांकन कार्ड से बच्चे के स्तर का मापन करेंगे।

उदाहरण :

अ. यदि रीना का अनुमानित माइस्टोन 5 है तो उसे माइलस्टोन 5 का मूल्यांकन कार्ड से मूल्यांकन करेंगे।

ब. यदि वह 5 का मूल्यांकन कार्ड पूरा करती है तो उसे माइलस्टोन 6 का मूल्यांकन कार्ड देंगे।

स. अब यदि वह माइलस्टोन 6 का मुल्यांकन कार्ड पूरा नहीं कर पाई तो उसका वास्तविक माइलस्टोन 6 होगा।

द. यदि मोहन का माइलस्टोन 9 है तो उसे माइलस्टोन 9 का मूल्यांकन कार्ड देंगे।

- माइलस्टोन 9 का मूल्यांकन कार्ड पूरा नहीं कर पाने पर माइलस्टोन 8 का मूल्यांकन कार्ड देंगे।
- माइलस्टोन 8 का कार्ड पूरा नहीं कर पाने पर उसे माइलस्टोन 7 का मूल्यांकन कार्ड देंगे।
- माइलस्टोन 7 का मूल्यांकन कार्ड पूरा कर लिया तो उस बच्चे का वास्तविक माइलस्टोन 8 होगा।

3. तत्पश्चात् बच्चों को कार्ड उठाने, लोगो पहचान, लेडर और समूह में चलने पर प्रशिक्षित करेंगे।

4. उसके पश्चात् वास्तविक माइलस्टोन से 1माइलस्टोन नीचे का कार्ड देकर समूह में गतिविधि करवाएँगे।

5. इस प्रकार बच्चे चारों समूह में घुमते हुए अपने गति और स्तर के अनुरूप सीखते हुए समूहों में घूमेंगे और शिक्षण कार्य चलता रहेगा।

कुछ प्रश्न जो मन में आएँगे –

प्रश्न – समूह निर्माण की प्रक्रिया क्यों ?

उत्तर : 1. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सरल करने के लिए।

2. कक्ष को स्वनियंत्रित गति से चलाने के लिए।

3. बच्चों में MGML की संपूर्ण प्रक्रिया पर समझ बनाने के लिए।

4. सभी बच्चों की गतिविधि में सहभागिता के लिये।

5. बच्चों के स्तर की सही जानकारी हेतु।

6. स्तरानुरूप सीखने की प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिये।

प्रश्न :– अनुमानित माइलस्टोन कैसे ज्ञात करेंगे ?

उत्तर – स जन हस्त पुस्तिका में दिए गए परिशि ट से माइलस्टोन का बिन्दुवार अध्ययन करें तथा इसके आधार पर बच्चों का अनुमानित माइलस्टोन तय करें।

प्रश्न :– वास्तविक माइलस्टोन क्यों ?

उत्तर :– बच्चे का वास्तविक स्तर ज्ञात कर अध्यापन कार्य प्रारंभ करने के लिए वास्तविक माइलस्टोन निकालना आवश्यक है।

प्रश्न :– बच्चों को लोगो, लेडर से परिचय कराना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर :– बच्चों को लोगो, लेडर से परिचित कराने के बाद ही डळडस की कक्षाएँ संचालित होती हैं। बच्चे लेडर देखकर ही लोगो एवं नंबर के अनुसार कार्ड निकालते हैं व निर्धारित समूह में बैठकर गतिविधि पूरा करते हैं। लोगो, लेडर के परिचय से ही समूह का निर्माण होता है। परिचय कराने के लिए बच्चों को कार्ड छूने दें, लेडर पर उँगली फिराकर उन्हें उनके वास्तविक माइलस्टोन का ज्ञान करायें।

प्रश्न : अनुमानित माइलस्टोन के बाद अस्थायी समूह बनाना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर :–1. प्रत्येक बच्चे का वास्तविक माइलस्टोन निकालने के लिए।

2. सभी बच्चों का एक साथ वास्तविक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। अतः कक्षा को व्यवस्थित करने के लिए अस्थायी समूह बनाना आवश्यक है।

प्रश्न :– अस्थायी समूह के बच्चों को कौन–कौन सी गतिविधियाँ कराएँगे ?

उत्तर :–गीली मिट्टी के कार्य, चित्रकारी, कंकड़ से चित्र बनाना, चित्रों पर कंकड़ जमाना, कागज से खिलौने बनाना, विभिन्न वस्तुओं का संकलन, परिवेशीय अवलोकन कर रिपोर्टिंग करना, पूर्व के माइलस्टोन के खेल, कार्डों का खेल,बिल्लस का खेल आदि।

प्रश्न :– अवधारणा क्या है ?

उत्तर :– विषयवस्तु के अंतर्गत कुछ प्रमुख बिन्दु जो संपूर्ण विषय वस्तु की समझ बनाते हैं।

अवधारणा कार्ड को कैसे स्पष्ट करेंगे ?

हिन्दी

1. अवधारणा कार्ड कराने के पूर्व उस माइलस्टोन के सभी कार्डों की जानकारी रखें एवं अवधारणा स्पष्ट करते समय अन्य गतिविधि कार्डों का उपयोग अवश्य करें। जैसे – सायकिल कार्ड, रेलगाड़ी कार्ड आदि।
2. सबसे पहले शिक्षक अवधारणा कार्ड के चित्रों पर चर्चा कराएँ।
3. कविता/कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाएँ।
4. रंगीन शब्दों पर जोर देते हुए कविता को सुनाएँ।
5. चित्र व शब्दों का मिलान कराएँ।
6. शिक्षक शब्द के प्रथम वर्ण की ध्वनि की पहचान कराएँ।
7. शिक्षक द्वारा शब्दों को बोलने पर बच्चे शब्द को पहचान सकें।
8. कविता/कहानी को हाव–भाव के साथ दोहरा सकें एवं अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें।
9. शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि बच्चा रंगीन शब्दों को अच्छी तरह पहचान गया है। तभी अगली गतिविधि के लिए बच्चे को निर्देशित करें।
10. कक्षा 3 व 4 में अवधारणा स्पष्ट करने से पूर्व उस माइलस्टोन का उपचारात्मक कार्ड (बस) का अध्ययन करना अति आवश्यक है।
11. शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि बच्चे को अवधारणा पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गई है, तभी अगली गतिविधि के लिए बच्चे को निर्देशित करें।

गणित :–

1. अवधारणा स्पष्ट करने से पहले दैनिक जीवन से संबंधित मौखिक प्रश्न पूछें। जैसे – जोड़ की अवधारणा से पहले हम पूछें कि आपके पास दो पेन है और आपके दोस्त के पास तीन पेन है। कुल कितने पेन हुए ?
2. मौखिक प्रश्न के बाद कंकड़, बीज, माचिस की तीली, कंचे, बटन, मोती आदि विभिन्न सहायक सामग्री से उन्हें अवधारणा स्पष्ट कराएँ।
3. अवधारणा स्पष्ट करते समय उस माइलस्टोन के अन्य कार्डों का उपयोग अवश्य करें। जैसे – अंक कार्ड झूला, फिरकी, नेट आदि।
4. शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि बच्चा अवधारणा से संबंधित सवाल हल कर सकता है, तभी उसे अगले कार्ड की गतिविधि के लिए भेजें।

पर्यावरण : –

पर्यावरण विषय को हिन्दी विषय में ही समाहित की गई है।

1. सर्वप्रथम शिक्षक सर्वे कार्ड का अवलोकन करें। संकलित जानकारियों पर बच्चों के साथ चर्चा करें।
2. कहानी/कविता को समझाते हुए अवधारणा को स्पस्ट करें।
3. अवधारणा स्पष्ट कराने के लिए उस विषय से संबंधित अन्य कार्डों का भी उपयोग अवश्य करें।
4. शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि अवधारणा पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गई है, तभी बच्चे को अलगी गतिविधि के लिए निर्देशित करें।

अंग्रेंजी :–

1. शिक्षक हाव–भाव के साथ कविता को सुनाएँ।
2. कार्ड में दी गई क्रियाओं को स्वयं करके बताएँ।
3. अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए अन्य गतिविधि कार्डों का उपयोग करें।
4. यदि बच्चे क्रियाओं के साथ कविता को सुना पाते हैं तभी अगले कार्ड की गतिविधि कराएँ।
5. शिक्षक के द्वारा की गई क्रियाओं को बच्चे कर पाएँ एवं बोल पाएँ, तभी उन्हें अगला कार्ड दें।

अवधारणा स्पष्ट करने के लिए शिक्षक को **MGML** के सभी कार्डों का गहन अध्ययन करना आवश्यक है।

प्र.1 बच्चा अगले लोगो का कार्ड कब उठाएगा ?

उ. जिस कार्ड पर गतिविधि हो रही है, उस कार्ड की पक्की समझ ही अगले लोगो की गतिविधि के लिए सहायक होगी। जब तक बच्चा दक्ष न हो जाए तब तक गतिविधि दोहराएँ। ध्यान रखें कि गतिविधि कार्ड के निर्देश के अनुरुप किया हो। यदि बच्चा कार्ड की गतिविधि नहीं कर पा रहा है, तो इसका अर्थ यह होगा कि उसने पिछली गतिविधि को अच्छी तरह नहीं किया है।

प्र.2 शिक्षक सभी समूहों पर कैसे ध्यान रखें?

उ. 1. शिक्षक समर्थित समूह में प्रत्येक अवधारणा कार्ड को शिक्षक ही कराएँ।

2. आंशिक शिक्षक समर्थित समूह प्रथम समूह के पास हो, जिससे शिक्षक आवश्यकतानुसार सहयोग कर सके।

3. सहपाठी समर्थित समूह के बच्चों को आपसी सहयोग से गतिविधि करने हेतु प्रेरित करें। उच्च माइलस्टोन के बच्चों का सहयोग लें।

4. स्वअधिगम समूह में बच्चे स्वयं कार्य कर रहे हैं, यदि नहीं तो शिक्षक उन्हें स्वयं करने हेतु प्रेरित करें।

00000

'' शिक्षक का बालक को हँसकर किया गया अभिनंदन बच्चों को आगे तक ले जाता है।''

• गिजूभाई बधेका

16 समुदाय के साथ समन्वय

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है,बिना समुदाय के शिक्षा की परिकल्पना ही नहीं की जा सकती। बच्चों का अधिकांश समय समुदाय में ही बीतता है यही से सीखने की शुरूवात भी होती है। शैक्षिक गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए शिक्षा मे समुदाय की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। इस हेतु विद्यालय और समुदाय के बीच समन्वय आवश्यक है।

आर.टी.सी/एन.आर.टी.सी. में अध्ययनरत बच्चे, शिक्षा की मुख्य धारा से अलग हो चुके बच्चे होते हैं, जिन्हे पुनः मुख्यधारा में लाने की विशेष प्रशिक्षण दी जाती है।ऐसे बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से तो अलग हो गये थे। किन्तु समुदाय के सम्पर्क में सतत् रहे एकाएक इन्हें समुदाय से अलग कर विद्यालय से जोड़ देना, इन बच्चों के साथ अन्याय होगा। बच्चे का मन केन्द्र में लगा रहे तथा शिक्षा की गुणवत्ता भी स्थापित हो इसके लिए केन्द्र एवं समुदाय के बीच समन्वय होना आवश्यक है। इसके लिए अनुदेशक को पहल करना होगा।

अनुदेशक निम्न गतिविधियों के द्वारा समुदाय से समन्वयन स्थापित कर सकता है।

1. बच्चो को सर्वे के लिए समुदाय में भेज कर।
2. स्थानीय ग्राम चौपाल अथवा सामुदायिक भवन में समुदाय एवं बच्चों के साथ बैठक आयोजित करके।
3. माताओं को कहानी सुनाने, पाक कला सिखाने, घरों के रखरखाव एवं सजावट सिखाने के लिए आमंत्रित करना।
4. स्थानीय कामगारों को अपने–अपने व्यवसाय की जानकारी देने के लिए आमंत्रित करके।
5. स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कलाकार जैसे–चित्रकार,गायक, वादक, मूर्तिकार, लोकनर्तक दल इत्यादि को भी बच्चों को आमंत्रित करना।
6. स्थानीय त्योहारों को आर.टी.सी/एन.आर.टी.सी. केन्द्रों में भी मनाना चाहिए।
7. केन्द्र में समय–समय पर समुदाय और बच्चों का खेल आयोजित करना।
8. पालक सम्मेलन आयोजित करना।

9. पालक एवं समुदाय की बैठक आयोजित कर बच्चों की उपलब्धियों का उल्लेख करना।

10. बच्चों को स्ट्रीमींग (मुख्यधारा से जुड़ाव) के पश्चात् प्रमाण पत्र का वितरण समुदाय के उपस्थिति में करना।

11. बच्चों के मूल्यांकन में समुदाय का सहयोग लेना।

उपरोक्त गतिविधियों के संचालन से बच्चे अपने आपको सतत् समुदाय के करीब पायेंगे।उनका मन केन्द्र में लगा रहेगा, तथा समुदाय भी अपने बच्चों के प्रगति को स्पष्ट रूप से देख पाएंगे। इस प्रकार समुदाय और अनुदेशक के मध्य मधुर सम्बंध से शिक्षा की गुणवत्ता में गुणोत्तर विकास होगा।

00000

'' हर समस्या हमारे लिए कुछ नया सीखने का अवसर है, आओ उस अवसर को खोजें।''

'' अपंगों की शिक्षा दया का विषय का नहीं है, यह तो उनका मौलिक अधिकार है।''

• डॉक्टर हेलन केयर

17 विषय विशेषज्ञ

उद्देश्य :

1 भाषा, गणित के विभिन्न अवधारणाओं को समझने के लिए विषय विशेषज्ञ की सहायता लेना।

2 प्रत्येक बच्चों में विषय विशेष के प्रति समझ उत्पन्न करना।

3 प्रत्येक बच्चों को मूल्य, सांस्कृतिक और कला की जानकारी देना।

4 प्रत्येक बच्चों को उनकी रूचि के अनुरूप उचित शिक्षा की व्यवस्था करना।

आवश्यक सामग्री : व्हाइट बोर्ड, मार्कर, ड्राईंग सीट, स्केच पेन।

विधि :–नाटक, प्रश्नोत्तरी –

नाटक : पात्र

रिमझिम– SRTC की अनुदेशिका

छात्र– .....

रघुवीर– अंग्रेजी के टीचर (रिमझिम के चाचा)

अंजली– बी.ए. की छात्रा (संगीत टीचर)

रामू– दूधवाला (व्यावसायिक टीचर)

पहला दृश्य

रिमझिम SRTC सेंटर में अंग्रेजी विषय का अध्यापन कार्य कराते हुए

रिमझिम – आओ बच्चों आज हम अंग्रेजी Alphabets सीखेंगें। आप सब दोहराना।

बच्च – जी (एक स्वर में बोलते हैं)

रिमझिम – A, B, C, D, E, F, G का उच्चारण करती हूँ।

बच्चे – A, B, C, D, E, F..... (बच्चे अनमने ढंग से, बोलते हैं, कोई बात करता है, कोई इधर–ऊधर देखता है)

रिमझिम उन्हें समझाने का प्रयास करती है। उसी वक्त रिमझिम के चाचा (जो एक स्कूल के शिक्षक है), किसी काम से रिमझिम से मिलने आए थे, जो रिमझिम को परेशान देखकर कहते हैं।

रघुवीर – रिमझिम क्या अभी यह विषय मैं पढ़ाऊँ ?

रिमझिम – हाँ, हाँ, चाचा क्यों नहीं ?

रघुवीर – बच्चों आप मेरे साथ इस कविता को दोहराओ। ABCD, EFG, HIJK, LMNOP, LMNOPQRST, UVWXYZ.

(यह कविता वह गाकर अभिनव के साथ गाते हैं, बच्चे बड़े ही खुशी–खुशी दोहराते हैं)

रिमझिम – अरे वाह चाचा आपके पढ़ाने के ढंग से तो बच्चे बहुत खुश भी हुए। मुझे अंग्रेजी और गणित विषय पढ़ाने में बहुत परेशानी होती है। क्या आप रोज कुछ समय निकाल कर बच्चों को अंगेजी पढ़ाने में मदद कर सकेंगे।

चाचा – हाँ–हाँ, क्यों नहीं। मेरा एक मित्र गणित विषय का शिक्षक है मैं उसको भी रोज साथ ले आया करूंगा।

दूसरा दृश्य

सुबह–सुबह दूधवाला दूध लेकर आता है, रिमझिम सुबह से ही कुछ विशेष तैयारी में जुटी हुई है। वह ढ़ेर सामाग्रियाँ इकट्ठा कर रही है।

रिमझिम – (दूध लेते हुए) भईया, मैंने सुना है आप लोग घर में झाड़ू एवं चटाई बनाने का काम करते हैं, क्या आप हमारे सेन्टर बच्चों को को यह सिखा सकते हैं ?

दूधवाला – क्या बात करती हो बिटिया मैं अनपढ़, गरीब आदमी, मैं भला पढ़ने लिखने वाले बच्चों को क्या सिखा सकता हूँ ?

रिमझिम – नहीं भईया, यह तो एक हुनर है जिसमे शिक्षित होना जरूरी नहीं है और आप इतना अच्छा काम करते हैं। इसमें हमारे बच्चों को सीखने से जरूर हित होगा।

दूधवाला – ठीक है बिटिया, मैं जल्दी दूध बेचकर वापस आऊँगा।

तीसरा दृश्य

आज शाम को रिमझिम को पास के एक स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने जाना था। वह वहाँ जाती है। वहाँ अंजली (12 वीं की छात्रा) ने बहुत ही मधुर गीत की प्रस्तुती दी। उसे सुनकर रिमझिम कार्यक्रम खत्म होते ही अंजली से मिली।

रिमझिम– अंजली तुम बहुत अच्छा गाती हो, तुम्हारी प्रस्तुति दिल को छू गई।

अंजली – धन्यवाद।

रिमझिम – मैं SRTC की अनुदेशिका हूँ ।जहाँ हम ACK असंतुलित बच्चों को पढ़ाते हैं। मेरी इच्छा है उन बच्चों में संगीत की शिक्षा देने में आप हमारी मदद कर सकती हैं। इससे बच्चे सीख भी लेंगे और आपका अभ्यास भी होता रहेगा।

अंजली – SRTC के बच्चों को संगीत एवं डांस की शिक्षा देने के तैयार हो जाती है।

पर्दा गिरता है

प्रश्न 1:– क्या हमें रोचक ढंग से अंग्रेजी सीखने की जरूरत है?

प्रश्न 2:– क्या अंजली के संगीत सिखाने से बच्चों का कोई लाभ होगा?

प्रश्न 3:– क्या बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए?

प्रश्न 4:– Expert Teacher की आवश्यकता है? यदि हां तो क्यों?

प्रश्न 5:– Expert Teacher कौन–कौन हो सकते हैं?

Expert Teacher की अवश्यकता –

एक्सपर्ट टीचरः– विषय की जानकारी देने के लिए उस विषय से जुड़े अथवा विषय में पारंगत व्यक्ति जो सीखने में मदद करे वे एक्सपर्ट शिक्षक हो सकते हैं।

सभी विषयों में जहाँ अनुदेशक बच्चों को पढ़ाने के लिए सहयोग की आवश्यकता महसूस करते हैं तो वे समुदाय अथवा स्कूल के शिक्षकों का सहयोग ले सकता है।

00000

''बड़ा सोचें, छोटे से प्रारंभ करें,
और तत्काल शुरू करें।''

18 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत बच्चों की परीक्षा नहीं बल्कि सतत् और व्यापक मूल्यांकन किया जाएगा। एम.जी.एम.एल.प्रक्रिया के अंतर्गत सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के बहुत से पहलुओं को छुआ गया है। जो इस प्रकार हैः–

सतत् मूल्यांकन :

1. एम.जी.एम.एल.के अंतर्गत बच्चों की परीक्षा नहीं बल्कि प्रत्येक माइलस्टोन में उनका मूल्यांकन की व्यवस्था है।
2. प्रत्येक कार्ड की गतिविधि अभ्यास के बाद बच्चों का सतत् मूल्यांकन होता है।
3. बच्चे को जिस भी बिन्दु पर समस्या होती है, शिक्षक द्वारा उसका उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है।
4. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सेमेस्टर मूल्यांकन की बात कही गई है। एमजीएमएल में भी प्रथम, द्वितीय,तृतीय तिमाही मूल्यांकन के कार्ड बने हुये हैं।
5. बच्चों का गतिविधि आधारित मूल्यांकन होता है, अतः उन्हें भय नहीं रहता।
6. एमजीएमएल के कार्ड बच्चों के स्वमूल्यांकन हेतु प्रेरित करते हैं।
7. वर्कबुक के माध्यम से हम सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में पालकों का सहयोग ले सकते हैं।

व्यापक मूल्यांकनः–

व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत एमजीएमएल बच्चों के व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण पहलुओं को छूता है। जैसे :–

1. अभिव्यक्ति क्षमता– एमजीएमएल में विशेष रूप से बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता के विकास के लिये कार्ड बनाये गये हैं, जैसेः मौखिक अभिव्यक्ति/अभिनय लिखित अभिव्यक्ति/संकलन।
2. कला – एमजीएमएल के अन्तर्गत बच्चों के कला पक्ष के विकास हेतु चित्रकारी, गीत, मिट्टी की वस्तुएँ बनाना, कोलाज वर्क लिखने आदि को शामिल किया गया है।

3. व्यक्तिगत/सामाजिक पक्ष – एम.जी.एम.एल. पद्धति सहयोग के सिद्धांत पर बनी है जिससे बच्चों में एक दूसरे की सहयोग की भावना का विकास होता है।

4. बच्चों द्वारा ही समस्त सामग्री व कक्षा की व्यवस्था किए जाते हैं, जिससे बच्चों में देखरेख, व्यवस्थापन व प्रबंधन जैसे गुणों का विकास होता है।

5. एम.जी.एम.एल. के कार्डों में स्वच्छता, मानवीय मूल्यों को समाहित किया गया है, और उपदेशात्मक नहीं बल्कि चर्चा और एहसास के माध्यम से उनके अन्दर इन गुणों के विकास की बात सम्मिलित है।

6. खेल–कूद– शोध जैसे कार्यों का भी समावेश कार्डों में है।

7. आत्मविश्वास–बच्चों का स्वयं करके सीखना ही उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करता है, जो कि एमजीएमएल की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

समावेशी शिक्षा

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (C.W.S.N.)– विशेष आवश्यक वाले बच्चों का आशय ऐसे बच्चों से है, जिन्हें सामान्य बच्चों से अलग विभिन्न प्रकार की आवश्यकता होती है।

MGML शिक्षण प्रणाली में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को निम्नलिखित तरीकों से सीखने के समुचित अवसर प्रदान किया जाता है।

अ. इस पद्धति में मुकबधिर बच्चों को किसी प्रश्न के उत्तर देने में किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है। वह अपने गतिविधि के माध्यम से अपना मूल्यांकन स्वयं करता है।

ब. अधिगम विमंदित अथवा मानसिक विमंदित बच्चे जो कक्षा में पूरे बच्चों से हटकर रहते थे, वे इस पद्धति में समूह में बैठकर सभी बच्चों के साथ गतिविधि करते हैं। इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

स. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों के साथ गतिविधियाँ करते हैं, इससे उन्हें समानता का अनुभव होता है। वे तेजी से सीखते हैं।

द. MGML शिक्षक कुछ सावधानी बरतकर एम जी एम एल पद्धति से विशेष बच्चों को गतिविधि कराकर उनको सीखने के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध करा सकते हैं।

इ. जो बच्चा संकोची स्वभाव का अथवा मूकबधिर हो उसे भी वह समूह की गतिविधियों में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है।

बालिका शिक्षा

प्रश्न– MGML में लिंग भेद रहित शिक्षा कैसे ?

उत्तर– एम. जी. एम. एल. शिक्षण पद्धति सभी बच्चों को लिंग संबंधी भेद–भाव से रहित सीखने का अवसर प्रदान करती है।

1. एम. जी. एम. एल. में सभी बच्चे मिलजुलकर समूह में गतिविधि करते हैं चाहे वह बालक हो या बालिका।

2. इसमें बालक एवं बालिका को अलग–अलग नहीं बैठाया जाता, साथ ही इसमें कार्ड की सभी गतिविधियाँ सभी बच्चों को समान रूप से पूरी करनी पड़ती है।

इस तरह एम जी एम एल शिक्षण प्रक्रिया में लिंग भेद रहित शिक्षा की समुचित व्यवस्था है।

इस तरह एम जी एम एल शिक्षण पद्धति विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये समावेशी शिक्षा एवं बालिकाओं की शिक्षा से संबंधित समस्त मान्यताओं एवं पूर्वाग्रहों से रहित शिक्षा की समुचित व्यवस्था करती है।

00000

'' नारी पढ़ेगी, विकास गढ़ेगी।''

''शिक्षा है अनमोल रतन,
इसका हम करें जतन।''

19 शाला से जोड़ने के लिए बच्चों का मूल्यांकन

बच्चों को SRCT से शाला में लाने एवं शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु बच्चों का अंतिम मूल्यांकन किया जाएगा। इस हेतु एक समिति गठित की जाएगी जिनके द्वारा मूल्यांकन कार्य किया जाना है।

समिति का नाम – मूल्यांकन समिति

समिति के सदस्य –

1. संकुल शैक्षिक समन्व्यक
2. जिस स्कूल में बच्चे का नाम दर्ज है, उस स्कूल के प्रधान पाठक
3. अनुदेशक
4. बच्चों के नामांकित स्कूल के SMC के कोई दो सदस्य।

बच्चों का मूल्यांकन कैसे?

प्रथम मूल्यांकन :

बच्चों द्वारा पढ़े गए माइलस्टोन तक की गतिविधियों को देकर मूल्यांकन करना।

द्वितीय मूल्यांकन :

चूंकि 8 से 10 तक की आयु के बच्चों को 1 वर्ष के भीतर उनकी आयुनुरूप कक्षा का स्तर होना चाहिए। अतः नीचे प्रत्येक कक्षा के पाठ्यक्रम को विशेष प्रशिक्षण के मुताबिक दिया गया है।

- मूल्यांकन समिति इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए प्रश्नपत्र तैयार करेगी।

विषय	तीसरी का अंतिम मल्यांकन	चौथी का अंतिम मल्यांकन	पाँचवी का अंतिम मल्यांकन
गणित	1. जोड़ना–घटाना–4 अंकों तक हासिल सहित। 2. गुणा– 2 अंकों का हासिल के साथ। 3 अंकों का बिना हासिल के। 3. भाग–2 अंकों का 1 अंक की संख्या से।	1. 5 अंकों तक हासिल सहित जोड़–घटाना। 2. गुणा–3 अंकों का 2 अंकों से तथा 4 अंकों का 1 अंक से हासिल सहित। 3. भाग–3 अंकों का 2 अंकों से।	1. 6 अंकों तक हासिल के साथ जोड़ना–घटाना। 2. गुणा–3 अंकों का 3 अंकों से 4 अंकों का 2 अंक की संख्या से हासिल सहित। 3. भाग–4 अंकों का 2 अंकों से।

विषय	तीसरी का अंतिम मूल्यांकन	चौथी का अंतिम मूल्यांकन	पाँचवी का अंतिम मूल्यांकन
	4. आकृतियों की पहचान त्रिभुज, वर्ग, आयात। 5. 3 अंकों तक अंकों को शब्दों में व शब्दों को अंकों में लिखना। 6. स्थानीय मान, विस्तारित रूप। 7. समय का सामान्य ज्ञान	4. भिन्न को (समान हर वाले) जोड़ना। 5. परिमाप एवं क्षेत्रफल की सामान्य जानकारी। 6. 4 अंकों तक अंकों को शब्दों व शब्दों को अंकों में बदलना। 7. घंटा, मिनट, सेकेंड, दिन, सप्ताह माह, वर्ष की जानकारी।	4. लाभ–हानि की सामान्य जानकारी। 5. क्रय–विक्रय मूल्य की सामान्य जानकारी। 6. भिन्न को जोड़ना। 7. प्रतिशत की सामान्य जानकारी। 8. इबारती प्रश्नों के हल करना।
हिन्दी	1. कविता, कहानी को हाव–भाव के साथ पढ़ना। 2. मात्राओं का ज्ञान। 3. पढ़े हुए शब्दों से वाक्य बनाना। 4. श्रुत लेखन 5. कब,क्यों, कहाँ, कैसे प्रश्नों के उत्तर देना। 6. अनुच्छेद/पाठ को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाना। 7. स्वयं से 5 वाक्य लिखना। 8. व्याकरण में स्त्री, पुल्लिंग, विलोम शब्द आदि की सामान्य जानकारी।	1. किसी विषय पर अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाना। 2. किसी विषय पर 10 वाक्य लिखना। 3. किसी भी अनुच्छेद को पढ़कर उसे अपने शब्दों में बताना। 4. अनुच्छेद को पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखना। 5. पत्र–लेखन करना। 6. व्याकरण – कारक, विराम चिह्न, संज्ञा, सर्वनाम की सामान्य समझ।	1. पुस्तक को समझकर पढ़ना एवं उसका सारांश अपने शब्दों में व्यक्त करना। 2. अनुच्छेद को पढ़कर कब, कहाँ, क्यों आदि प्रश्न बनाना। 3. स्वयं के बारे में बोल एवं लिखना। 4. निबंध, आत्मकथा आदि लिखना। 5. व्याकरण – मुहावरा, वाक्यों के प्रकार, विशेषण, लोकोक्ति आदि। 6. बाल–पत्रिका, अखबार आदि पढ़ना।

विषय	तीसरी का अंतिम मूल्यांकन	चौथी का अंतिम मूल्यांकन	पाँचवी का अंतिम मूल्यांकन
पर्यावरण	1. अपने आसपास के वातावरण का सूक्ष्म अवलोकन करना। उदा. फूल, पत्तियाँ,पशु–पक्षी, खेत, कीड़े–मकोड़े, वृक्ष आदि। 2. इनकी विशेषताएँ बता पाना। 3. रूप,रंग विशेषताओं के आधार पर संकलन–वर्गीकरण कर सकें। 4. किसी भी विषय पर चिंतन कर निष्कर्ष निकाल सकें।	1. अवलोकन के बिंदुओं को लिख कर व्यक्त करें। 2. किसी विषय पर सर्वेक्षण करें। 3. विशेषताओं को लिख सकें। 4. प्रयोग कर सकें। 5. निष्कर्ष को लिखित रूप में व्यक्त कर सके।	1. परिवेश के साथ–साथ पदार्थ, खनिज, मानचित्र, ब्रह्मांड आदि के विषय में जानकारी। 2. मॉडल निर्माण करें।
अंग्रेजी	1. स्वयं का परिचय अंग्रेजी में दे सकें। 2. A to Z Capital एवं Small Letter को पढ़ लिख सकें।	1. अंग्रेजी के 10–15 शब्द पढ़ सकें।	1. अंग्रेजी में 3–4 रंगों के नाम वस्तुओं के 20–50 नाम बता सकें। 2. 3 एवं 4 अक्षर वाले अंग्रेजी शब्दों को पढ़ सकें।

टीप :

1. यदि कोई बच्चा तीसरी की दक्षताओं को पूरा कर लेता है। अंतिम मूल्यांकन में वह सफल हो जाता है तो वह कक्षा चौथी में जाएगा।
2. उपर्युक्त कॉलम में केवल दक्षताओं को लिखा गया है। मूल्यांकन समिति को इन दक्षतओं से संबंधित प्रश्न एवं गतिविधियाँ स्वयं बनानी होगी।
3. इसके साथ–साथ चित्रकला, संगीत, व्यायाम, योग, मूर्तिकला, व्यवहार, नैतिक मूल्य, स्वच्छता आदि का मूल्यांकन करें।
4. अंत में उस बच्चे के प्रोफाइल में अंतिम मूल्यांकन से संबंधित जानकारियों को भरें। ताकि उस बच्चे की संपूर्ण जानकारी से मुख्य शाला के शिक्षक अवगत हो सकें।

000000

20 चाइल्ड प्रोफाइल

प्र. चाइल्ड प्रोफाइल क्या है?

उ. चाइल्ड प्रोफाइल एक ऐसी फाइल है, जिसमें बच्चे के विषय में सम्पूर्ण जानकारी लिखा रहेगा। इसमें बच्चे का नाम, पिता का नाम, माता का नाम, इसकी रूचि इत्यादि के बारे में जानकारी उपलब्ध होगी।

प्र. चाइल्ड प्रोफाइल बनाना क्यों आवश्यक है?

उ. चूंकि प्रत्येक बच्चा विशेष होता है। प्रत्येक बच्चे की अपनी क्षमता होती है तथा उसमें अनेक विशेषताएं होती है। साथ ही उसमें कुछ कमियां भी हो सकती हैं। जब तक शिक्षक बच्चों की विशेषताओं एवं कमियों को पहचानेंगे नहीं। तब तक उनके लिए विशेष रणनीति नहीं बना पायेंगे। चाइल्ड प्रोफाइल के अभाव में शिक्षक बच्चों के कौशलों के विकास हेतु योजना नहीं बना पायेंगे। न ही बच्चों की कमियों के निदान हेतु उपचारात्मक योजना बना पायेंगे।

प्र. एस.आर.टी.सी./एस.एन.आर.टी.सी. में चाइल्ड प्रोफाइल की आवश्यकता क्यों है?

उ. एस.आर.टी.सी/एस.एन.आर.टी.सी में अध्ययनरत बच्चों में अनेक कौशल विद्यमान रहते हैं। ये बच्चे पढ़ाई छोड़ने पश्चात् रोजी–रोटी के कार्य में ज्यादातर संलग्न रहते हैं। ऐसे बच्चे ट्रेनों में गा–बजाकर,करतब दिखाकर, हॉटलों में काम करना, झिल्ली पन्नी बिनना इत्यादि कामों संलग्न रहते हैं। इन बच्चों का कला पक्ष बहुत ही मजबूत होता है। काम करने वाले बच्चों को हिसाब–किताब का अच्छा ज्ञान होता है। साथ ही इन बच्चों की कुछ कमजोरियाँ भी होती हैं।कुछ बच्चे नशाखोरी, लड़ाई–झगड़ा आदि भी करते है। अनुदेशक प्रत्येक बच्चे का प्रोफाइल तैयार करके बच्चों के कौशलों के विकास, उनकी विशेषताओं को प्रोत्साहन एवं कमियों के लिए उपचारात्मक योजना तैयार करेंगे।

प्र. चाइल्ड प्रोफाइल कैसे बनाएँ?

उ. चाइल्ड प्रोफाइल में प्रत्येक बच्चे का निम्न जानकारी रहेगा–

1. बच्चे का नाम
2. माता–पिता का नाम।
3. आयु एवं जन्म तिथि?

4. शाला से बाहर, बच्चों की किस श्रेणी में आता है?

(अ) शाला त्यागी (ब) अप्रवेशी (स) अध्ययन त्यागी?

5. यदि शाला त्यागी है, तो अंतिम कक्षा जहां से पढ़ाई छोड़ा?

6. अध्ययन त्यागी है, तो कितने दिनों से अनुपस्थित है?

7. शाला अप्रवेशी है, तो बच्चे को शाला में प्रवेश क्यों नही कराया गया?

8. बच्चा शाला त्यागी या अध्ययन त्यागी है तो शाला जाना क्यों छोड़ दिया?

9. बच्चा आर.टी.सी/एन.आर.टी.सी केन्द्र में आने के पहले किस तरह के काम संलग्न था?

10. बच्चे की पारिवारिक स्थिति कैसी है?

11. बच्चे का परिवेश कैसा है?

12. बच्चे की अभिरूचि कैसी है?

13. बच्चे की कला पक्ष की जानकारी?

14. बच्चे का पसंदीदा खेल?

15. बच्चा किस तरह का गाना पसंद करता है?

16. बच्चा किस तरह की फिल्में देखता है?

17. बच्चा अपनी भावनाओं को प्रगट कर पाता है या नहीं?

18. बच्चे का माइलस्टोन, प्रत्येक विषय में –

1. हिन्दी 2.गणित 3.अंग्रेजी

19. बच्चे की कठिनाइयाँ क्या–क्या हैं?

20 बच्चे का किसी विद्यालय में नाम दर्ज कराया गया है? हाँ /नहीं।

21. बच्चे की बोली/भाषा क्या है?

22. बच्चे की विशेष आवश्कता की श्रेणी हाँ/नहीं। यदि हाँ तो किस श्रेणी का।

23. इस माह पूर्ण माइलस्टोन एवं प्राप्त ग्रेड।

टीप :–

अनुदेशक प्रोफाइल में कुछ खाली पन्ने छोंड़े जिसमें समय–समय पर बच्चे के सम्बध में अपना अभिमत लिखें।

000000

21 फॉलोअप

mn~ns';%&

1. 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों का नामांकन व ठहराव सुनिश्चित करना।
2. SRTC केन्द्र और समुदाय में परस्पर सहयोग से बच्चों को शाला में नियमित बनाये रखना।
3. SRTC से शाला में दर्ज बच्चों को शाला में नियमित बनाए रखना।
4. बच्चा नियमित स्कूल जाते हुए आयु एवं स्तरानुरूप शिक्षा प्राप्त करे।
5. बच्चों में शिक्षा के प्रति रूझान पैदा करना।

आवश्यक सामग्री :– व्हाइट बोर्ड/श्यामपट, मार्कर पेन, चॉक, डस्टर।

शिक्षण विधिः– प्रश्नोत्तर एवं व्याख्यान विधि।

प्र.1 फॉलोअप क्या है ?

प्र.2 SRTC केन्द में आयु के अनुसार दक्षता पूर्ण करने के पश्चात् आगे की शिक्षा के लिए आप क्या करना चाहेंगे ?

प्र.3 दक्षता प्राप्त SRTC के बच्चों को शाला में दर्ज कराने के बाद कुछ बच्चे SRTC केन्द्र में ही रहना चाहते हैं ?

प्र.4 मुख्यधारा से जुड़े बच्चे नियमित अध्ययन कर रहे हैं या नहीं इसकी जानकारी के लिए विभिन्न स्तरों पर किन–किन लोगों की भूमिका होनी चाहिए ?

प्र.5 SRTC से शाला में दर्ज बच्चों की नियमित उपस्थिति बनाये रखने में आपकी क्या भूमिका होगी ?

QkWyksvi D;k gS\

QkWyksvi dk vFkZ :– फॉलोअप का अर्थ है, मॉनिटरिंग और उचित क्रियान्वयन। फॉलोअप कहने से तात्पर्य केन्द्र का व्यवस्था प्रबंधन ठीक से हो रहा है या नहीं? अनुदेशक ठीक से शिक्षण करा पा रहे हैं या नहीं? SRTC के बच्चे ठीक से सीख पा रहे हैं या नहीं? बच्चों का मेन स्टीमिंग हो पा रहा है या नहीं? मुख्य धारा से जुड़ने के पश्चात् शाला नियमित आते हुए स्तरानुरूप प्रगति कर पा रहे हैं या नहीं? यही देखना ही फॉलोअप है।

vkb;s ppkZ djsa :–

ACK संतुलित बच्चे SRTC में नामांकित नियमित अध्यापन कर रहे ऐसे बच्चे जो स्तरानुरूप पूर्ण दक्षता प्राप्त कर लिए हैं। ऐसे बच्चे जिन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में लाया गया है, उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित हो।उसके लिए क्या किया जा सकता है ? ACK संतुलित बच्चों की स्तरानुरूप अध्यापन कार्य के लिए नियमित उपस्थिति बनाये रखने के लिए जिले के अधिकारी, विकासखंड के अधिकारी, संकुल स्तरीय अधिकारी, शिक्षक, अनुदेशक, जनप्रतिनिधि एवं समुदाय अपने कर्तव्यों का निर्वहन इस प्रकार से करेंगे।

उपरोक्त चार्ट के अनुसार जिले एवं विकासखंड के एवं संकुल स्तर के अधिकारी समय–समय पर SRTC केन्द्रों एवं शालाओं का अवलोकन करेंगे। SRTC से मूलशाला में नामांकित बच्चों की जानकारी लेंगे।

जैसे :–

1. बच्चे नियमित रूप से शाला जा रहे हैं या नहीं?
2. अध्ययन में नियमित रूचि ले रहे हैं या नहीं?
3. गति एवं स्तर के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या नहीं ?

blds fy,

1. प्रतिमाह प्रत्येक स्तर पर समीक्षा बैठक की जायेगी।
2. कौन–कौन सी कठिनाइयाँ आ रही हैं, का चिह्नांकन करेंगे।
3. योजना बनाकर कठिनाईयों का निराकरण अपने स्तर पर करेंगे।
4. अनुदेशकों को अच्छे चल रहे SRTC का शैक्षिक भ्रमण कराई जावे।

dk;Z;kstuk :–

प्र.1 आप SRTC से शाला में नामांकित बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़े रखने के लिए फॉलोअप योजना तैयार कीजिए।

00000

22 SRTC के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना (Main Starming)

उद्देश्य –

1. आयु एवं रुचि के अनुरूप आनंददायी शिक्षा प्रदान करना।
2. कम समय में बच्चों को स्तरानुरूप शिक्षा ग्रहण करने हेतु तैयार करना।
3. आकर्षक शैक्षिक वातावरण का निर्माण करके शिक्षा के प्रति रूझान पैदा करना।
4. आयु के अनुसार कक्षा और कक्षा के अनुरूप ज्ञान कराते हुए मुख्य धारा से जोड़ना एवं ठहराव करना तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करना।
5. SRTC के विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना।

आवश्यक सामग्री :–व्हाइट बोर्ड, श्यामपट्ट, मार्कर, चॉक, डस्टर 5, ड्राईंग शीट, स्केच पेन।

शिक्षण विधि :– समूह चर्चा

गतिविधि :– प्रशिक्षक अनुदेशकों के चार समूह बनाएँगे। 4 अलग–अलग पर्चियों में विषय लिखकर मोड़कर रख देंगे। प्रत्येक समूह का लीडर आकर एक पर्ची उठाएँगे। प्राप्त विषय पर समूह चर्चा करके प्राप्त बिंदुओं को ड्राईंग शीट पर लिखेगें।

चर्चा के बिंदु निम्नांकित होंगे –

1. शाला से बाहर (ACK अनबैलेंस) बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए आप क्या–क्या कदम उठाएँगे?
2. बच्चों को शिक्षा के मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कैसे आकर्षित करें?
3. SRTC केन्द्र से बच्चे नियमित शाला में प्रवेश लेने के पश्चात् कौन–कौन समस्याएँ आ सकती हैं?आप इसका समाधान कैसे करेंगे?
4. SRTC केन्द्र से शाला में प्रवेशित बच्चों को शाला में नियमित कैसे बनाए रखेगें?

समूह चर्चा के पश्चात् प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। प्रशिक्षक मुख्य बिंदुओं को व्हाइट बोर्ड/श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे। सभी समूह की प्रस्तुती के पश्चात् प्रशिक्षक चर्चा को आगे बढ़ाते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे।

SRTC के बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए क्या–क्या कदम उठाएँगे:–

अ. बच्चों का चिह्नांकन, नामांकन, ठहराव की व्यवस्था करेंगे।

ब. स्कूल के बच्चों और SRTC से प्रवेशित बच्चों के बीच तालमेल बिठाएँ।

स. शालेय परिसर की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देगें।

द. शालेय परिवेश और SRTC के परिवेश में ज्यादा अंतर न हो।

इ. स्कूल के बच्चों के साथ तालमेल न बिठा पाने के क्या–क्या कारण हो सकते हैं? इसके निदान के लिए कौन–कौन से कदम उठाए जा सकते हैं।

ई. शालेय परिवेश और SRTC परिवेश में ज्यादा अंतर न हो।

च. SRTC के अनुदेशकों को प्रयास करना चाहिए कि स्कूल के सभी शिक्षक SRTC के बच्चों को जाने।

छ. SRTC के बच्चों को विश्वास दिलाए कि वे सामान्य बच्चों की तरह शाला में शिक्षण कार्य कर सकें।

ज. अधिक से अधिक समय बच्चों को देवें।

मूल्यांकन समिति :–

बच्चा मूल शाला में जाकर पढ़ने लायक सीख गया। इस स्थिति में पाँच सदस्यों की एक टीम उसका मूल्यांकन कर प्रमाण–पत्र प्रदान करेंगे। इस समिति में दो प्रधानाध्यापक, 2 सी.ए.सी. एवं एक संकुल प्रभारी होंगे। इस समिति के प्रभारी संबंधित संकुल प्रभारी होंगे।

अपने SRTC केन्द्र के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए एक कार्य योजना तैयार करें –

क्र.	क्या–क्या कदम उठाएँगे	वातावरण आकर्षित कैसे बनाए	बालिकाओं की विशेष सुविधा के लिए क्या करे।	अनुदेशक और बच्चों के बीच संबंध कैसा हो।	जिम्मेदारी

00000

23 व्यावसायिक शिक्षा

उद्देश्य :

1. अधिकारियों को व्यावसायिक शिक्षा से परिचित करना।
2. SRTC में आने वाले बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा के महत्व से परिचित कराना।
3. व्यावसायिक शिक्षा संबंधी केन्द्रों की जानकारी देना।
4. व्यावसायिक शिक्षा हेतु सहयोग देने के लिए प्रेरित करना।

आवश्यकता क्यों ?

1. SRTC में आने वाले बच्चे अक्सर कामकाजी होते हैं।
2. ऐच्छिक या अनैच्छिक रूप से ये बच्चे कार्य में लगे रहते हैं।जैसे :– झिल्ली–पन्नी बीनना, होटल, ढाबों में कार्य, रेल्वे प्लेटफार्म, बस स्टैण्ड या अन्य जगहों पर कलाबाजी दिखाना इत्यादि।
3. कई बच्चों के परिवार आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं।ये अपने बच्चों के परिवार के लिए आय के स्रोत मानकर इनकी शिक्षा के प्रति उदासीन हो जाते हैं।
4. ऐसे बच्चों में उम्र से अधिक कार्य करने की रुचि एवं क्षमता ज्यादा होती है व पढ़ाई से दूर होने लगते हैं।

प्रयास :–

1. ऐसे बच्चों को लघुउद्योग, कुटीर उद्योग, हस्तकला के कार्य, मैकेनिकल कार्य की जानकारी शिक्षा के साथ दी जाए।
2. इन्हें सृजनात्मक क्षमता विकास के प्रति शालाओं में प्रारंभिक जानकारी दे दी जाए तो उन्हें आगे शिक्षण के पश्चात् स्वरोजगार का जरिया मिल जाएगा।
3. ऐसे प्रयास से निश्चित तौर पर इन बच्चों में शिक्षा के प्रति एक विश्वास का भाव जागृत होगा।

समुह–1 खनिज आधारित उद्योग

1. कुटीर कुम्हारी उद्योग

समूह – 2 वनाधारित उद्योग

1. कागज निर्माण।
2. कत्था निर्माण।
3. गोंद और रेजिन निर्माण।
4. लाख निर्माण।
5. कुटीर. दियासलाई उद्योग, पटाखे और अगर बत्ती निर्माण।
6. बाँस और बेंत कार्य।
7. कागज के प्याले,तस्तरी, झोले और कागज के डिब्बों का निर्माण।
8. कापियों का निर्माण, जिल्द साजी, लिफाफा निर्माण रजिस्टर और कागज से बनाई जाने वाली अन्य लेखन सामग्रियाँ
9. खस पट्टी और झाड़ू निर्माण।
10 वनोत्पादों का संग्रह प्रशोधन और पैकिंग।
11 फोटी जड़ना
12 जूट उत्पादों का निर्माण(रेशा उद्योग के अंर्तगत)

समूह– 3 कृषि आधारित और खाद्य उद्योग

1. अनाज,दाल ,मसाला, चटपटे, मसाले आदि का प्रशोधन पेंकिग और विपणन।
2. नूडल निर्माण
3. विद्युत चालित आटा चक्की का उपयोग संबंधी कार्य
4. दलिया निर्माण।
5. धान/चावल छिल्का उतारने की छोटी ईकाई
6. ताड़–गुड़ निर्माण और अन्य ताड़ उत्पाद उद्योग।
7. गन्ना, गुड़, और खांड सारी निर्माण।
8. भारतीय मिष्ठान्न निर्माण।
9. रसवंती – गन्ना रस पान इकाई
10 मधु मक्खी पालन।
11 अचार सहित फल और सब्जी का प्रशोधन परीक्षण एवं डिब्बा बंदी।
12 घानी तेल उद्योग
13 मेथाल तेल
14 नारियल जटा के अलावा रेशा से बनी वस्तुओं का निर्माण
15 औषधि कार्यों के लिए जड़ी बुटियों का संग्रह
16 मक्का और रागी का प्रशोधन
17. काजु प्रशोधन
18. पशु चारा एवं मुर्गी चारा निर्माण,

समूह– 4 बहुलक और रसायन आधारित उद्योग

1. कुटीर साबुन उद्योग।
3. रबर की वस्तुओं का निर्माण।
4. रेग्जिन, पीवीसी से बने उत्पादन।
5. मोमबत्ती कपूर और मोहर वाली मोम का निर्माण।
6. प्लास्टिक की पैकिंग व प्लास्टिक की वस्तुओं का निर्माण।
7. बिन्दी निर्माण
8. मेंहदी निर्माण
9. शैम्पू निर्माण।
10 केश तेल निर्माण।
11 डिटर्जेंट और धुलाई पावडर निर्माण।

समूह–5 इंजीनियरिंग और गैर परंपरागत उर्जा

1. बढ़ईगिरी।
2. लोहारी।
3. एल्युमिनियम के घरेलू बर्तनों का उत्पादन।
4. गोबर और अन्य उत्पादों का पुनः उपयोग।
5. कागज पिन क्लिप, सेफ्टी पिन आदि का निर्माण।
6. केंचुआ पालन तथा कचरा निपटारा।
7. सजावटी बल्ब, बोतल, ग्लास आदि का निर्माण।
8. छाता उत्पादन।
9. सौर तथा पवन उर्जा उपकरण निर्माण।
10 हस्त निर्मित पीतल के बर्तनों का निर्माण।
11. हस्त निर्मित ताँबे के बर्तनों का निर्माण।
12. हस्त निर्मित काँसे के बर्तनों का निर्माण।
13. पीतल, ताँबे और काँसे की अन्य वस्तुओं का निर्माण।
14. रेडियो का निर्माण
15 कैसेट प्लेयर का निर्माण।
16 वोल्टेज स्टेपलाइजर का उत्पादन।
17. इलेक्ट्रानिक घड़ियों और अलार्म घड़ियों का निर्माण।
18 लकड़ी पर नक्काशी और कलात्मक फर्नीचर निर्माण।
19 मोटर वाइंडीग
20 तार की जाली बनाना
21 लोहे की झझरी का निर्माण

22 ग्रामीण यातायात वाहन जैसे हाथ गाड़ी, बैल गाड़ी छोटी नाव, दुपहिया साइकिल, रिक्शा, मोटर युक्त गाड़ियों का निर्माण

23 संगीत साजों का निर्माण

समूह–6 वस्त्रोद्योग(खादी को छोड़कर)

1. लोकवस्त्र का निर्माण
2. होजियरी
3. सिलाई और सिली–सिलाई पोशाक तैयार कराना
4. छींटाकारी।
5. खिलौना और गुड़िया निर्माण
6. धागे का गोला,ऊनी तथा लच्छी निर्माण
7. कसीदा कारी
8. शल्यचिकित्सीय पट्टी का निर्माण
9. स्टोव की बत्तियां
10. दरी निर्माण

11 बुनाई, पारंपरिक पोशाकों से संबंधित कार्य

12 शाल बुनाई

समूह–7 सेवा उद्योग

1 धुलाई

2. नाई
3. नलसाजी
4. बिजली की वायरिंग और घरेलू इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत
5. डीजल इंजनों, पम्प सेटों आदि की मरम्मत
6. टायर वल्कली करण।

8. लाउडस्पीकर, ध्वनि प्रसारक, माइक आदि ध्वनी प्रणालियों को किराये पर देना।

9. बैटरी भरना

10 कला फलक चित्रकारी

11. साइकिल मरम्मत की दुकानें

12 राजगीर

13 बैण्ड मण्डली।

14 केवल गोवा के लिए मोटर युक्त स्थानीय नाव।

15 टैक्सी के रूप में चलने वाली मोटर सायकल।

16 संगीत वाद्य

17 ढाबा (शराब रहित)

18 चाय की दुकान

19 आयोडिन युक्त नमक निर्माण।

क्र	सेक्टर कोर्सेस	MES की संख्या	क्र.	सेक्टर कोर्सेस	MES की संख्या
1	आटोमेटिक रिपेयर	18.	25	सिक्युरिटी	9
2	बैंकिंग एवं एकाउन्टींग	01	26	वूड वर्क	02
3.	ब्युटी कल्चर एण्ड हेयर ड्रेसिंग	09	27	मिडिया	03
4	कारपेट	22	28	फूड प्रोसेसिंग एण्ड प्रीजरवेशन	01
5	केमीकल	14	29	लेदर एण्ड स्पोटर्स गुडस	12
6	इलेक्ट्रीकल	18	30	एग्रीकल्चर	28
7	फेब्रिकेशन	11	31	ट्रेवल्स एंड टुरिज्म	09
8	गारमेन्ट मेकिंग	98	32	साफ्ट स्कील्स	03
9	फैशन डिजाइन	21	33	कूरियर एंड लॉजिस्टिकस्	06
10	जैम एण्ड ज्वेलरी	20	34	इन्श्योरेंस	03
11	हास्पिटलिटी	33	35	जूट डाइवर्सिफाईड सेक्टर	20
12	इंफोरमेशन एण्ड		36	जूट प्रोडक्ट सेक्टर	06
	कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी	28	37	फिशरिंग एंड एलाइड सेक्टर	16
13	खादी	08	38	फायर एंड सेफ्टी इंजीनियरिंग	02
14	मेडिकल एण्ड नर्सिंग	25	39	बिजनेस एंड कॉमर्स	08
15	प्लास्टिक प्रोसेसिंग	10	40	मटेरियल मैनेजमेंट	05
16	प्रिटींग	10	41	पेपर प्रोडक्ट्स	03
17	प्रोसेस इन्ट्रुमेंटेशन	7	42	इंडट्रियल इक्ट्रिकल	03
18	प्रोडक्शन एण्ड मैनूफेक्चरिंग	08	43	सेरिकल्चर	26
19	रेफ्रिजरेशन एंड एयर कंडिशनिंग	06	44	पोल्ट्री	24
20	रिटेल	02			
21	टॉय मेंकिंग	07			
22	इंडियन स्वीट्स स्नेक्स एण्ड फूड	35			
23	पेंट	06			
24	कंस्ट्रक्शन	19			

00000

''समस्याएँ हमारी सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।''

24 माइल स्टोन

हिन्दी

माइलस्टोन–1 (र, क, ल, ह, आ, ा)

1. सरल परिचित कविता / कहानी सुनकर समझना व दोहराना ।
2. पढ़े हुए चित्र शब्द के वर्ण को स्वतंत्र रूप से पढ़ना ।
3. पढ़े हुए वर्ण को जोड़कर पढ़ना ।
4. पढ़े हुए शब्द को जोड़कर वाक्य को पढ़ना ।
5. व्यावसायिक कौशलों का विकास ।
6. मानवीय मूल्यों का विकास ।
7. चित्रों के बिंदुओं को मिलाना ।

माइल स्टोन –02 (न, ज, स, त, ए, `)

1. सरल परिचित कविता/ कहानी को सुनकर समझना और दोहराना ।
2. दिए हुए चित्र शब्द को वर्ण को स्वतंत्र रूप से पढ़ना । पढ़े हुए 10 वर्णो एवं 2 मात्राओं को पहचानना ।
3. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को अलग करके पढ़ना ।
4. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों जोड़कर पढ़ना ।
5. पढ़े हुए शब्दों को जोड़कर सरल वाक्य के रूप में पढ़ना ।
6. पहचाने हुए वर्णों को लिख पाना ।
7. चित्रों के बिंदु मिलाना ।
8. व्यावसायिक कौशलों का विकास ।
9. मानवीय मूल्यों का विकास ।

माइल स्टोन–03 (म, प, ग, य, इ, ई, द, च, ब, ख, अ, ऐ, ि ी, ै)

1. सरल परिचित कविता/ कहानी को सुनकर समझना व हावभाव सहित दोहराना।

2. दिए हुए चित्र शब्द के वर्णों को स्वतंत्र रूप से पढ़ना व पढ़े हुए 22 वर्णों एवं 5 मात्राओं को पहचानना।
3. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को अलग करके पढ़ना।
4. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को जोड़कर पढ़ना।
5. पढ़े हुए शब्दों को जोड़कर सरल वाक्य के रूप में पढ़ना।
6. पहचाने हुए वर्णों एवं शब्दों को लिखना।
7. स्वतंत्र चित्र बनाना।
8. व्यावसायिक कौशलों का विकास।
9. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–04 (भ, ट, घ, व, उ, ऊ, थ, ठ, फ, झ, छ, ओ, औ, ु, ू ो, ै,)

1. परिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप एवं संवाद को सुनकर समझना।
2. कब, क्यों, कहाँ के प्रश्नों का उत्तर देना व प्रश्न बना पाना।
3. सरल व छोटे वाक्यों का प्रयोग करना।
4. पढ़े हुए शब्दों के वर्णों एवं मात्राओं को स्वतंत्र परिस्थितियों में पढ़ना व उपयोग करना।
5. पढ़े हुए अक्षर से नए शब्द बनाना।
6. आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करना।
7. दिए हुए चित्र शब्द के वर्णों को स्वतंत्र रूप में पढ़ना, पढ़े हुए 35 वर्णो एवं 9 मात्राओं को पहचानना।
8. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को अलग करके पढ़ना।
9. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को जोड़कर पढ़ना।
10. पढ़े हुए शब्दों को जोड़कर सरल वाक्य के रूप में पढ़ना।
11. पहचाने हुए शब्दों व वाक्यों को लिखवाना।
12. स्वतंत्र चित्र बनाकर रंग भरना।
13. व्यावसायिक कौशलों का विकास।
14. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–05 (ध, ड, ढ, ण, ा, अं, त्र, ज्ञ, क्ष, ञ ड़, अः, ँ, :)

1. परिचित परिस्थिति में हुए संवाद, कविता / कहानी को सुनकर समझना व अपने शब्दों में व्यक्त करना।
2. सरल आदेश / निर्देश को समझकर पालन करना।
3. कब, क्यों, कहाँ, कौन का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछना।
4. सरल व छोटे वाक्यों का प्रयोग करना।
5. पढ़े हुए शब्दों के वर्णों एवं मात्राओं को स्वतंत्र परिस्थितियों में पढ़ना व उपयोग करना।
6. आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करना।
7. दिए हुए चित्र शब्द के वर्णो को स्वतंत्र रूप से पढ़ना एवं पढ़े हुए 47 वर्णों व 11 मात्राओं को पहचानना।
8. पढ़े हुए अक्षर से नए शब्द बनाना।
9. दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को जोड़कर पढ़ना।
10 दिए हुए चित्र शब्द के ध्वनियों को अलग करके पढ़ना।
11. पढ़े हुए शब्दों को जोड़कर सरल वाक्य के रूप में पढ़ना।
12. पहचाने हुए शब्दों व वाक्यों को लिखना।
13. स्वतंत्र चित्र बनाकर रंग भरना।
14. व्यावसायिक कौशलों का विकास ।
15. मानवीय मूल्यों का विकास ।

माइलस्टोन 06 (ा, ऋ, श्र, ङ, ढ़, ृ, बारह खड़ी)

1. सरल कविता / कहानी सुनकर समझना व अपने शब्दों में सुनाना।
2. सरल आदेश / निर्देश को सुनकर समझना व पालन करना।
3. किसी भी चित्र को देखकर कुछ शब्दों में बोल पाना।
4. आदर सूचक शब्दों का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करना।
5. दिए गये चित्र शब्द कार्डों से बने सरल वाक्यों का पढ़ना व समझना।
6. छपे हुए छोटे सरल अंशों को पढ़कर समझना।

7. पढ़े हुए अक्षरों, मात्राओं का उपयोग करते हुए नया शब्द व सरल वाक्य लिख पाना।
8. लिख चुके वर्णों, शब्दों व सरल वाक्यों को सुनकर लिख पाना।
9. वर्ण माला को देवनागरी लिपि के क्रम से पढ़ना।
10. बारह खड़ी को शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना व लिखना।

माइल स्टोन 07 अर्धाक्षर

1. सरल परिचित/अपरिचित कविता/कहानी को सुनकर समझना व हाव–भाव के साथ दोहराना।
2. सजातीय व विजातीय अर्धाक्षर को पहचानना।
3. कविता/कहानी में आये कठिन शब्दों के अर्थ को समझ पाना।
4. कविता/कहानी को देखकर लिख पाना व वचन समझना।
5. पढ़कर समझे हुए शब्दों का विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग कर पाना।
6. स्त्रीलिंग व पुर्लिंग की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकना।
7. सर्वनाम वाले सामान्य वाक्यों को पढ़कर समझना।
8. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
9. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइलस्टोन 08 रकार

1. सरल परिचित/अपरिचित, कविता/कहानी को सुनकर समझना व हाव–भाव के साथ दोहराना।
2. बोली अथवा लिखी गई संक्षिप्त सामग्री के घटनाक्रम को क्रमिक ढंग से पुनः स्मरण करना।
3. रकार(र्, ्र, ृ) को शब्दों के साथ उपयोग करके पढ़ना व समझना।
4. सजातीय व विजातीय अक्षरों से बने शब्दों को पढ़ सकना।
5. वाक्यों का सुलेख व श्रुत लेख कर पाना।
6. तीनों काल का प्रयोग वाक्यों मे करके पढ़ना व लिखना।
7. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
8. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइलस्टोन 09

1. सरल परिचित/अपरिचित कविता को सुनकर समझना व हाव–भाव के साथ दोहराना।
2. अनुनासिक(ँ) अनुस्वार(ं) को पहचान कर शब्दों के साथ उपयोग कर पाना।
3. शरीर के अंगों व कार्यों के बारे में जानना।
4. अपने आस–पास की सफाई में जैसे– गली, सड़क, नल, नाली आदि सहभागिता कर सकना।
5. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
6. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइलस्टोन 10

1. सरल परिचित/अपरिचित कहानी को सुनकर समझना व अपने शब्दों में व्यक्त कर सकना।
2. उपसर्ग, प्रत्यय लगाकर सरल शब्द बना सकना। विभक्ति(ने,का,के,की) का प्रयोग करके वाक्य बनाना।
3. स्वच्छ व संतुलित भोजन के बारे में जानना।
4. भोजन को स्वच्छ रखने हेतु उचित रख–रखाव के बारे में जानना और भोजन के महत्व को समझना।
5. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
6. मानवीय मूल्यों का विकास।
7. दिये हुए अंश का सुलेख व श्रुत लेख कर सकना।

माइस्टोन–11

1. परिचित/अपरिचित चित्र कथा को पढ़कर व देखकर संवादों को समझना।
2. पढ़े व सुने हुए संवादो को हाव–भाव के साथ अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
3. ष, श,स, ड, ङ, ढ़, ढ, ँ, ं, /, ॒
4. चित्र कथा में आये शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष में देख कर अपने शब्द भंडार से बढ़ाना।

5. चित्र कथा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना व प्रश्न बना पाना।
6. राह चलते देखे, सूचना, विज्ञापन को पढ़ पाना।
7. दिए गए शब्द व चित्र से कहानी/ कविता बना पाना।
8. कारक (में, पर, से, के, व्दारा, के लिए) प्रयोग कर सकना।
9. शब्द खेल अंतिम ध्वनि से संबंधित अंताक्षरी बता पाना।
10. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार विचार को लिखित में व्यक्त करना।
11. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
12. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन –12

1. परिचित/अपरिचित नाटक को देखकर एवं पढ़कर संवादों को समझना।
2. पढ़े व सुने हुए संवादों को हावभाव के साथ अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
3. नाटक में आए शब्दों के समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोष में देखकर अपने शब्द भंडार को बढ़ाना।
4. अर्धाक्षर व संयुक्ताक्षर वाले शब्दों व वाक्यों का शुद्ध उच्चारण व श्रुतलेख कर पाना।
5. नाटक से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना व प्रश्न बना पाना।
6. स्वतंत्र रूप से अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना।
7. दिए गए शब्द व चित्र से कहानी /कविता/नाटक बना पाना।
8. शब्द खेल अंतिम ध्वनि से संबंधित अंताक्षरी बता पाना।
9. सर्वनाम, लिंग तथा कारक (व्दारा, ने, का, के, की, को) का प्रयोग कर पाना।
10. क्रिया शब्दों का पहचान एवं वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
11. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
12. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइलस्टोन–13

1. परिचित/अपरिचित कविता को सुनकर, पढ़कर समझना व हावभाव के साथ व्यक्त करना।

2. कविता में आए शब्दों के समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोश में देखकर अपने शब्द भंडार को बढ़ाना।
3. कविता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना व प्रश्न कर सकना।
4. स्वतंत्र रूप से अपने विचार लिखित में व्यक्त करना।
5. दिए गए शब्द व चित्र से कविता/कहानी/नाटक बना पाना।
6. शब्द खेल खेलना ।
7. विराम चिह्न (,) (।) कारक (हे, अरे) का प्रयोग कर पाना।
8. तुकबंदी शब्दों को मिलाकर कविता बनाना।
9. समान तथा आदर्शसूचक वाक्य में अंतर को समझ पाना।
10. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
11. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–14

1. निबंध को पढ़कर समझना व हावभाव के साथ क्रमिक रूप से व्यक्त करना।
2. निबंध में आए शब्दों के समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोश में देखकर अपने शब्द भंडार को बढ़ाना।
3. निबंध से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देना व प्रश्न बना सकना।
4. दिए गए विषय पर लगभग 10 वाक्य लिख पाना।
5. वाक्यांश से एक शब्द बना पाना।
6. वचन को समझना ।
7. द्विरूक्ति – जैसे – दो – दो, साथ–साथ आदि शब्द बनाना ।
8. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार लिखित में व्यक्त करना।
9. शब्द खेल खेलना।
10. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
11. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–15

1. परिचित/अपरिचित डायरी सुनकर समझना।
2. डायरी सुनकर अपने शब्दों में व्याख्या कर पाना।
3. डायरी को धारा प्रवाह के साथ पढ़ना और बोल पाना।
4. डायरी के शब्दों का भावार्थ, चित्रमय शब्दकोश से पढ़कर शब्द भंडार बढ़ाना।
5. डायरी के अंशों को विराम चिह्नों के साथ प्रयोग कर पाना व श्रुत लेखन करना।
6. निर्देशानुसार डायरी लेखन का कार्य कर पाना।
7. डायरी से संबंधित सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
8. क्योंकि/ चूँकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
9. संबंधित अनुच्छेद कार्डों, कॉमिक्स, पोस्टर आदि को पढ़ना।
10. संज्ञा की परिभाषा देते हुए संज्ञा शब्दों को अलग कर पाना।
11. सर्वनाम की परिभाषा देते हुए सर्वनाम शब्दों को अलग कर पाना।
12. मानचित्र के माध्यम से जिले एवं प्रदेश की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकना।
12. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
13. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–16

1. परिचित/अपरिचित परिस्थितियों में आत्मकथा का वर्णन सुनकर समझना।
2. सुने हुए आत्मकथा को शुद्ध उच्चारण तथा धारा प्रवाह के साथ पढ़ सकना।
3. पदार्थ, खनिज पदार्थ और उद्योग धंधों के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त करना।
4. आत्मकथा के अनुसार क्योंकि, चूँकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
5. आत्मकथा के अनुसार प्रश्न बना पाना।
6. आत्मकथा में आए शब्दों का समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोश से पढ़कर अपने शब्द भंडार में वृद्धि करना।
7. निर्देशानुसार चित्र बनाना।

8. संबंधित बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पुस्तक, अनुच्छेद, विवरण, पोस्टर, कार्टून आदि पढ़ना।
9. लिंग, मुहावरा, वाक्यों के प्रकार, सामान्य, प्रश्नवाचक (?), सकारात्मक, नकारात्मक को पहचान पाना।
10. समानोच्चारित शब्दों का प्रयोग कर पाना।
11. उपसर्ग एवं प्रत्यय का प्रयोग कर पाना।
12. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
13. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–17

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में सुने हुए कविता को सुनकर समझना व कविता के माध्यम से प्रदूषण की सामान्य जानकारी ।
2. सुने हुए कविता को हावभाव के साथ दोहराना।
3. कविता में आए हुए शब्दों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाना।
4. परिचित कविता को आरोह–अवरोह के लय के साथ पढ़ पाना।
5. कविता में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
6. कविता के अनुसार प्रश्नों का उत्तर दे पाना।
7. कविता में आए शब्दों का समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर अपना शब्द भंडार बढ़ाना।
8. दिए गए निर्देशों के अनुसार सरल कविता बनाना।
9. चूँकि/क्योंकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
10. निर्देशानुसार स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर पाना।
11. कविता का सरलार्थ अपने शब्दों में लिख पाना।
12. संबंधित बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पोस्टर आदि पढ़ पाना।
13. संयुक्त वाक्य बनाना व योजक चिह्न का प्रयोग कर पाना।
14. विराम चिह्नों का प्रयोग कर पाना ।
15. व्यवसायिक कौशलों का विकास।

16. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन – 18

1. परिचिति/अपरिचित परिस्थितियों में सुने हुए संस्मरण को सुनकर समझना।
2. संस्मरण को हावभाव व धारा प्रवाह के साथ पढ़ पाना।
3. सार्वजनिक सुविधाएँ और स्थानीय निकाय की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकना।
4. स्थानीय निकाय की व्यवस्था में भागीदारी को समझ पाना।
5. संस्मरण में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
6. संस्मरण के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दे पाना तथा प्रश्न बना पाना।
7. संस्मरण में आए शब्दों का समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर अपना शब्द भंडार बढ़ाना।
8. क्योंकि/ चूँकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
9. निर्देशानुसार स्वतंत्र अभिव्यक्त कर पाना।
10. संबंधित बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पोस्टर, अनुच्छेद, पुस्तक, विवरण, कार्टून आदि पढ़ पाना।
11. विशेषण की परिभाषा देते हुए विशेषण शब्दों को छाँटना।
12. कारक चिह्नों को ध्यान में रखते हुए वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
13. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
14. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइल स्टोन–19

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में सुने हुए जीवनी को सुनकर समझना ।
2. किसी महापुरूषों की जीवनी को हावभाव तथा धाराप्रवाह के साथ पढ़ पाना । (वीर नारायण सिंह की जीवनी)
3. आकाशीय पिण्ड की सामान्य जानकारी रखना ।
4. सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा व अन्य ग्रहों के बारे में जानकारी रखना ।
5. जीवनी में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।

6. जीवनी के अनुसार प्रश्नों का उत्तर दे पाना तथा प्रश्न बना पाना।
7. जीवनी में आए शब्दों का समानार्थी शब्द, चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर अपना शब्द भंडार बढ़ाना।
8. क्योंकि/चूँकि का प्रयोग करते हुए उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
9. निर्देशानुसार स्वतंत्र अभिलेख कर पाना।
10. संबंधित बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पुस्तक, अनुच्छेद, विवरण, पोस्टर, कार्टून आदि पढ़ पाना।
11. क्रिया और संयुक्त क्रिया को पहचानना ।
12. लोकोक्तियों का प्रयोग कर पाना।
13. व्यवसायिक कौशलों का विकास।
14. मानवीय मूल्यों का विकास।

माइलस्टोन–20

1. परिचित/अपरिचित परिस्थितियों में पत्र लेखन को पढ़कर समझना।
2. दर्शनीय स्थल के बारे में लिखे वर्णनों को समझना।
3. पत्रों के प्रकार को समझना।
4. पत्र लेखन के विधाओं को समझना।
5. पत्र लेखन अपने शब्दों में लिख पाना।
6. पत्र लेखन का संग्रहण करना।
7. हस्त लिखित पत्रों को पढ़ पाना।
8. पत्र लेखन के शब्दों व अक्षरों के बीच की दूरी को समझना।
9. पत्र लेखन में क्रम, आकार व विराम चिह्नों का प्रयोग कर पाना।
10. पत्र लेखन के विभिन्न औपचारिकताओं को समझना।
11. पत्र लेखन से संबंधित पत्रिका व पोस्टरों को पढ़ना तथा समझना।
12. संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण शब्दों को वाक्य से छाँटकर अलग कर पाना।
13. व्यवसायिक कौशलों का विकास।

14. मानवीय मूल्यों का विकास।

15. पहेली को सुनकर समझना, पढ़ना और अभिव्यक्त करना।

विषय –गणित

माइल स्टोन–01

1. 1 से 9 तक की संख्याओं को पहचानना।

2. 1 से 9 तक की संख्याओं का पठन, लेखन व गणन करना।

3. 1 से 9 तक के बीच छोटी एवं बड़ी संख्याओं को पहचान कर पाना।

4. 1 से 9 को डोमिनो कार्ड, बिन्दी कार्ड, अंक कार्ड से तुलना करना।

5. 1 से 9 तक की संख्याओं को बढ़ते क्रम, घटते क्रम, पहले, बाद व बीच की संख्याओं में जमाना व बोलना।

6. 1 से 9 तक छुटी हुई संख्याओं को पहचानना।

7. 1 से 9 तक छुटी हुई संख्याओं को ठोस वस्तुओं के माध्यम से गिनना, जोड़ना व घटाना।

माइल स्टोन–02

1. 0 (शून्य) की अवधारणा से परिचित कराना।

2. 1 से 9 तक की संख्याओं का अभ्यास (ठोस वस्तुओं की सहायता से)

3. 1 से 9 एवं 0 की संख्याओं को उल्टा–सीधा क्रम में लिखना।

4. पहले, बाद, बीच की संख्या एवं छोटा–बड़ा की अवधारणा को समझाना।

5. तार्किक क्षमता विकसित करना।

6. 0 से 9 तक की संख्याओं का लेखन अभ्यास।

7. बच्चों में सृजनात्मक क्षमता हेतु कोलाज वर्क करना।

माइल स्टोन–03

1. 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तुओं के माध्यम से जोड़ने की संक्रिया से परिचित करना।

2. 1 से 9 तक के योगफल वाले संख्याओं को हल कराना।

3. 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तुओं के माध्यम से घटाना सिखाना।

4. 9 में से छोटी संख्याओं को घटाना।

5. इकाई अंकों को घटाने की संक्रिया से सिखाना।

6. खेल के माध्यम से जोड़ने – घटाने की गतिविधि कराना।

7. परिवेशीय वस्तुओं से घटाना एवं जोड़ना की गतिविधि कराना।

माइल स्टोन–04

1. 10 की संख्या का बंडल व्दारा समझ विकसित करना।

2. 10–10 तिली से बंडल बनवाना।

3. बंडल के साथ इकाई संख्याओं को जोड़कर गिनती की समझ को आगे बढ़ाना।

4. 10 से आगे की गिनती का लेखन अभ्यास।

5. जोड़ना–घटाने का अभ्यास कार्य कराना।

6. घटते क्रम, बढ़ते क्रम।

7. छुटी हुई पहले, बाद एवं बीच की संख्याओं को भरना।

8. कक्षा के अंदर और बाहर का खेल।

9. इकाई एवं दहाई के अंकों का पहचान।

10. 11 से 20 तक लेखन अभ्यास।

माइल स्टोन–05

1. तीलियों से बंडल बना पाना।

2. बंडल बनाकर 100 तक गिनती सिखाना।

3. 1 से 100 तक की गिनती का लेखन अभ्यास।

4. बिना हासिल के 2 अंकों को जोड़ अधिकतम 19 अंकों तक आए।

5. बिना हासिल के 2 अंकों को घटाना सिखाना।

6. 1 से 100 तक के अंकों को आरोही–अवरोही क्रम में लिखना।

7. 1 से 100 तक की बीच की संख्याओ को भरवाना।

8. 31 से 60 तक लेखन उल्टे–सीधे क्रम में लिखना व रिक्त स्थानों की पूर्ति करना।

माइलस्टोन–06

1. गिनतारा के उपयोग से हासिल के जोड़ की अवधारणा को स्पभट करना।
2. तीलियों एवं बंडल व्दारा हासिल सहित जोड़ की गतिविधि कराना।
3. बिना हासिल एवं हासिल से जोड़ का अभ्यास कराना।
4. तीलियों के व्दारा हासिल सहित घटाने की अवधारणा स्पष्ट कराना।
5. कंकड़, पत्थर या ठोस वस्तुओं के व्दारा घटाने की संक्रिया करवाना।
6. स्वतंत्र रूप से दो अंकों का हासिल एवं बिना हासिल के सवालों को हल करना।
7. घटते एवं बढ़ते क्रम
8. 1 से 10 तक के अंकों का शब्दों में अभ्यास।
9. 1 से 100 तक लेखन अभ्यास।

माइल स्टोन–07

सम–विषम स्थानीय मान, विस्तारित रूप।

1. सम एवं विषम संख्या की पहचान।
2. 1 से 99 तक की संख्याओं का स्थानीय मान इकाई व दहाई के ज्ञान का अभ्यास।
3. 19, 29, 39 49 आदि पर विस्तारित रूप में जानना, पढ़ना व लिखना एवं स्थानीय मान को जानना।
4. 1 से 20 तक के अंकों को शब्दों में लिखना।
5. पहले, बाद व बीच की संख्याओं से परिचित कराना।
6. अंक पट्टी, गिनतारा, बंडल का उपयोग कर गिनती का अभ्यास कराना।
7. इकाई, दहाई का अभ्यास व उनकी सहायता से जोड़ व घटाव का अभ्यास।
8. ज्यामितीय आकृति, वृत्त, चुड़ी, पहिया, सिक्का, रिंग, गोल, चाँद, सूर्य से परिचित कराना।

माइल स्टोन–08

1. बार–बार जोड़ने की क्रिया के माध्यम से पहाड़ा निर्माण करना (2 से 10 तक पहाड़ा निर्माण करने की विधि सिखाना)

2. सम एवं विषम संख्या की पहचान (1 से 100 तक की संख्या)
3. 2 या 3 संख्या का जोड़ बिना हासिल के करवाना ।
4. 21 से 50 तक के अंकों को शब्दों में तथा शब्दों को अंकों में लिख पाना।
5. इबारती प्रश्न – जोड़ व घटाने से संबंधित सरल विधि व मौखिक प्रश्नों को हल करना पाना।
6. धारिता का मानक अनुमान रहित व अनुमान सहित मापना।
7. घटते क्रम आरोही व अवरोही का अभ्यास कराना।
8. त्रिभुज की आकृति से परिचय जैसे – समोसा।
9. गोल, तिकोण, चौकोन, का अभ्यास परिवेशीय वस्तुओं से कराना।
10. (माह के नाम) दिनों को जोड़कर माह एवं दिनों में व्यक्त करना, माह के दिनों को जोड़ना व घटाना।

माइल स्टोन–09

गुणा की संक्रिया

1. बार–बार जोड़ने की क्रिया से गुणा का निर्माण, सरल गुणा का अभ्यास, गुणा चिन्ह से परिचय।
2. इकाई अंकों से गुणा का अभ्यास कराना।
3. 100 तक की संख्या का स्थानीय मान विस्तारित रूप में जानना, पढ़ना व लिखना।
4. 51 से 80 तक के अंकों को शब्दों में लिखना।
5. बार–बार जोड़ने की क्रिया से पहाड़ा बनाना।
6. 1 से 50 तक के नोटो से परिचय व मौखिक रूप से जोड़ने–घटाने का अभ्यास।
7. सप्ताह के दिनों के नाम से परिचय मौखिक रूप में बोल पाना व लिखना।
8. दैनिक जीवन की समस्याओं को सरल पहाड़े के माध्यम से हल कर पाना।
9. बच्चों में सरल प्रश्न निर्माण कर हल करने की क्षमता विकसित करना।
10. ज्यामितीय आकृति, त्रिभुज से परिचय, तीनों भुजा वाले कोण नामांकित कर जानना।
11. तौल कर तुलना कम–ज्यादा बता पाना।

माइल स्टोन–10

भाग की संक्रिया

1. भाग की क्रिया का अभ्यास केवल एक ही बार में भाग चला जाए, अवधारणा स्पष्ट करना।
2. बार–बार घटाने की क्रिया से भाग की संख्या से परिचय, भाग का चिह्न व भाग का अभ्यास, ठोस वस्तुओं को प्रत्यक्ष बाँटना।
3. पहाड़े की सहायता से सरल गुणा व सरल भाग कर पाना।
4. जोड़ व घटाना से संबंधित लिखित इबारती प्रश्न बच्चे स्वयं तय करें कि जोड़ करे या घटाना।
5. स्थानीय मान व विस्तृत रूप की सहायता से छोटी व बड़ी संख्या का पहचान कर पाना।
6. 81 से 100 के अंकों को शब्दों में लिख पाना।
7. ज्यामितीय आकृतियाँ, वर्ग, आयत, त्रिभुज, वृत्त आदि को जानना व बता पाना।
8. 1 से 100 तक की संख्या का पूर्ण ज्ञान, छूटे हुए (रिक्त स्थानों की संख्याओं को पढ़ना, समझना व लिखना)
9. गुणा, भाग, जोड़, घटाना से संबंधित सरल इबारती प्रश्न बच्चे स्वयं तय करें कि उसे क्या करना है। 1 से 100 तक की नोटों की पहचान कर उपयोग कर पाना।

माइल स्टोन–11

1. 1 से 1000 तक की संख्या को पहचानना, गिनना, लिखना एवं पढ़ना। इकाई, दहाई, सैकड़ा के रूप में पहचानना।
2. 1 से 1000 तक की संख्या को उल्टा, सीधा, तिरछा पढ़ने का अभ्यास।
3. 1 से 1000 तक की संख्या का पहले, बाद, बीच की संख्याओं तथा विस्तारित रूप को पहचानना।
4. 1 से 1000 तक की संख्या को सम–विषम संख्या के रूप में पहचानना।
5. दैनिक जीवन से संबंधित जोड़, घटाने के प्रश्नों को हल करना।
6. ज्यामितीय आकृतियाँ की पहचान परिवेशीय वस्तुओं के माध्यम से।
7. परिवेशीय वस्तुओं की लंबाई, चौड़ाई ज्ञात करना।

8. मानक मापन की पहचान कर सकना।

9. 10 तक के पहाड़ा का निर्माण गुणा विधि के द्वारा।

माइल स्टोन–12

1. 3 अंकों की संख्या का 1 अंक की संख्या के साथ गुणा व भाग कर सकना।

2. 1000 तक की संख्याओं को शब्दों, अंकों में लिखना।

3. गुणा एवं भाग से संबंधित इबारती प्रश्नों को हल करना।

4. 1000 तक की संख्याओं को घटते, बढ़ते क्रम में लिख पाना। पहले, बाद व बीच की संख्याओं को पहचान पाना।

5. 1000 तक की संख्या का स्थानीय मान जानना।

6 सम–विषम संख्याओं को पहचानना।

7. जोड़ना, घटाना से संबंधित (हासिल सहित) इबारती प्रश्नों को हल कर पाना।

8. स्केल, टेप की सहायता से अपने आसपास के वस्तुओं की लंबाई, चौड़ाई ज्ञात कर सकना।

9. धारिता से संबंधित प्रश्नों को हल कर पाना।

माइल स्टोन–13

1. घड़ी की सहायता से घंटा, मिनट की पहचान तथा घंटा को मिनट व मिनट को घंटे में बदलना।

2. विभिन्न नोटों को जोड़ पाना।

3. रूपये पैसे से संबंधित सरल इबारती प्रश्नों को हल कर पाना।

4. परिवेशीय वस्तुओं का मानक इकाई सेंटीमीटर में ज्ञात कर सकना।

5. भार की मानक इकाई ग्राम, किलोग्राम में जानना। किलोग्राम को ग्राम में तथा ग्राम को किलोग्राम में जानते हुए इससे संबंधित सरल प्रश्नों को जोड़कर हल कर पाना।

6. धारिता–धारिता के मानक बर्तन को जानना।

7. 3 अंकों तक की संख्याओं का स्थानीय मान ज्ञात कर पाना।

8. 1000 तक की संख्या को हासिल के साथ जोड़ना, घटाना। बढ़ते– घटते क्रम में जानना।

9. कैलेण्डर की सहायता से दिनों के नाम, महिनों के नाम। माह एवं वर्ष के बारे में जानना।

माइल स्टोन–14

1. ज्यामितीय आकृतियाँ, वर्ग, आयत, त्रिभुज, वृत्त, चतुर्भुज को पहचानना।
2. अपने आसपास के वस्तुओं में त्रिभुज, वर्ग, आयत को पहचानना।
3. विभिन्न आकृतियों को स्केल से नापना। लंबाई, चौड़ाई जानना।
4. मीटर, सेंटीमीटर से संबंधित जोड़ एवं घटान से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकना।
5. रूपये पैसे से संबंधित इबारती प्रश्नों को हल कर सकना।
6. 1000 तक की संख्याओं का स्थानीय मान ज्ञात करना।
7. गुणा एवं घटाना से संबंधित इबारती प्रश्न हल करना।
8. विभिन्न मानक नोटो को जोड़ पाना।

माइल स्टोन–15

1. 1 से 1000 तक की संख्याओं को पहचानना।
2. कैलेण्डर देखकर दिन, तारीख और माह बता सकना।
3. 1 से 10,000 तक की संख्याओं का स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 1 से 10,000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना तथा पहले बाद, बीच एवं छुटी हुई संख्या को बता व लिख पाना।
5. चार अंकों तक की संख्याओं को हासिल लेकर जोड़ व घटा पाना।
6. तीन अंकों की संख्याओं को एक अंक की संख्या के साथ गुणा व भाग कर पाना।

माइल स्टोन–16

1. भिन्न की अवधारणा समझना।
2. अंश हर के रूप में भिन्न को जानना।
3. चित्र व परिवेशीय वस्तु के आधार पर भिन्न को जानना।
4. समतुल्य भिन्न की समझ को प्रदर्शित करना।
5. सरल समभिन्न को जोड़ना, घटाना जबकि हर समान हो।

माइल स्टोन–17

1. ज्यामितीय आकृति को पहचानना।
2. त्रिभुज, आयत, वर्ग को पहचान पाना।
3. ज्यामितीय आकृतियाँ, त्रिभुज, आयत, वर्ग को पहचान कर स्वतंत्र रूप से बता सकना।
4. ज्यामितीय आकृति के अंतर्गत दी गई रेखाखंडों को मापना।
5. क्षेत्रफल व परिमाप की अवधारणा को समझाना।
6. परिवेशीय वस्तुओं का क्षेत्रफल व परिमाप जानने की समझ विकसित करना।

माइल स्टोन–18

1. लाभ हानि अवधारणा की समझ विकसित करना।
2. क्रय मूल्य एवं विक्रय मूल्य की समझ विकसित करना।
3. परिवेशीय वस्तुओं के व्दारा लाभ हानि, क्रय मूल्य, विक्रय मूल्य को समझाना।
4. औसत की अवधारणा विकसित करना।
5. परिवेशीय वस्तुओं के उदाहरण व्दारा औसत की समझ विकसित करना।
6. कोण की अवधारणा को स्पष्ट करना।
7. परिवेशीय वस्तुओं का उदाहरण देते हुए कोण के प्रकारों को समझा पाना।

माइल स्टोन–19

1. प्रतिशत की अवधारणा की समझ विकसित करना।
2. परिवेशीय वस्तुओं से प्रतिशत की समझ विकसित करना।
3. दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं से प्रतिशत संबंधी सरल प्रश्न बताकर समझा पाना।
4. प्रतिशत के चिह्न के रूप में पहचान कर लिखना।
5. दशमलव की अवधारणा की समझ विकसित करना।
6. इकाई का 10 वां भाग या दशांक की जानकारी बता पाना।
7. दशमलव को चिह्न के द्वारा प्रदर्शित करना।
8. दशमलव का सरल जोड़, घटाना संबंधी प्रश्न हल कर पाना।

माइल स्टोन–20

1. ऐकिक नियम की अवधारणा का समझ होना।
2. गुणा और भाग पर आधारित एक या दो चरणों में हल होने वाली दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करना।
3. ऐकिक नियम का उपयोग करके साधारण समस्याओं को हल करना।
4. ज्यामितीय आकृति के अंतर्गत त्रिभुज की अवधारणा की समझ विकसित करना।
5. त्रिभुज के प्रकार (कोण एवं भुजा के आधार पर) को समझाना।
6. त्रिभुज की आकृति बना पाना।
7. स्केल की सहायता से त्रिभुज निर्माण कर परिमाप बनाना।

विषय अंग्रेजी

माइलस्टोन 01

1. परिवशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना (A'B'C)
2. दी गई सरल कविता को सुनकर दोहराना।
3. सरल निर्देशों का पालन करना।
4. please/ thank you को सुनकर दोहराना।
5. कट आउट के माध्यम से चित्र बनाना।
6. A'B'C के बड़े अक्षर की चित्र के माध्यम से पहचान।

माइलस्टोन 02

1 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना। (A toF)
2 कविता को हाव–भाव सहित सुनना व बोलना।
3 वाक्य में my and your का उपयोग कर पाना।
4 चित्र से शब्दों का मिलान।(10 से 14 शब्द) कर पाना।
5 D'E'F बड़े अक्षर को पहचानना।

माइलस्टोन 03

1 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना। A to K तक।

2 कविता को हावभाव सहित सुनना व बोलना।

3 प्रश्नों के उत्तर this\ that के द्वारा दे पाना।

4 पहचाने हुए अंग्रेजी शब्दों का सही चित्र से मिलान कर पाना।

5 सही और गलत को (✔\✘)चिन्हीत कर पाना।

6 15 से 25 शब्दों को अंग्रेजी मे पहचान पाना।

7 लेखन कला का विकास करना।

8 1 से 10 तक अंको को अंग्रेजी में पहचानना और बोलना।

9 G, H, I, J, K बड़े अक्षर को पहचानना।

माइलस्टोन 04

1 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना। A to P तक।

2 what / who के सरल प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में दे पाना।

3 सीखे हुए 1 से 10 तक अंको का सही उच्चारण के साथ बोल पाना।

4 A, B, C, D, E, F को छोटे व बड़े रूप में पहचानना।

5 30–40 शब्दों को चित्र शब्द सूची द्वारा पहचान पाना।

6 सीखे हुए कम से कम 4–6 वर्णों को लिख पाना।

7 L, M, N, O, P बड़े अक्षर को पहचानना।

8 सही शब्दों एवं चित्रों का मिलान कर पाना।

माइल स्टोन 05

1 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना।

2 परिचित परिस्थिति में दिये गये आदेशों को समझना।

3 how/ many के द्वारा प्रश्नों के उत्तर दे पाना।

4 कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना।

5 g h i j k l m n o p को छोटे व बड़े रूप में पहचानना।

6 शब्द भण्डार के रूप में 55 से 70 शब्द को जान पाना व बोल पाना।

7 सीखे हुए कम से कम 14 वर्णों को लिख पाना।

8 Q R S T U बड़े अक्षर को पहचानना।

9 सही शब्दों एवं चित्रों का मिलान कर पाना।

10 सही या गलत (✔ / ✘) का चिन्ह लगाना।

11 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना।

माइलस्टोन 06

1 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना।

2 o p q r s t u v w x y z को छोटे व बड़े रूप में पहचानना।

3 THIN, FAT, HARD को समझ पाना।

4 COME, HERE, GO, THERE को समझ पाना।

5 (शिक्षक के लिए adjective verb)

6 कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना।

7 प्रश्नों के उत्तर who, what, how, many,का प्रयोग कर कुछ

8 वाक्यों में बोलना व उत्तर देना।

9 शब्द भण्डार के रूप में 90 से 110 शब्द को जान पाना व बोल पाना।

10 क्रियाओं से परिचित होना।

11 लेखन अभ्यास बिन्दुओं को मिलाकर।

12 26 वर्णों को छोटे एवं बड़े रूप में पहचानना।

13 V W X Y बड़े अक्षर को पहचानना।

माइलस्टोन 07

1 परिचित कविता को सुनना और हाव–भाव से दोहराना।

2 how, may, can who, what, का प्रयोग कर प्रश्न बनाना।

3 it, he, she, her, his, का प्रयोग कर पाना।

4 adjective- hot, cold, big, small, fat, thin,का प्रयोग कर पाना।

5 verb- like, bath, take, run speak, say, bit, sleep, walk, weep, laugh, का प्रयोग कर पाना।

माइलस्टोन 08

1 अपरिचित कविता को हाव–भाव से सुनाना व दोहराना।

2 how many, whaere, whose का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।

3 अंग्रेजी के a - z को छोटे–बड़े रूप में पहचानना व लिखना।

4 pronoun- they का प्रयोग कर पाना।

5 adjective- new, old, tall, shao, same, different, का प्रयोग कर पाना।

6 verb- pull, push, throw, learn, dance, throw, smile cry, sleep का प्रयोग कर पाना।

7 preposition- top, bottom, to, from, after, before का प्रयोग कर पाना।

माइलस्टोन 09

1 अपरिचित कविता को हाव–भाव से सुनाना व दोहराना।

2 when का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।

3 अंग्रेजी के a - z को छोटे–बड़े रूप में पहचानना व लिखना।

4 pronoun- Our, Your का प्रयोग कर पाना।

5 adjective- Wet, Dry का प्रयोग कर पाना।

6 verb- Read, Sing, Come, Walk, Sleep, Swim का प्रयोग कर पाना।

7 preposition का प्रयोग कर पाना।

माइलस्टोन 10

1 अपरिचित कविता को हाव–भाव से सुनाना व दोहराना।

2 Which का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।

3 अंग्रेजी के a - z को छोटे–बड़े रूप में पहचानना व लिखना।

4 pronoun- This, These का प्रयोग कर पाना।

5 adjective का प्रयोग कर पाना।

6 verb- Want, Think का प्रयोग कर पाना।

7 preposition- Behind का प्रयोग कर पाना।

माइलस्टोन 11

1 कविता/ कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाना और दोहराना।

2 कविता/कहानी में आए हुए रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetics- का प्रयोग कर उच्चारण करना।

4 verb, Smell, Help, Tell को जानना।

5 सीखे हुए शब्दों से बने वाक्य पढ़ना।

6 सीखे हुए शब्दों को चार लाइन कापी/अभ्यास पुस्तिका में लिखना।

7 सीखे हुए शब्दों के समान ध्वनि वाले नए शब्द पढ़ पाना।

8 वाक्य में का प्रयोग करना।

माइलस्टोन 12

1 कविता/ कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाना और दोहराना।

2 कविता/कहानी में आए हुए रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetics- æ = ऐ /g = ग /ð = द का प्रयोग कर उच्चारण करना।

4 verb, add, can, have, has, को जानना।

5 सीखे हुए शब्दों से बने वाक्य पढ़ना।

6 सीखे हुए शब्दों को चार लाइन कापी/अभ्यास पुस्तिका में लिखना।

7 सीखे हुए शब्दों के समान ध्वनि वाले नए शब्द पढ़ पाना।

8 वाक्य में का प्रयोग करना।

9 i bage bage के समान नया वाक्य बनाना।

माइलस्टोन 13

1 कविता कहानी को हाव–भाव के साथ सुनना व दोहराना।

2 कविता व कहानी में आए हुए रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetics-/ɪ/इ /i/इ /iː/ई /ʃ/श /θ/थ शब्दों का उच्चारण करना।

4 verb- wash, dance, bath, attack, का प्रयोग करना।

5 सीखे हुए शब्दों से बने वाक्यो को पढ़ना।

6 सीखे हुए शब्दों से नये वाक्य बनाना।

7 सीखे हुए शब्दों से समान ध्वनि वाले नए शब्दों को खोज कर लिखना।

8 नए वाक्य शब्दों को लिखना।

9 prepostion - whith का प्रयोग कर पाना।

माइलस्टोन 14

1 कविता कहानी को हाव–भाव के साथ सुनना व दोहराना।

2 कविता व कहानी में आए हुए रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetic का प्रयोग करना।

4 verb- sit, bring, dring, sing, listion, think sing, listen, think, shwim, का प्रयोग करना।

5 सीखे हूए शब्दों से नए वाक्य बनाना।

6 नए वाक्य व शब्दों को लिखना।

7 क्रिया के साथ पदह का प्रयोग करना।

8 without का प्रयोग करना।

माइलस्टोन 15

1 कविता/कहानी को हाव–भाव से सुनना व दोहराना।

2 कविता/ कहानी में आये रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetic-/aɪ/आइ /eɪ/एइ /ʧ/च /j/ य का प्रयोग करना।

4 verb- pull, push, throw, learn, dance, throw, smile cry, sleep का प्रयोग करना।

5 सीखे हुये शब्दों से बने वाक्य बनाना व लिखना।

6 a और an का प्रयोग कर पाना। what का प्रयोग करना।

7 सीखे हुए शब्दों से बनने वाले वाक्य बनाना।

8 सीख हुए शब्दों के समान ध्वनि वाले नये शब्द बनाना।

माइलस्टोन 16

1 कविता/कहानी को हाव–भाव से सुनना व दोहराना।

2 कविता/कहानी में आये रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetic का प्रयोग करना।

4 verb use, dance, push, pull, tell,का प्रयोग करना।

5 सीखे हुये शब्दों के समान ध्वनि वाले नये शब्द बोलना।

6 शब्दों का प्रयोग(pull the cart, please pull the carte)

7 क्रियाओं में ed और d लगाकर नये शब्द बनाना।

8 जैसे– use+d = used, pull+ ed = pulled.

9 वाक्यों में प्रयोग (i pulled the cart)

माइलस्टोन 17

1 कविता/कहानी को हाव–भाव से सुनना व दोहराना।

2 कविता/ कहानी में आये रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetic का प्रयोग करना।

4 verb- throw, go, attack, shut, brush, jump, run cry, hungry का प्रयोग करना।

5 when, how, thank you, का प्रयोग करना।

6 adjective- big, small, का प्रयोग करना।

माइलस्टोन 18

1 कविता/कहानी को हाव–भाव से सुनना व दोहराना।

2 कविता/ कहानी में आये रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetic का प्रयोग करना।

4 adjective- fat, thin, hot, cold, का प्रयोग करना।

5 there का प्रयोग करना।

6 proposition- in, out, on, under, का प्रयोग करना।

7 where, how many, hom uch का प्रयोग करना।

8 समान ध्वनि वाले शब्द पहचानना, बोलना, लिखना।

माइलस्टोन 19

1 कविता/कहानी को हाव–भाव से सुनना व दोहराना।

2 कविता/ कहानी में आये रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 phonetic का प्रयोग करना।

4 verb का प्रयोग करना।

5 सीखे हुये शब्दों से वाक्य बनाना व लिखना।

6 शब्दों के समान ध्वनि वाले शब्द पहचानना, बोलना व लिखना।

7 adjective- near, fire का प्रयोग करना।

8 proeposition- after, before का प्रयोग करना।

9 which का प्रयोग करना

माइल स्टोन 20

1 कविता/कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाना।

2 कविता/कहानी में आए रंगीन शब्दों को पहचानना व बोलना।

3 adjective- new, old, wet, dry, का प्रयोग करना।

4 सीखे हुए शब्दों के समान ध्वनि वाले शब्द पहचानना, बोलना, लिखना।

5 propostion - top, bottom, behind, infrontgof का प्रयोग करना।

6 whose, whome, का प्रयोग करना।

7 whose, whom का प्रयोग करना।

00000

25 प्री–पोस्ट

1. SRTC क्या है? इसकी आवश्यकता क्यों हुई?
2. SRTC में बच्चों का किस तरह चिन्हांकन करेंगे?
3. SRTC और शाला में समन्वय स्थापित करने के लिए आप क्या–क्या कदम उठाएँग?
4. भाषा सीखो में किन–किन विधि का उपयोग करेंगे?
5. क्या MGML शिक्षण पद्धति SRTC केन्द्र में सभी बच्चों को शिक्षण कराने में उपयुक्त है। यदि हाँ तो उत्तर दीजिए।
6. लेडर क्या है, लोगो क्या है, समूह क्या है, समूह निर्धारण प्रक्रिया।
7. क्या इस प्रक्रिया के पश्चात् आपकी समस्या का समाधान हो सकता है। अगर हाँ तो कैसे?
8. प्रशिक्षण में बतायी गई चिजों को केन्द्र में क्रियान्वित कैसे करेंगे?
9. SRTC केन्द्र के बच्चों को शाला से जोड़े रखने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए?
10. SRTC में विषय विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी या नहीं? होगी तो समाधान कैसे करेंगे?
11. समुदाय को SRTC में जोड़ने हेतु क्या–क्या प्रयास किऐ जा सकते हैं।
12. एक बच्चा आपका 14 साल का है जो बहुत ही उद्ण्ड है जो बहुत ही उत्पात मचाता है, तो आप उसे कितने दिनों में घर पहुँचाएँगे?

00000

शब्द विस्तार

SRTC	Special Residential Training Centre
एस.आर.टी.सी.	विशेष आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र
ACK	Age wise Class wise knowledge
ए.सी.के.	आयु अनुरूप कक्षा, कक्षा अनुरूप ज्ञान
RTE	The Right of Children to free and Compulsory Education Act, 2009
आर.टी.ई.	मुफ्त और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
MGML	Multi Grade & Multi Level
एम.जी.एम.एल.	बहु कक्षा बहु स्तरीय शिक्षण
ECCE	Early Childhood Care & Education
ई.सी.सी.ई.	शिशु शिक्षा एवं देखभाल
CWSN	Children with Special Need
सी.डब्लू.एस.एन.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे
SNRTC	Special Non Residential Training Centre
एस.एन.आर.टी.सी.	विशेष गैर आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र
CAC	Cluster Acadamic Co-ordinator
सी.ए.सी.	संकुल शैक्षिक समन्वयक
BRCC	Block Resource Center Co-ordinator
बी.आर.सी.सी.	वि.खं. स्रोत केन्द्र समन्वयक
BED	Block Education Office
बी.ई.एड.	वि.खं. शिक्षा अधिकारी
DPC	District Project Co-ordinator
डी.पी.सी.	जिला परियोजना समन्वयक
A.C. (TWD)	Assistent Commissioner (Tribal and welfare Department)
ए.सी. टी.डब्लू.डी.	सहायक आयुक्त (आदिम जाति कल्याण विभाग)

DIET	District Institution of Education and Training
डी.आई.ई.टी.	जिला प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान
ALM	Active Learning Methodology
ए.एल.एम.	सक्रिय अधिगम विधि
NCF	National Curriculum Framework
एन.सी.एफ.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या
SRG	State Resource Group
एस.आर.जी.	राज्य स्रोत समूह
DRG	District Resource Group
डी.आर.जी.	जिला स्रोत समूह
BRG	Block Resource Group
बी.आर.जी.	विकास खण्ड स्रोत समूह
APC	Assistant Project Co-ordinator
ए.पी.सी.	सहायक परियोजना समन्वयक

0000

1	2	3	4	5	6

पासा स्टीकर

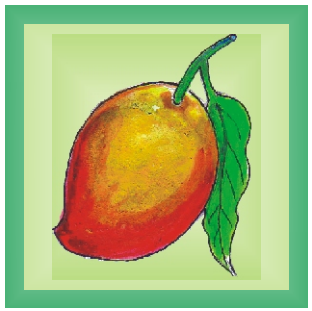

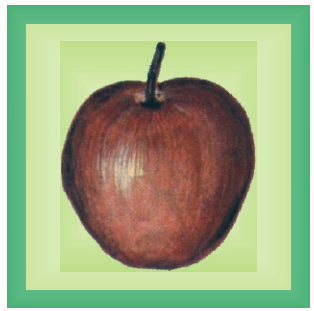

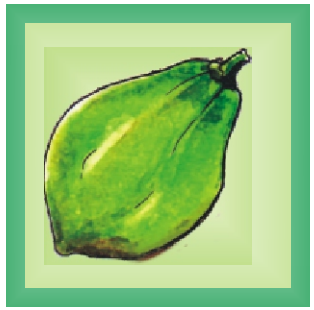
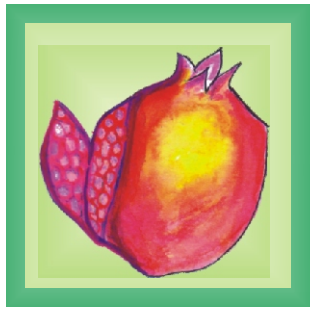
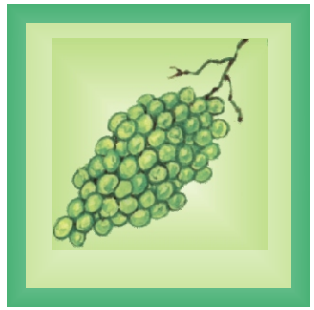

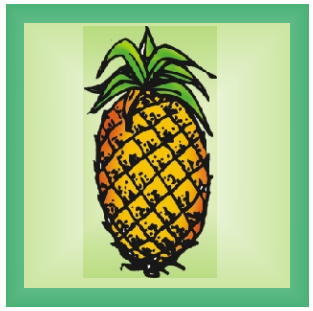
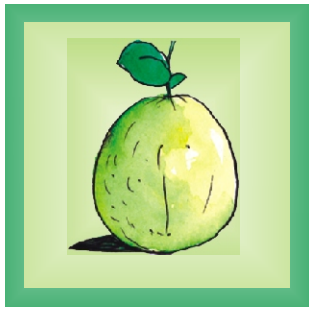

लोगो स्टीकर